दैनिक

जयपुर,सीकर, झुंझुनूं, चुरू,नागौर एवं अलवर से एक साथ प्रकाशित

जयपुर टाइम्स

नई सोच नई रफ्तार

वर्ष : 09 अंक : 242 ■ डाक पंजीयन संख्या : जयपुर सिटी / 007/2017-19 जयपुर, गुरूवार 24 अप्रैल, 2025 ■ RNI.No.RAJHIN/2016/70162 ■ मूल्य : 1.5 रुपए ■ पृष्ठ : 8+2

jaipurtimes.org twitter.com/JaipurTimes2 facebook.com/dainikjaipurtimes youtube.com/c/JaipurTimes instagram.com/jaipurtimesjt

पहलगाम आतंकी हमले के मद्देनजर मुख्यमंत्री ने की कानून-व्यवस्था की समीक्षा

सीमावर्ती क्षेत्रों में सुरक्षा एजेंसियों के साथ रखें तालमेल, विशेष सजगता के साथ कानून व्यवस्था हो सुनिश्चित : भजनलाल शर्मा

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि प्रदेश में चाक-चौबंद सुरक्षा व्यवस्था के लिए राज्य सरकार संकल्पित है। उन्होंने कहा कि जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकी हमले के मद्देनजर प्रदेश में सभी जगह माकूल सुरक्षा व्यवस्था सुनिश्चित की जाए। जिला कलक्टर व पुलिस अधीक्षक विशेष सतर्कता बरतते हुए अपने जिलों में कानून- व्यवस्था पर सतत निगरानी बनाए रखें। शर्मा ने बुधवार को मुख्यमंत्री निवास पर वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से संभागीय आयुक्त, पुलिस महानिरीक्षक, पुलिस आयुक्त, जिला कलक्टर व जिला पुलिस अधीक्षकों के साथ बैठक कर प्रदेश में सुरक्षा व्यवस्था की समीक्षा की। उन्होंने प्रदेश की अंतर्राष्ट्रीय सीमा से लगते जिलों में विशेष सजगता बरतने के निर्देश देते हुए कहा कि सीमा पर तैनात सुरक्षा एजेंसियों के साथ निरंतर तालमेल बनाते हुए काम करें।

पहलगाम आतंकी घटना से देश स्तब्ध

मुख्यमंत्री शर्मा ने कहा कि पहलगाम में पर्यटकों पर आतंकी हमला निंदनीय व कायरतापूर्ण घटना है और इससे पूरा देश स्तब्ध है। उन्होंने कहा कि इस दुखद घटना की गंभीरता को देखते हुए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी विदेश यात्रा बीच में छोड़कर वापस भारत लौट आए हैं व केन्द्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने जम्मू-कश्मीर में घटना स्थल पर पहुंचकर जायजा लिया है। उन्होंने कहा कि इस जघन्य हमले को अंजाम देने वाला कोई भी आतंकी सुरक्षा बलों से बच नहीं पाएगा।

मुख्यमंत्री ने परिजनों को बंधाया ढांढस

मुख्यमंत्री ने घटना पर गहरा शोक व्यक्त करते हुए मृतकों के शोक संतप्त परिवारजनों को इस दुःख को सहने के लिए शक्ति प्रदान करने की ईश्वर से प्रार्थना की। शर्मा ने इस हमले में जान गंवाने वाले जयपुर निवासी नीरज उदवानी के परिजनों से दूरभाष पर वार्ता कर संवेदनाएं व्यक्त की।

छोटी से छोटी घटना को भी लें गम्भीरता से

मुख्यमंत्री ने निर्देश दिए कि छोटी से छोटी घटना और सूचना को गम्भीरता से लिया जाए और तत्काल उच्चाधिकारियों को अवगत कराया जाए। इस सम्बन्ध में कानून-व्यवस्था को लेकर गृह विभाग की ओर से जारी विस्तृत दिशा-निर्देशों की कड़ाई से व अक्षरशः पालना सुनिश्चित की जाए। उन्होंने कहा कि एडीजी रेंज प्रभारी जिला प्रशासन व पुलिस से नियमित संपर्क में रहें और अपनी प्रभार वाली रेंज का नियमित दौरा करें।

सार्वजनिक स्थानों, भीड़भाड़ वाले क्षेत्र में हो पर्याप्त पुलिस जाप्ता

मुख्यमंत्री ने कहा कि सार्वजनिक स्थानों, पर्यटन स्थलों व भीड़भाड़ वाले क्षेत्रों में पर्याप्त पुलिस जाप्ता नियोजित करते हुए विशेष निगरानी की जाए जिससे कि पर्यटकों व आमजन के मन में सुरक्षा की भावना को और मजबूत किया जा सके। उन्होंने निर्देश दिए कि होटल, धर्मशाला जैसे स्थानों की लगातार चैकिंग की जाए ताकि संदिग्ध गतिविधियों वाले व्यक्तियों को समय रहते चिन्हित किया जा सके।

सोशल मीडिया पर रखी जाए गहन निगरानी

शर्मा ने सोशल मीडिया पर गहन निगरानी के निर्देश देते हुए कहा कि भ्रामक व आपत्तिजनक टिप्पणियों तथा अफवाह फैलाने वालों पर सख्ती बरती जाए। साथ ही, सोशल मीडिया व अन्य माध्यमों से सही सूचना प्रसारित की जाए और भ्रामक सूचना फैलाने वालों व्यक्तियों के विरुद्ध कड़ी कानूनी कार्रवाई करें। बैठक में मुख्य सचिव, पुलिस महानिदेशक सहित गृह विभाग, मुख्यमंत्री कार्यालय एवं पुलिस के वरिष्ठ अधिकारी मौजूद रहे। वहीं संभागीय आयुक्त, पुलिस महानिरीक्षक, पुलिस आयुक्त, जिला कलक्टर व पुलिस अधीक्षक वीसी के माध्यम से जुड़े।

पहलगाम आतंकी हमले में जयपुर के नीरज की मौत

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। कश्मीर के पहलगाम में मंगलवार को हुए आतंकी हमले में जयपुर के नीरज उधवानी की भी मृत्यु हुई है। नीरज जयपुर के मॉडल टाउन स्थित फॉरेस्ट व्यू रेजीडेंसी कॉलोनी के रहने वाले वाले थे। नीरज की हाल में शादी हुई थी। वे दुबई में नौकरी करते थे। नीरज के बड़े भाई किशोर उधवानी इनकम टैक्स विभाग में कार्यरत हैं। जानकारी के अनुसार नीरज अपनी पत्नी के साथ कश्मीर घूमने गए थे। घटना वाले दिन उनकी पत्नी होटल में ही ठहर गई थीं, जबकि नीरज घूमने के लिए बाहर निकल गए थे। इसी दौरान आतंकियों ने नीरज को गोली मार दी। उनका पार्थिव शरीर सुबह 11.45 पर कश्मीर से दिल्ली के लिए रवाना कर दिया गया है। दिल्ली से देर शाम उनका शव जयपुर पहुंचा इसके बाद परिजन गुरुवार को ही उनका अंतिम संस्कार करेंगे।

अदालत ने आठ आरोपियों को किया बरी

सिद्धू मूसेवाला हत्याकांडः गैंगस्टर और बर्खास्त पुलिस अधिकारी को सुनाई सजा

जयपुर टाइम्स

चंडीगढ़ एजेंसी। पंजाबी सिंगर सिद्धू मूसेवाला हत्याकांड मामले में बुधवार को अदालत ने बड़ा फैसला सुनाया है। पंजाब के मानसा जिला अदालत ने पुलिस हिरासत से फरार होने के मामले की सुनवाई करते एक गैंगस्टर और बर्खास्त पुलिस अधिकारी को सजा और जुर्माने का फैसला सुनाया है। मामला पंजाबी सिंगर सिद्धू मूसेवाला हत्याकांड से जुड़ा हुआ है। अदालत की ओर से सुनाए गए फैसले में गैंगस्टर दीपक टीनू को दो साल की सजा और दो हजार रुपये जुर्माना और सीआईए स्टाफ के बर्खास्त इंचार्ज प्रीतपाल सिंह को एक साल 11 महीने की सजा और पांच हजार रुपये जुर्माना लगाया है। वहीं इस आरोपी आठ लोगों को बरी कर दिया है। सिद्धू मूसेवाला हत्याकांड में नामजद गैंगस्टर दीपक टीनू एक अक्तूबर 2020 को सीआईए स्टाफ की पुलिस हिरासत से फरार हो गया था। इस घटना के बाद डीजीपी पंजाब ने सीआईए स्टाफ इंचार्ज प्रितपाल सिंह को नौकरी से बर्खास्त कर दिया था। पुलिस के मुताबिक इस मामले में बिट्टू से एक अवैध पिस्टल, चिराग से दो और प्रितपाल सिंह की रिहायश से तीन पिस्टल बरामद किए गए थे। पुलिस ने दीपक टीनू के पुलिस हिरासत से फरार करने में उसकी मदद के आरोप में उसकी महिला मित्र जितेंद्र ज्योति, दीपक टीनू के भाई चिराग, कुलदीप कोहली, बिट्टू, राजिंदर गोरा, सुनील लोहिया, सर्वजोत सिंह व राजवीर सिंह को नामजद किया गया था, जिन्हें बरी कर दिया गया है।

तीन दिवसीय कार्यशाला में सत्ता- संगठन में समन्वय सहित कई मुद्दों पर मिलेगी ट्रेनिंग

राजस्थान के भाजपा विधायक गुजरात में सीखेंगे सुशासन की बारीकियां

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। राजस्थान की राजनीति में एक नया अध्याय जुड़ने जा रहा है, जहां अब सत्ता के गलियारों में 'सुशासन' की बारीकियां सिखाई जाएंगी और राजस्थान के सभी भाजपा विधायकों को गुजरात में सुशासन की ट्रेनिंग दिलवाई जाएगी। अहमदाबाद के नजदीक प्रतिष्ठित प्रवेग टेंट सिटी, नर्मदा में 5 से 7 मई तक तीन दिवसीय कार्यशाला आयोजित होगी, जिसे 'सुशासन कॉन्फ्रेंस' नाम दिया गया है। इस कैंप का मूल मकसद विधायकों को सत्ता-संगठन में समन्वय, जनता से संवाद और पार्टी की रीति-नीति के अनुरूप कार्यशैली सिखाना होगा।कॉन्फ्रेंस का उद्घाटन 5 मई को दोपहर 3 बजे होगा, जबकि समापन सत्र 7 मई को दोपहर बाद संपन्न होगा। खास बात ये है कि इस ट्रेनिंग कैंप में राजस्थान के मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा खुद मौजूद रहेंगे। उनके साथ उनकी कैबिनेट के सभी मंत्री और तमाम भाजपा विधायक भी इस मंथन का हिस्सा बनेंगे। पार्टी ने यह कार्यशाला लंबे समय से प्रस्तावित कर रखी थी, लेकिन विभिन्न व्यस्तताओं के चलते इसे अब आयोजित किया जा रहा है। कार्यशाला के दौरान स्वागत सत्र से लेकर समापन तक कई चरणों में व्याख्यान और संवाद सत्र होंगे। सभी सत्रों में विधायकों की उपस्थिति अनिवार्य की गई है। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा भी विभिन्न सत्रों में उद्बोधन देंगे और कार्यकर्ताओं को मार्गदर्शन देंगे। पार्टी के संगठन से जुड़े बड़े पदाधिकारी भी इस मौके पर अपनी बात रखेंगे। खास बात यह भी है कि सिर्फ विधायक ही नहीं, बल्कि उनके निजी सहायक और अन्य स्टाफ के लिए भी प्रशिक्षण की योजना बनाई जा रही है। एक वरिष्ठ भाजपा पदाधिकारी ने बताया कि संगठन चाहता है कि विधायक ही नहीं, उनका स्टाफ भी पार्टी की विचारधारा को समझे और उसी अनुरूप काम करे, जिससे प्रशासनिक कार्यों में स्पष्टता और संगठन में मजबूती आए।

अमेरिकी उप राष्ट्रपति वेंस की सुरक्षा कड़ी

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। जम्मू-कश्मीर में आतंकी वारदात के बाद खुफिया एजेंसियों को मिले इनपुट के आधार पर जयपुर में अमेरिकी उपराष्ट्रपति जेडी वेंस और उनके परिवार की सुरक्षा और ज्यादा कड़ी कर दी गई है। वेंस अपने परिवार के साथ जयपुर में 3 दिन के प्रवास पर हैं। इसके बाद वेंस गुरूवार सुबह 6 बजे जयपुर एयरपोर्ट से सीधे अमेरिका के लिए रवाना होंगे। काबिले गौर है कि कश्मीर के पहलगाम में बड़ी आतंकी वारदात हुई है, जिसमें आतंकियों ने अंधाधुंध फायरिंग की, जिससे 26 पर्यटकों की जान चली गई और कई गंभीर घायलों का अभी इलाज चल रहा है। इसी बीच प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सऊदी अरब का दौरा बीच में छोड़कर भारत लौट आए हैं। घटना को लेकर पक्ष और विपक्ष सभी ने एक सुर में कड़ी आलोचना की है। राज्यपाल हरिभाऊ बागड़े ने जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकी हमले पर गहरा शोक व्यक्त किया है। उन्होंने आतंकी हमले को कायरतापूर्ण हरकत बताते इसे घोर निंदनीय कहा है। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने भी इस आतंकी हमले पर शोक व्यक्त किया है। उपराष्ट्रपति की सुरक्षा के मद्देनजर रामबाग पैलेस होटल के भीतर और बाहर ईआरटी कमांडोज की टुकड़ियां तैनात कर दी गई हैं। पूरा होटल छावनी में तब्दील हो गया है। आतंकी हमले को लेकर वेंस ने भी अपनी संवेदनाए जताई हैं। उन्होंने कहा कि मैं और उषा भारत के पहलगाम में हुए विनाशकारी आतंकी हमले के पीड़ितों के प्रति संवेदना व्यक्त करते हैं।

आतंकियों को भारत देगा जल्द मुंहतोड़ जबावः राजनाथ

जयपुर टाइम्स

नई दिल्ली एजेंसी। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने बुधवार को कहा कि दक्षिण कश्मीर के पहलगाम में हुए कायराना आतंकी हमले में शामिल लोगों को जल्द ही करारा जवाब मिलेगा और भारत ऐसी किसी भी आतंकी गतिविधि से डरने वाला नहीं है। रक्षा मंत्री की यह टिप्पणी पहलगाम में हुए आतंकी हमले में 26 लोगों की हत्या के एक दिन बाद की है।

राजनाथ सिंह ने कहा कि मैं इस मंच से देशवासियों को आश्वस्त करता हूं कि घटना के मद्देनजर भारत सरकार हर वह कदम उठाएगी जो आवश्यक और उचित होगा। उन्होंने कहा कि हम न केवल इस घटना को अंजाम देने वालों का पता लगाएंगे, बल्कि उन लोगों तक भी पहुंचेंगे, जिन्होंने पर्दे के पीछे बैठकर भारत की धरती पर इस नापाक हरकत को अंजाम देने की साजिश रची है। रक्षा मंत्री ने कहा कि भारत इतनी पुरानी सभ्यता और इतना बड़ा देश है कि इसे ऐसी किसी भी आतंकी गतिविधि से डराया नहीं जा सकता। उन्होंने कहा, ऐसी हरकतों के लिए जिम्मेदार लोगों को जल्द ही करारा जवाब देंगे।

राजनाथ सिंह ने पहलगाम में हुए हमले को बेहद अमानवीय बताया। उन्होंने कहा, इस हमले ने हम सभी को गहरे दुख और पीड़ा में डाल दिया है।

पीएम सऊदी अरब का दौरा छोड़ वापस लौटे

एक से सात अप्रैल तक आतंकियों ने की थी रेकी, फिर दिया हमले को अंजाम, 26 को मार डाला

जयपुर टाइम्स

नई दिल्ली एजेंसी। जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में मंगलवार को हुए हमले पर बड़ा खुलासा हुआ है। आतंकियों ने रैकी के बाद वारदात को अंजाम दिया था। बताया जा रहा है कि हमले को अंजाम देने में छह आतंकी शामिल थे। जानकारी मिली है कि हमलावरों ने एक से सात अप्रैल तक इस इलाके की रेकी की। सुरक्षाबलों को घटनास्थल से कुछ दूर बिना नंबर की एक मोटरसाइकिल मिली है। माना जा रहा है कि आतंकियों ने इसका इस्तेमाल किया है। खुफिया सूत्रों से पहलगाम हमले पर बड़ा खुलासा हुआ है। कुल छह आतंकियों ने वारदात को अंजाम दिया। टीआरएफ कमांडर सैफुल्लाह ने हमले की साजिश रची है। बता दें कि जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में मंगलवार को आतंकियों ने पर्यटकों पर अंधाधुंध गोलियां बरसा कर 26 लोगों की नृशंस हत्या कर दी। सेना की वर्दी में आए दहशतगर्दों ने यह हमला किया।

पर्यटकों पर आतंकी हमला, 26 की नृशंस हत्या

जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में मंगलवार को आतंकियों ने पर्यटकों पर अंधाधुंध गोलियां बरसा कर 26 लोगों की नृशंस हत्या कर दी। सेना की वर्दी में आए दहशतगर्दों ने पहलगाम की बायसरन घाटी में पर्यटकों से पहले उनका धर्म पूछा, परिचय पत्र देखे और फिर हिंदू हो कहकर गोली मार दी। 26 मृतकों में ज्यादातर पर्यटक हैं, जबकि दो विदेशी और दो स्थानीय नागरिक शामिल हैं।

पीएम मोदी सऊदी अरब की यात्रा बीच में छोड़कर लौटे

हमले के बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सऊदी अरब की यात्रा बीच में छोड़कर लौट आए हैं। पीएम मोदी ने वारदात की कड़ी निंदा की है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बुधवार सुबह सऊदी अरब से हवाई अड्डे पर राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजीत डोभाल और विदेश मंत्री एस जयशंकर के साथ बैठक की और पहलगाम में हुए आतंकी हमले के बाद की स्थिति पर चर्चा की। इससे पहले, पीएम मोदी ने गृह मंत्री अमित शाह से फोन पर बात कर जरूरी कदम उठाने और कश्मीर पहुंचाने के निर्देश दिए।

पहलगाम हमले के मामले में सुरक्षा मामलों की कैबिनेट कमेटी की बैठक आयोजित

जयपुर टाइम्स

नई दिल्ली। दक्षिण कश्मीर के पहलगाम में पर्यटकों पर हुए आतंकी हमले के बाद प्रधानंत्री आवास पर सुरक्षा मामलों की कैबिनेट कमेटी (सीसीएस) की बैठक खत्म हो गई है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इस बैठक की अध्यक्षता की। बैठक में केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह, विदेश मंत्री एस जयशंकर, वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण, रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह और राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजित डोभाल सहित कई शीर्ष अधिकारी भी शामिल हुए। बैठक में केंद्र सरकार हमले की जानकारी दी। पहलगाम की बायसरन घाटी में मंगलवार को आतंकी हमले में 26 पर्यटकों की मौत हो गई, जबकि 17 लोग पर्यटक घायल हैं। आतंकियों ने पर्यटकों को निशाना बनाते हुए गोलीबारी की। आतंकी हमले के बाद बुधवार सुबह से सेना से लेकर एनआईए, पुलिस और अन्य एजेंसियां अलर्ट मोड में हैं। ड्रोन और हेलिकॉप्टर से चप्पे-चप्पे पर निगरानी की जा रही है। साथ ही आतंकियों की तलाश की जा रही है। जम्मू कश्मीर से दिल्ली तक हाई अलर्ट पर है। बायसरन घाटी में हुए हमले में शामिल दो स्थानीय आतंकियों की पहचान कर ली गई है। दो पाकिस्तानी आतंकियों की भी पहचान हुई है। मंगलवार को आतंकियों ने करीब 20 मिनट तक एके-47 से गोलीबारी की थी। स्थानीय आतंकियों के नाम आदिल अहमद ठाकुर और आशिफ शेख बताए जा रहे हैं। सूत्रों के अनुसार, आदिल ठाकुर लश्कर-ए-तैयबा से जुड़ा हुआ बताया जा रहा है। आदिल गुरी, बिजबेहड़ा का रहने वाला बताया जा रहा है। आशिफ शेख का जैश-ए-मोहम्मद से कनेक्शन बताया जा रहा है। आशिफ मोंघामा, मीर मोहल्ला (त्राल) का रहने वाला बताया जा रहा है। जानकारी यह भी मिली है कि हमले के कुछ आतंकियों ने बॉडी कैमरा लगाया था। हमले की पूरी घटना को आतंकियों ने रिकॉर्ड किया था। इससे पहले, कश्मीर के पहलगाम में मंगलवार को हुए आतंकी हमले में मारे गए लोगों के शव बुधवार को श्रीनगर लाए गए, जहां अधिकारी पुलिस नियंत्रण कक्ष में पुष्पांजलि अर्पित की गई। बुधवार रात श्रीनगर पहुंचे केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने बुधवार को पीसीआर में एक समारोह में मृतकों के ताबूतों पर पुष्पांजलि अर्पित की।

अलवर जयपुर टाइम्स

जयपुर, गुरूवार
24 अप्रेल, 2025

जिला प्रभारी मंत्री ने ली विकास कार्यों एवं योजनाओं की प्रगति की समीक्षा बैठक

केंद्रीय पर्यावरण वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्री के सुझाव वेस्ट टू एनर्जी परियोजना और भिवाड़ी मास्टर ड्रेनेज प्लान पर विस्तार चर्चा

जिले में सुचारू पेयजल आपूर्ति कराने एवं हीट वेव से बचाव हेतु एडवायजरी की पालना करावे - प्रभारी मंत्री डॉ. मीणा

जयपुर टाइम्स

खैरथल-तिजारा(निसं.)। जिले के प्रभारी मंत्री एवं कृषि एवं उद्यानिकी, आपदा प्रबंधन, सहायता एवं नागरिक सुरक्षा विभाग मंत्री डॉ. किरोड़ी लाल मीणा ने रीको गेस्ट हाउस, भिवाडी के सभागार में विकास कार्यों एवं योजनाओं की प्रगति की समीक्षा बैठक लेकर संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया कि बजट घोषणाओं, आमजन की मूलभूत सुविधाओं एवं केंद्र व राज्य सरकार की योजनाओं का धरातल पर समयबद्ध रूप में प्रभावी क्रियान्वयन करावें।

भिवाड़ी जल भराव समस्या से निपटने हेतु विस्तार से चर्चा

बैठक के दौरान जिला प्रभारी मंत्री ने केंद्रीय पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्री भूपेंद्र यादव द्वारा दिए गए सुझावों–'वेस्ट टू एनर्जी' परियोजना और भिवाड़ी मास्टर ड्रेनेज प्लान पर विस्तृत चर्चा की। उन्होंने इन योजनाओं को धरातल पर उतारने के लिए अब तक की गई कार्रवाई की समीक्षा करते हुए संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश प्रदान किए, ताकि इन महत्वपूर्ण परियोजनाओं को प्रभावी ढंग से क्रियान्वित किया जा सके। उन्होंने का कि भिवाड़ी में "वेस्ट टू एनर्जी मॉडल" के माध्यम से कचरे से बिजली और कंपोस्ट उत्पादन जैसी परियोजनाएं न केवल कचरा प्रबंधन का स्थायी समाधान बनेंगी, बल्कि इससे क्षेत्र को स्वच्छ और हरित बनाने में मदद मिलेगी। बैठक के दौरान उन्होंने भिवाड़ी जल भराव समस्या से निपटने हेतु मास्टर ड्रेनेज प्लान पर विस्तार से चर्चा भी की।

हीट वेव व लू-तापघात से बचाव हेतु रखे समुचित व्यवस्था

प्रभारी मंत्री डॉ. मीणा ने चिकित्सा विभाग द्वारा जिले में हीट वेव व लू-तापघात से बचाव हेतु की गई तैयारियों की समीक्षा कर मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी निर्देश दिये कि जिले के चिकित्सा संस्थानों में हीट वेव मरीजों के लिए आरक्षित बैड, कूलर, पंखे, एसी, वाटर कूलर, ओरआरएस के पैकेट, दवाइयां इत्सादि की समुचित व्यवस्थाएं सुनिश्चित करें। साथ ही आमजन को हीट वेव व लू-तापघात से बचाव हेतु सरकार द्वारा जारी एडवायजरी का व्यापक प्रचार-प्रसार करावे। उन्होंने मुख्यमंत्री निःशुल्क दवा योजना के तहत चिकित्सा संस्थानों में दवाओं की पर्याप्त उपलब्धता सुनिश्चित करने के निर्देश दिये। उन्होंने कृषि विभाग द्वारा किसान हित में किए जा रहे कार्यों एवं सरकार की जनहितैषी योजनाओं की समीक्षा करते हुए कृषि विभाग के संयुक्त निदेशक को निर्देशित किया कि तारबंदी, पॉली हाउस निर्माण, ग्रीन हाउस, ड्रीप सिस्टम, मिनी फव्वारा व स्प्रिंकलर, मल्च इत्यादि योजनाओं में जिले के लक्ष्य अनुसार प्रगति अर्जित करें तथा गांवों में संगोष्ठियों व चौपालों के माध्यम से इन योजनाओं की जानकारी प्रदान कर उन्हें लाभांवित करावे।

ग्रीष्म ऋतु के दौरान रहे सुचारू पेयजल आपूर्ति

जिले के प्रभारी मंत्री डॉ. मीणा ने ग्रीष्म ऋतु को ध्यान में रखते हुए जिले में पेयजल व्यवस्था की समीक्षा की। उन्होंने जलदाय विभाग के अधीक्षण अभियंता को निर्देशित किया कि पेयजल की सुचारु और समुचित आपूर्ति सुनिश्चित करने हेतु विभिन्न मदों में स्वीकृत कार्यों तथा समर कंटीजेंसी प्लान के अंतर्गत शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों में स्वीकृत योजनाओं को निर्धारित समय-सीमा में पूर्ण कराया जाए। मंत्री डॉ. मीणा ने पेयजल से प्रभावित क्षेत्रों में आमजन की आवश्यकताओं का विश्लेषण कर, आवश्यकता अनुसार टैंकरों के माध्यम से पेयजल आपूर्ति सुनिश्चित करने और उसकी जीपीएस के माध्यम से प्रभावी निगरानी करने के निर्देश भी दिए। उन्होंने यह भी कहा कि पेयजल संबंधी शिकायतों का शीघ्र, गुणवत्तापूर्ण समाधान किया जाए, ताकि गर्मी के मौसम में जनता को किसी प्रकार की परेशानी का सामना न करना पड़े। जल जीवन मिशन के अंतर्गत ग्रामीण क्षेत्रों में चल रहे कार्यों की प्रगति की समीक्षा करते हुए उन्होंने निर्देश दिए कि ऐसे गांव जो 'नॉन-फिज़ेबल' की श्रेणी में आते हैं, उनके स्थाई सामाधन हेतू कार्य योजना बनाने तथा तत्काल रूप से वहां पेयजल आपूर्ति टैंकरों के माध्यम से किया जाए। साथ ही, जेजेएम के कार्यों के दौरान क्षतिग्रस्त हुई सड़कों की शीघ्र मरम्मत सुनिश्चित कराने के भी निर्देश दिए। उन्होंने खराब हुए पंप सेट को डीएमएफटी फंड के माध्यम से सही कराने एंव नए पंप सेट के क्रय करने निर्देशित किया।

जनप्रतिनिधियों ने दिए सुझाव

तिजारा विधायक महंत बालकनाथ एंव पूर्व विधायक रामहेत सिंह यादव ने क्षेत्र में जल जीवन मिशन योजना में नॉन फिजिबल गांवों में पेयजल आपूर्ति की योजना बनवाने, योजना के तहत संचालित कार्यों को शीघ्र पूर्ण कर पेयजल आपूर्ति सुचारू कराने सहित कई मुद्दों पर सुझाव दिए। इसके साथ ही उन्होंने क्षेत्र की विद्युत आपूर्ति को निर्बाध व सुचारू कराने हेतु फीडर मैनेजमेंट को मजबूत करने के सुझाव दिए तथा विद्युत ट्रांसफार्मर जलने की फेलियर रिपोर्ट समयबद्ध रूप से उच्च स्तर पर भिजवाकर ट्रांसफार्मर को बदलवाने, जल जीवन मिशन योजना के तहत क्षतिग्रस्त सडकों की मरम्मत कराने तथा योजना से वंचित का गांवों में पेयजल आपूर्ति की व्यवस्था कराने के संबंध में अपने सुझाव दिए। जिला कलक्टर किशोर कुमार ने प्रभारी मंत्री डॉ. किरोडी लाल मीणा को विश्वास दिलाया कि बैठक में दिए गए निर्देशों की अक्षरशः पालना सुनिश्चित कराई जावेगी।

आमजन की सुनी परिवेदनाएं

बैठक के पश्चात प्रभारी मंत्री डॉ. मीणा ने रीको सभागार भिवाड़ी में जिलेभर से आए फरियादियों की परिवेदनाओं को सुनकर संबंधित अधिकारियों को समस्याओं का त्वरित निराकरण करने हेतु निर्देश दिये। इस दौरान मीडिया के द्वारा अवैध शराब के बेचान, झोला छाप डॉक्टर, अतिक्रमण साहित अन्य शिकायतों से अवगत कराया जिस पर प्रभारी मंत्री ने संबंधित अधिकारियों को सख्त निर्देश देते हु? आवश्यक करवाई करने के निर्देश दिये। जनसुनवाई के दौरान ग्राम अहीर भगोला के राशन डीलर के संबंध में अनियमिता की शिकायत पर राशन डीलर को सस्पेंड करने के निर्देश दिये।बैठक में तिजारा विधायक महंत बालक नाथ योगी, जिला प्रमुख बलबीर छिल्लर, पूर्व विधायक रामहेत सिंह यादव, पुलिस अधीक्षक भिवाड़ी ज्येष्ठा मैत्रेयी, पुलिस अधीक्षक खैरथल मनीष कुमार, एडीएम शिवपाल जाट, एडीएम सुमित्रा मिश्र, डीएफओ राजेन्द्र हुड्डा, जिला रसद अधिकारी राकेश सोनी, समाज कल्याण अधिकारी गजराज यादव, उपरजिस्टार सहकारिता विभाग वेद प्रकाश सैनी, अधीक्षण अभियंता बिजली जेपी बैरवा, विभाग अधिशासी जन स्वास्थ्य एवं अभियांत्रिकी विभाग धर्मेंद्र यादव, पीडब्ल्यूडी के अधीक्षण अभियन्ता भूरी सिंह, सीएमएचओ डॉ अरविंद गेट, वरिष्ठ प्रबंधक रीको यूनिट प्रथम एवं द्वितीय ज्ञानेंद्र शर्मा एवं आदित्य शर्मा सहित संबंधित अधिकारी उपस्थित रहे।

पीएम सूर्य घर योजना से करें लाभांवित

उन्होंने पीएम सूर्यघर मुफ्त बिजली योजना एवं पीएम कुसुम योजना की समीक्षा कर विद्युत विभाग के अधीक्षण अभियन्ता को निर्देश दिये कि उपभोक्ताओं के लिए दोनों योजनाएं विद्युत बिल में राहत देने के साथ विद्युत उत्पादन व विद्युत बचत के संबंध में महत्वपूर्ण योजना है। उन्होंने निर्देश दिये कि जिले में अवैध खनन पर प्रभावी लगाम लगाने हेतु खनि अभियन्ता, वन विभाग व पुलिस के साथ राजस्व विभाग समन्वय स्थापित कर कार्रवाई करें। उन्होंने नरेगा योजना, डीएमएफटी एवं मेवात क्षेत्रीय विकास योजनान्तर्गत कार्यों की समीक्षा कर संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिये। उन्होंने चलाए जा रहे अभियान एक पेड़ मां के नाम के तहत निर्धारित लक्ष्यों के अनुरूप पेड़-पौधे लगाने के निर्देश दिए। बैठक के दौरान तिजारा विधायक ने संस्थागत प्रसव की संख्या कम होने के बारे में प्रभारी मंत्री को अवगत कराया जिस पर मंत्री ने मुख्य चिकित्सा एंव स्वास्थ्य अधिकारी को प्रसव एंव सीजेरियन गवर्नमेंट हॉस्पिटल में सूचारू रूप से कराने के निर्देश दिये। इसके साथ ही उन्होंने नकली मावा, पनीर की रोकथाम हेतू एक विशेष अभियान चलाने के लिए निर्देशित किया। उन्होंने जिले के दोनों पुलिस अधीक्षकों से जिले में लॉ एण्ड ऑर्डर की स्थिति की जानकारी लेते हुए आवश्यक दिशा निर्देश दिए। जिस पर पुलिस अधीक्षक भिवाड़ी ने बताया कि गत वर्ष की तुलना में इस वर्ष साइबर, पोक्सो एक्ट, महिला अपराध सहित अन्य अपराधों में कमी आई है।

डॉ. संदीप सैनी के कांग्रेस पार्टी जिला अलवर चिकित्सा प्रकोष्ठ अध्यक्ष बनने पर किया स्वागत

जयपुर टाइम्स

अलवर(निसं.)। मालाखेडा हल्दिना बाईपास चौराहे पर डॉ. संदीप सैनी के कांग्रेस पार्टी जिला अलवर चिकित्सा प्रकोष्ठ अध्यक्ष बनने पर सैनी समाज के छब्बीसी अध्यक्ष लालाराम सैनी, महात्मा ज्योतिबा फूले सैनी उत्थान सेवा समिति अध्यक्ष बनवारी लाल, सैनी यूवा महासभा तथा जितेन्द्र सैनी, कन्हैयालाल सैनी, बरखेडा पूर्व सरपंच घीसाराम सैनी, रमेशचन्द, मनीराम, विष्णू, बाबूलाल सैनी पार्षद मालाखेडा, रोहिताश्व सैनी, रामावतार सैनी, शम्भूदयाल, योगेश सैनी, लखन सैनी, सुखराम सैनी, प्रदीप सैनी तथा सर्वसमाज के लोगो ने माला व साफा पहनाकर डॉ. सैनी का स्वागत सम्मान किया। इस अवसर पर महात्मा मोहनदास सेवा समिति उपाध्यक्ष झम्मनलाल सैनी महात्मा ज्योतिबा फूले विद्यार्थी उन्नत शिक्षण संस्थान, अलवर अध्यक्ष विकास बबेरवाल, युवा महासभा पदाधिकारी जितेन्द्र सैनी, लवनीश सैनी उपस्थित रहे।

पहलगांव आतंकवादी घटना के विरोध में श्री अमरनाथ बर्फानी सेवा समिति के द्वारा निकाला गया कैंडल मार्च

जयपुर टाइम्स

अलवर(निसं.)। पहलगाम में आतंकवादियों के द्वारा पर्यटकों एवं आमजन पर धर्म पूछ कर उनकी निर्मम और बर्बर तरीके से हत्या कर दी गई जिससे पूरे भारतवर्ष में अत्यंत ही रोष का वातावरण बना हुआ है। समिति के प्रवक्ता मुकेश विजय ने बताया की मानव सेवा में समर्पित श्री अमरनाथ बर्फानी सेवा समिति ने भी इस घटना के विरोध में त्रिपोलिया महादेव मंदिर से शहीद स्मारक तक कैंडल एवं विरोध जुलूस निकाला। श्री अमरनाथ बर्फानी सेवा समिति की ओर से अबकी बार आतंकवाद से लड़ाई को आर पार की बनाकर इसे जड़ से खत्म करने एवं इस निर्मम घटना के पीछे छिपे सभी चेहरों एवं आतंकवादियों को पकड़कर उनको फांसी दिलवाने की मांग की गई। जुलूस में मनोज शर्मा भागीरथ सोनी मुकेश विजय महेश खंडेलवाल लोकेश यादव महेश मुद्गल अजय गौड़ ,हेमंत सैनी दिनेश खंडेलवाल, मनीष गुप्ता ,विष्णु शर्मा ,देवेंद्र विजय एवं समिति के सेवादार मौजूद थे।

कश्मीर के पहलगांव की घटना पर कांग्रेस ने निकाला कैंडल मार्च व दिवंगत आत्माओं को दी श्रद्धांजलि

जयपुर टाइम्स

अलवर(निसं.)। जिला कांग्रेस कमेटी और युवा कांग्रेस अलवर द्वारा कश्मीर के पहलगांव में आतंकवादियों की दुर्भाग्यपूर्ण घटना पर सायं नंगली सर्किल से शहीद स्मारक तक केंडल मार्च एवं विरोध प्रदर्शन किया। प्रवक्ता रिपुदमन गुप्ता ने बताया कि जम्मू कश्मीर के पहलगांव में घूमने आये पर्यटकों के साथ आतंकवादियों द्वारा कायराना हरकत कर हमारे नागरिकों को मौत के घाट उतार दिया गया इसके विरोध स्वरूप नंगली सर्किल से शहीद स्मारक तक केंडल मार्च निकाल कर शहीद स्मारक पर मोमबत्ती जलाकर दिवंगत आत्माओं को श्रद्धांजलि दी और देश भक्ति के नारे लगाये। कांग्रेस जिलाध्यक्ष योगेश मिश्रा ने इसे कायरता पूर्ण और मानवता को शर्मसार करने वाला हमला बताया। उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार को इस हमले को अंजाम देने वाले आतंकी संगठन की पहचान कर उसे उसके अंजाम तक पहुंचाना चाहिए। उन्होंने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह से मांग की कि ऐसे संगठनों को पूरी तरह नेस्तनाबूद किया जाए। पाकिस्तान जैसे देश जो आतंक समर्थक संगठनों को पनाह देते हैं, उन्हें स्पष्ट संदेश देना जरूरी है कि भारत अब किसी भी आतंकी हरकत को बर्दाश्त नहीं करेगा। इस दौरान कांग्रेस जिलाध्यक्ष योगेश मिश्रा, पूर्व विधायक सफिया खान, पीसीसी महासचिव अजीत यादव, रिपुदमन गुप्ता, दीनबंधु शर्मा, साजिद अनवर, राजेश कृष्ण सिद्ध, जमशेद खान, जगदीश सिंघल, रमन सैनी, एस आर यादव,धर्मपाल नंगली, रिंकू पार्षद, रामकिशन थानेदार, गौरीशंकर विजय, सुदर्शन अरोड़ा, धर्मेंद्र शर्मा, अंकित सैनी, रवि कपूर, संदीप ओला, धर्मराज मीणा, गोपाल जायसवाल आदि उपस्थित रहे।

फिल्म निर्देशक अनुराग कश्यप के खिलाफ शहर कोतवाली में दी शिकायत

जयपुर टाइम्स

अलवर(निसं.)। फिल्म निर्देशक अनुराग कश्यप के खिलाफ शहर कोतवाली अलवर में शिकायत दी। युवा ब्राह्मण सभा परिवार के अध्यक्ष आकाश मिश्रा ने बताया निरंतर सनातन, सेंसर बोर्ड, पीएम मोदी पर जातीय व्यवस्थाओं के सवाल एवं ब्राह्मण समाज पर शोभनीय टिप्पणी जिसमें अनुराग कश्यप ने लिखा में ब्राह्मणों पर मुतुंगावआदि निरंतर जातीय एवं राष्ट्रीय विरोधी विचारधारा रखने वाले जातीय विमंजस्यता एवं राष्ट्रीय विरोधी विचारधारा रखने वाले फिल्म निर्माता निर्देशक एवं लेखक अनुराग कश्यप के खिलाफ बुधवार को युवा ब्राह्मण सभा परिवार एवं सर्व समाज के साथ अलवर शहर कोतवाली में शिकायत दी गई एवं एफआईआर दर्ज कर गिरफ्तार करने की मांग की गई साथ ही अलवर जिले में अनुराग कश्यप की किसी भी फिल्म को प्रदर्शित नहीं होने देने का की शपथ ली गई, इनकी विचारधारा से दंगे फेल सकते है इसलिए इनकी गिरफ्तारी आवश्यक है। अंत में पुलग्राम में हुए आतंकी हमले की निंदा करते हुए पीएम मोदी से सख्त कार्यवाही की माँग की गई। इस अवसर पर आकाश मिश्रा, शिवचरण कमल, डॉ विनोद शर्मा, राकेश शर्मा, सुभाष शर्मा, विशाल शर्मा, रामबाबू शर्मा, सुनील शर्मा, सचिन तिवाड़ी, वेद इंदौरिया, दीपक शर्मा, कुलदीप शर्मा, राजू उपाध्याय, सोहन सिंह चौहान, अमन चौधरी, निर्मल अवस्थी, रोहित शर्मा, राजेश शर्मा, अंकुर चौधरी एवं गौरव शर्मा आदि उपस्थित रहे।

कश्मीर घाटी (पहलगांव) में आतंकी घटना के विरोध में प्रधानमंत्री के नाम प्रशासनिक अधिकारी को सौंपा ज्ञापन

जयपुर टाइम्स

अलवर(निसं.)। श्री अमरनाथ बर्फानी सेवा समिति अलवर द्वारा कश्मीर घाटी (पहलगांव) में आतंकी घटना के विरोध में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, भारत सरकार के नाम अतिरिक्त जिला कलक्टर अलवर को ज्ञापन सौपा गया। समिति जिलाध्यक्ष मनोज शर्मा ने बताया कि ज्ञापन में 22 अप्रैल 2025 मंगलवार को आतंकवादियों द्वारा पहलगाव, अनन्तनाग के बेसरन घाटी इलाके में 28 पर्यटकों की मारे जाने की जो अमानवीय घटना हुई है। इस दुखद घटना की श्री अमरनाथ बर्फानी सेवा समिति कडे शब्दों में निन्दा करती है। जिस तरीके से थे आतंकवादी घटना हुई है। पर्यटकों की उनका धर्म पूछ कर उनके परिवार जनों के सामने बडे ही क्रूर व बर्बर तरीके से निर्मम हत्या कर दी गई है। जिससे कश्मीर ही नहीं पूरे भारत वर्ष में आमजन में दहशत और भय का माहौल बन गया है। समिति ने ज्ञापन में कहा है कि इससे पूरे विश्व में भारत के नेतृत्व की जो अलग पहचान बनाई है उसकी साख पर इस घटना ने बडी चोट पहुचाई है। जिससे हमारे देश की प्रतिष्ठा पूरे विश्व में धूमिल हुई है। मानव सेवा में समर्पित श्री अमनराथ बर्फानी सेवा समित आपसे आग्रह करती है कि इस आतंकवादी घटना के पीछे जो भी आतंकवादी है उनको जिन्दा या मुर्दा पकड कर स त से स त कदम उठाये जावें और जो आतंकवादी कैम्प चल रहे है उनको निस्तनाबूत करने की कार्यवाही भारत सरकार करे। जिससे आपके कार्य करने की जो शैली जो पूरे विश्व में जानी जाती है उसपर पूर्ण विश्वास किया जा सकें। ज्ञापन सौपने वालों में झाबरमल यादव, मनोज शर्मा, महेश मुदगल, लोकेश यादव, मोहित गुप्ता, अभिषेक गुर्जर, विनित अग्रवाल, कृष्ण ग्रोवर शामिल रहे।

जिले के विद्यालयों में चालकों की नेत्र जांच हेतु नेत्र जांच शिविर लगाए- एएसपी मुख्यालय सिंह

जिला स्तरीय बाल वाहिनी प्रबंधन समिति की बैठक आयोजित

जयपुर टाइम्स

अलवर(निसं.)। अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक मुख्यालय डॉ तेजपाल सिंह की अध्यक्षता में पुलिस अन्वेक्षण भवन में जिला स्तरीय बाल वाहिनी प्रबंधन समिति की बैठक आयोजित हुई। अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक ने आरटीओ व डिप्टी सीएमएचओ को निर्देश दिये कि जिले के विद्यालयों में चालकों की नेत्र जांच हेतु नेत्र जांच शिविर लगाए। उन्होंने आरटीओ को निर्देश दिये कि इस सत्र के प्रारम्भ में सभी विद्यालयों के वाहनों की मापदंडों के अनुसार संचालन की जांच करावे। उन्होंने पीडब्ल्यूडी के अधिकारी को निर्देश दिये कि विद्यालयों के समीप रोड व घुमाव क्षेत्र पर स्पीड ब्रेकर व साइनेज लगवाए। विद्यालय प्रबंधकों को निर्देश दिए गए बाल वाहिनी का रंग पीला ही रखा जाए। बस आगे पीछे बाल वाहिनी, स्कूल का नाम तथा विद्यालय के दूरभाष नंबर अवश्य रूप से अंकित होवे। उन्होंने निर्देश दिये कि चालक-परिचालक खाकी यूनिफार्म में रहे। उन्होंने निर्देश दिये कि सुनिश्चित करें कि चालकों का लाइसेंस कम से कम 5 वर्ष पुराना होवे तथा चालकों व परिचालकों का पुलिस वेरिफिकेशन कराकर ही नियुक्त करें। उन्होंने निर्देश दिये कि बाल वाहिनियों में जी.पी. एस, पेनिक बटन, फस्ट एड बॉक्स, पुलिस कंटोल रूम व चाइल्ड हैल्प लाइन के नंबर, चालू स्थिति में सीसीटीवी कैमरे, शिकायत बॉक्स की व्यवस्था सुनिश्चित करें। बैठक में आरटीओ सतीश कुमार, डीटीओ सविता भारद्वाज, डिप्टी सीएमएचओ डॉ. महेश बैरवा, एआरटीओ ललित कुमार गुप्ता, पुलिस उपाधीक्षक यातायात मुकेश चौधरी सहित संबंधित अधिकारी एवं स्कूलों के प्रबंधक उपस्थित थे।

राज्य सरकार का संकल्पः पात्र को अधिकार, अपात्र को बाहर

खैरथल-तिजारा(निसं.)।। राज्य सरकार मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के मार्गदर्शन में वंचित वर्गों के उत्थान और अंतिम पंक्ति तक योजनाओं का लाभ पहुँचाने के लिए प्रतिबद्ध है। इसी क्रम में खाद्य सुरक्षा योजना में पारदर्शिता लाने और वास्तविक पात्रों को लाभ देने के उद्देश्य से व्यापक स्तर पर कार्य किया जा रहा है। जिला रसद अधिकारी ने जानकारी दी कि राजस्थान खाद्य सुरक्षा नियम, 2023 के तहत अपात्र व्यक्तियों को योजना से हटाने की प्रक्रिया तेजी से जारी है। जिन परिवारों में कोई आयकरदाता है, सरकारी/अर्धसरकारी या स्वायत्तशासी संस्थाओं में कार्यरत सदस्य है, जिनकी वार्षिक आय एक लाख रुपये से अधिक है या जिनके पास चार पहिया वाहन है (ट्रैक्टर जैसे जीविकोपार्जन हेतु प्रयुक्त वाहन को छोड़कर), उन्हें योजना से बाहर किया जा रहा है। 1 नवंबर 2024 से प्रारंभ हुए 'गिव अप अभियान' के तहत जिला खैरथल-तिजारा में 953 परिवारों के 4765 सदस्यों ने स्वेच्छा से खाद्य सुरक्षा योजना का लाभ छोडा। इसके साथ ही 5026 नए पात्र परिवारों को योजना से जोड़ा गया है, जिससे उन्हें अब सस्ती दरों पर खाद्यान्न की सुविधा मिल सकेगी।

पुलिस कस्टडी में युवक की हालत गंभीर, मानवाधिकार आयोग ने दिए जांच के आदेश

जयपुर टाइम्स

उदयपुर(निसं.) उदयपुर के खेरवाड़ा थाना क्षेत्र में पुलिस कस्टडी में एक 19 वर्षीय युवक अभिषेक मीणा की हालत गंभीर हो गई है। पुलिस ने उसे 17 अप्रैल को लूट की योजना के संदेह में हिरासत में लिया था। अभिषेक को वेंटिलेटर सपोर्ट पर रखा गया है और तीन दिन से वह बेहोश है। डॉक्टरों के अनुसार, उसके सीने पर गंभीर चोटें हैं और उसे दिमागी बुखार भी है। अभिषेक की मां लीलादेवी, जो उदयपुर रोडवेज में कार्यरत हैं, ने पुलिस पर उनके इकलौते बेटे के साथ बेरहमी से मारपीट का आरोप लगाया है। उन्होंने बताया कि पुलिस बिना सूचना के उनके बेटे को थाने ले गई और रात में निजी अस्पताल ले जाकर बाद में उदयपुर एमबी हॉस्पिटल में भर्ती कराया। मानवाधिकार आयोग ने इस मामले को गंभीरता से लेते हुए इसे मानवाधिकारों का उल्लंघन माना है। आयोग के सदस्य जस्टिस रामचंद्र सिंह झाला ने उदयपुर एसपी को उच्चस्तरीय जांच के निर्देश दिए हैं और खेरवाड़ा डिप्टी समेत अन्य वरिष्ठ अधिकारियों से जांच रिपोर्ट मांगी है। उन्होंने पुलिस हिरासत में प्रताड़ना की बढ़ती घटनाओं पर चिंता जताई है। अस्पताल में अभिषेक के स्हृष्ट में भर्ती रहने के दौरान दो पुलिसकर्मी तैनात हैं, लेकिन मास्क न पहनने के कारण संक्रमण का खतरा भी बना हुआ है। पुलिस फिलहाल मारपीट के आरोपों से इनकार कर रही है।

जिला स्तरीय पोषण पखवाड़ा का हुआ आयोजन

जवाहर कला केन्द्र में आयोजित हुआ समापन समारोह

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। पोषण अभियान के तहत महिला एवं बाल विकास विभाग के द्वारा जिला स्तरीय पोषण पखवाड़ा का आयोजन किया गया। मंगलवार को जवाहर कला केन्द्र में पोषण पखवाड़ा का समापन समारोह आयोजित किया गया। महिला एवं बाल विकास विभाग के शासन सचिव महेन्द्र कुमार सोनी ने समारोह में बतौर मुख्य अतिथि शिरकत की। इस अवसर पर विभाग के निदेशक ओम प्रकाश बुनकर द्वारा पोषण पखवाड़ा में बनाई जा रही गतिविधियों पर विस्तार से चर्चा की। अनुपमा टेलर अतिरिक्त निदेशक (पोषाहार) ने पोषण ट्रैकर पर की जा रही विभागीय एंट्री की समीक्षा की। महिला एवं बाल विकास विभाग की उपनिदेशक अरशदीप बरार ने बताया कि राष्ट्रीय मिशन पोषण 2.0 के उद्देश्य सामाजिक और व्यवहार परिवर्तन संचार तथा सामुदायिक लामबंद रणनीतियों के माध्यम से पोषण परिणामों को बढाने के उद्देश्य से जिला स्तरीय पोषण पखवाड़े का आयोजन किया गया है। उन्होंने बताया कि भारत सरकार द्वारा निर्धारित जीवन के पहले 1000 दिनों पर ध्यान केन्द्रित करना, पोषण टैंकर मे लाभार्थी मॉडयूल का लोकप्रियकरण करना सीएमएएम मॉडयूल के माध्यम से कुपोषण का प्रबंधन करना तथा बच्चों में मोटापे से निपटने के लिए स्वस्थ जीवनशैली की थीम निर्धारित की गई। कार्यक्रम में सामुदायिक गतिविधि के तहत गोद भराई, अन्नप्राशन आदि का आयोजन किया गया तथा कार्यक्रम में जयपुर जिला के आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं द्वारा विभाग से लाभार्थियों को मिलने वाले पोषाहार से विभिन्न व्यंजनों की प्रदर्शनी कि गई। कार्यकर्ताओं द्वारा पोषण से संबंधित रंगोली बनाई गई। अतिथियों द्वारा पोषण पखवाड़ा में उत्कर्ष कार्य करने वाले को एवं रेसिपी व रंगोली में प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान पर रहने वाले को पुरस्कार एवं प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया।

भवानी मंडी: एमएसपी पर गेहूं बेचने में किसानों को परेशानी, कांग्रेस ने सौंपा ज्ञापन

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। भवानी मंडी में न्यूनतम समर्थन मूल्य पर गेहूं बेचने आए किसानों को भारी समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। इन मुद्दों को लेकर कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने मंडल अध्यक्ष रोड़ सिंह परिहार के नेतृत्व में एसडीएम श्रद्धा गोमे को ज्ञापन सौंपा। ज्ञापन में कृषि मंडी में चल रहे MSP खरीद केंद्र की अनियमितताओं की ओर ध्यान आकर्षित किया गया। नगर अध्यक्ष विनय आसतोलिया ने बताया कि किसानों को मैसेज के जरिए दी गई तारीख पर केंद्र पर उपज लेकर पहुंचना होता है, लेकिन तुलाई की प्रक्रिया में 8 से 15 दिन तक का समय लग रहा है। कारण है खरीद केंद्र पर जगह की कमी, मजदूरों (हम्माल) और कर्मचारियों की भारी किल्लत। बारदाने (बोरे) की अनुपलब्धता इस देरी को और भी बढ़ा रही है। इस देरी से परेशान कई किसान अपनी फसल को मंडी में ही कम दामों पर बेचने को मजबूर हो रहे हैं। कुछ किसानों ने बताया कि पंजीयन के एक से डेढ़ महीने बाद भी उन्हें तुलाई की सूचना नहीं मिली। बीज और बुवाई की आवश्यकता के चलते किसान आर्थिक दबाव में आकर नुकसान उठाने को मजबूर हैं। एसडीएम श्रद्धा गोमे ने किसानों की समस्याओं को गंभीरता से लेते हुए जल्द समाधान का आश्वासन दिया। उन्होंने बताया कि माल की अधिकता और बारदाने की कमी मुख्य समस्याएं हैं, जिनका समाधान किया जा रहा है। उन्होंने चेतावनी दी कि यदि किसी व्यापारी या कर्मचारी द्वारा किसानों के साथ भेदभाव की शिकायत मिलती है तो सख्त कार्रवाई की जाएगी। इस दौरान नगर और मंडल के कई कांग्रेस कार्यकर्ता उपस्थित रहे। किसानों ने प्रशासन से तत्काल और प्रभावी व्यवस्था लागू करने की मांग की, ताकि उन्हें अपनी मेहनत का वाजिब मूल्य मिल सके और भविष्य में ऐसी परेशानियों का सामना न करना पड़े।

नगर निगम ग्रेटर सतर्कता शाखा की टीम द्वारा की गई कार्यवाही

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। नगर निगम ग्रेटर आयुक्त श्रीमती रूकमणि रियाड़ के निर्देशानुसार उपायुक्त सतर्कता अजय कुमार शर्मा के नेतृत्व में बुधवार को सतर्कता शाखा की टीम द्वारा नगर निगम जयपुर ग्रेटर के क्षेत्राधिकार में त्रिवेणी नगर चौराहे से सामुदायिक भवन के सामने वार्ड नं. 77, उशा विहार, चित्रकुट योजना, खिरणी फाटक से कनकपुरा फाटक तक अस्थाई अतिक्रमण करने वालों के विरूद्ध 03 केन्टर सामान जब्त किया गया। उपायुक्त सतर्कता अजय कुमार ने बताया कि नगर निगम ग्रेटर क्षेत्राधिकार में त्रिवेणी नगर चौराहे से सामुदायिक भवन के सामने वार्ड नं. 77, उशा विहार, चित्रकुट योजना, खिरणी फाटक से कनकपुरा फाटक तक अस्थाई अतिक्रमण अतिक्रमण हटवाया गया। उपरोक्त कार्यवाही के दौरान 03 केन्टर सामान जब्त कर गोदाम में भिजवाया गया दौरे के दौरान कार्यवाही सतर्कता टीम द्वारा मौके पर समझाईश करते हुए मौखिक पाबंद करवाया कि भविष्य में अस्थाई अतिक्रमण समय से हटा ले अन्यथा नगर निगम जयपुर ग्रेटर के क्षेत्राधिकार में अवैध अतिक्रमण करने वालों के विरूद्ध भारी चालान या प्रभावी कार्यवाही अमल में लाई जायेगी।

प्राध्यापक विद्यालय प्रतियोगी परीक्षा-2024

विचारित सूची में सम्मिलित अभ्यर्थियों को ऑनलाइन भरना होगा विस्तृत आवेदन-पत्र

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। राजस्थान लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित प्राध्यापक विद्यालय प्रतियोगी परीक्षा-2024 अंतर्गत व्याकरण, अंग्रेजी, राजनीति विज्ञान, साहित्य, यजुर्वेद व इतिहास विषय की विचारित सूची में सफल अभ्यर्थियों को विस्तृत आवेदन-पत्र ऑनलाइन भरने होंगे। अभ्यर्थियों को ऑनलाइन आवेदन तथा दस्तावेज सत्यापन के संबंध में आयोग द्वारा जारी दिशा-निर्देशों की पालना आवश्यक रूप से सुनिश्चित करनी होगी। इस संबंध में विस्तृत सूचना आयोग की वेबसाइट पर उपलब्ध है।

ऑनलाईन विस्तृत आवेदन-पत्र भरने का लिंक आयोग द्वारा निम्नानुसार खोला जाएगा-

व्याकरण व अंग्रेजी विषय - दिनांक 23 अप्रेल से 29 अप्रेल 2025 (रात्रि 11.59) तक

राजनीति विज्ञान व साहित्य विषय - दिनांक 28 अप्रेल से 4 मई 2025 (रात्रि 11.59) तक

यजुर्वेद व इतिहास विषय - दिनांक 29 अप्रेल से 5 मई 2025 (रात्रि 11.59) तक

संस्कृत शिक्षा विभाग द्वारा विस्तृत आवेदन-पत्र व दस्तावेजों की जांच की जाएगी। आयोग सचिव ने बताया कि उक्त परीक्षान्तर्गत विषय- व्याकरण तथा अंग्रेजी हेतु दिनांक 16 अप्रेल 2025, राजनीति विज्ञान व साहित्य हेतु दिनांक 21 अप्रेल 2025 तथा यजुर्वेद व इतिहास हेतु दिनांक 22 अप्रेल 2025 को विचारित सूचियां जारी की गई थी। विचारित सूचियों में अस्थाई रूप से सम्मिलित किए गए सभी अभ्यर्थियों को सूचित किया जाता है कि वे अपने एसएसओ आईडी के माध्यम से रिक्रूटमेंट पोर्टल पर माय रिक्रूटमेंट-डीटेल्ड फॉर्म कम स्क्रूटनी- अप्लाई नाउ का चयन कर अपना विस्तृत आवेदन पत्र ऑनलाइन भरें। विस्तृत आवेदन-पत्र व दस्तावेजों की जांच संबंधित विभाग (संस्कृत शिक्षा विभाग) द्वारा ही की जायेगी। अतः ऑनलाइन आवेदन पत्र भरने व सबमिट करने के उपरांत प्रिंट ऑप्शन पर जाकर सम्पूर्ण विस्तृत आवेदन पत्र को 02 प्रतियों में प्रिंट कर अपने पास संभाल कर रखें एवं संस्कृत शिक्षा विभाग, राजस्थान, जयपुर की सूचना के अनुसार निर्धारित दिनांक, समय व स्थान पर विस्तृत आवेदन-पत्र (दो प्रतियों में) मय समस्त मूल दस्तावेजों व स्वयं सत्यापित प्रतियों सहित उपस्थित होवें। इस हेतु संबंधित विभाग द्वारा ही उचित माध्यम से अभ्यर्थियों को दस्तावेज सत्यापन हेतु सूचित कराने की कार्यवाही संपादित की जायेगी एवं राजस्थान लोक सेवा आयोग द्वारा अलग से कोई सूचना अभ्यर्थियों को प्रेषित नहीं की जायेगी। विभाग द्वारा दस्तावेज सत्यापन हेतु निर्धारित तिथि को उपस्थित नहीं होने पर अभ्यर्थी को अपात्र मानते हुए परिणाम में विचारित नहीं किया जायेगा। संबंधित विभाग से दस्तावेज जांच/सत्यापन उपरांत, पात्र अभ्यर्थियों की सूची विभाग द्वारा आयोग को भेजी जाएगी, जिसके उपरांत आयोग द्वारा परिणाम जारी कर चयनित अभ्यर्थियों के नाम नियुक्ति हेतु संबंधित विभाग को अभिस्तावित किये जायेंगे।

भाजपा विधायक के बेटे पर गंभीर आरोपः थाने में तोड़फोड़, पुलिस और बिजली विभाग के अधिकारियों को धमकी

कोटपूतली(निसं.) भाजपा विधायक हंसराज पटेल के बेटे पंकज पटेल एक बार फिर विवादों में घिर गए हैं। मंगलवार शाम पंकज पटेल ने अपने समर्थकों के साथ प्रागपुरा आबकारी थाने पर हमला कर दिया। आरोप है कि उन्होंने वहां तोड़फोड़ की, पुलिसकर्मियों से मारपीट की और अवैध शराब के आरोपी को जबरन छुड़ाकर ले गए। पदमसिंह के अनुसार, आरोपी जेपी योगी को अवैध शराब बिक्री के मामले में गिरफ्तार कर थाने लाया गया था। पूछताछ शुरू होते ही विधायक के बेटे पंकज पटेल ने फोन कर आरोपी को छोड़ने का दबाव बनाया और जब पुलिस ने मना किया तो गालियां देते हुए ट्रांसफर की धमकी दी। कुछ देर में 7-8 गाड़ियों में 50-60 लोग पहुंचे, जिन्होंने थाने में जमकर तोड़फोड़ की और आरोपी को छुड़ाकर ले गए। इस घटना के बाद प्रागपुरा थाने में राजकार्य में बाधा, मारपीट और तोड़फोड़ का मामला दर्ज किया गया है। पंकज पटेल सहित अन्य अज्ञात लोगों को आरोपी बनाया गया है। हमले में 3-4 पुलिसकर्मियों को चोटें आई हैं। इसी दिन एक अन्य मामले में बिजली विभाग के एईएन लाखन सिंह ने पंकज पटेल पर जान से मारने की धमकी देने और कार्यालय में तोड़फोड़ का आरोप लगाया है। उन्होंने जिला कलेक्टर को पत्र लिखते हुए बताया कि अवैध ट्रांसफार्मर हटाने पर पंकज पटेल ने उन्हें धमकाया और जबरन ट्रांसफार्मर लगाने का दबाव बनाया। एईएन का कहना है कि पंकज पटेल अपने समर्थकों के साथ उनके कार्यालय पहुंचे, वहां तोड़फोड़ की, सीसीटीवी कैमरे तोड़े और कार्यालय में ताला लगा दिया। एक कर्मचारी की सूचना पर उन्होंने जान बचाने के लिए खुद को छिपा लिया और कोटपूतली से बाहर चले गए।

कृषि विभाग की योजनाओं की समीक्षा बैठक आयोजित, योजनाओं को समय पर पूरा करने के निर्देश

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। पंत कृषि भवन के सभा कक्ष में बुधवार को कृषि विभाग की योजनाओं की समीक्षा बैठक आयोजित की गई, जिसकी अध्यक्षता शासन सचिव कृषि एवं उद्यानिकी श्री राजन विशाल ने की। उन्होंने अधिकारियों को निर्देशित किया कि बजट घोषणाओं के अनुरूप सभी योजनाओं को तय समयसीमा में पूर्ण किया जाए। शासन सचिव ने कहा कि योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन में आ रही बाधाओं को दूर करते हुए उन्हें धरातल पर लागू किया जाए ताकि अधिक से अधिक किसान लाभान्वित हो सकें। उन्होंने किसानों की पैदावार बढ़ाने के लिए योजनाओं के व्यापक प्रचार-प्रसार पर भी जोर दिया। बैठक में फार्म पौंड, डिग्गी, सिंचाई पाइपलाइन, कृषि यंत्र, तारबंदी, गोवर्धन जैविक उर्वरक योजना, वर्मी कम्पोस्ट इकाई, बीज मिनिकिट वितरण सहित विभिन्न योजनाओं की विस्तृत समीक्षा की गई। राजन विशाल ने अधिकारियों को ई-फाइल निस्तारण की औसत अवधि को और कम करने के निर्देश दिए। साथ ही, वरिष्ठ अधिकारियों को अधीनस्थ कर्मचारियों के ई-फाइल डिस्पोजल समय की नियमित समीक्षा करने को कहा गया। इस अवसर पर कृषि आयुक्त चिन्मयी गोपाल, आत्मा निदेशक डॉ. सुवालाल जाट, वित्तीय सलाहकार अचलेश्वर मीना, अतिरिक्त निदेशक एस.एस. शेखावत, गोपाल लाल जाट, डॉ. हुशियार सिंह सहित विभिन्न योजना प्रभारी अधिकारी उपस्थित रहे।

श्री कर्ण नरेंद्र कृषि विश्वविद्यालय, जोबनेर में मनाया गया विश्व पुस्तक दिवस

जयपुर टाइम्स

जोबनेर(निसं.) विश्व पुस्तक दिवस के उपलक्ष्य में आज श्री कर्ण नरेंद्र कृषि विश्वविद्यालय, जोबनेर में विविध साहित्यिक एवं शैक्षणिक गतिविधियों का आयोजन किया गया। इस अवसर पर सेंट्रल लाइब्रेरी में पुस्तक प्रदर्शनी, वाचन सत्र, प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता और साहित्यिक संवाद जैसे आयोजन हुए, जिनमें छात्र छात्राओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

पढ़ाई के प्रति छात्रों की लगन

विशेष उल्लेखनीय तथ्य यह रहा कि विश्वविद्यालय की लाइब्रेरी का समय विद्यार्थियों की सुविधा को देखते हुए सुबह 7 बजे से शाम 7 बजे तक निर्धारित किया गया है। देखा गया कि सुबह 7 बजे ही सैकड़ों छात्र लाइब्रेरी पहुँचकर प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी में जुट जाते हैं, जो उनकी अध्ययनशीलता का प्रमाण है। सेंट्रल लाइब्रेरी में इस समय 54,363 से अधिक पुस्तकें उपलब्ध हैं। इसके अलावा, 10,000 से अधिक ई-बुक्स भी ऑनलाइन माध्यम से छात्रों को उपलब्ध कराई जा रही हैं। यहाँ RFID तकनीक का उपयोग किया गया है, जिससे छात्र स्वयं ही पुस्तकें इश्यू और रिटर्न कर सकते हैं – जिससे प्रक्रिया पूरी तरह स्वचालित, तेज़ और पारदर्शी बनी है। पुस्तकालय में 12 पैसे से लेकर 25,000 रुपये तक की मूल्य की पुस्तकें उपलब्ध हैं, जिससे यह हर वर्ग के छात्र के लिए उपयोगी है।

पुस्तक दिवस पर वक्ताओं की अभिव्यक्ति

कार्यक्रम के दौरान पुस्तकालयाध्यक्ष डॉ. एल. आर. यादव एवं सहायक पुस्तकालयाध्यक्ष डॉ. चरत लाल बैरवा ने पुस्तकों के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि पुस्तकें केवल ज्ञान का माध्यम नहीं, बल्कि व्यक्तित्व निर्माण की नींव हैं। प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में विद्यार्थियों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। प्रतियोगिता के अंत में पाँच विजेता छात्रों को पुरस्कार भी प्रदान किए गए।

पाली में अनोखा अभियानः ट्रक चालकों को चाय पिलाकर दी जा रही यातायात नियमों की जानकारी

जयपुर टाइम्स

पाली(निसं.)। जिले में सड़क दुर्घटनाओं को रोकने के लिए जिला प्रशासन और हृ॥द्ध ने मिलकर एक सराहनीय पहल की है। पाली के जाडन और सांडेराव टोल नाकों पर सुबह के समय भारी वाहन चालकों को चाय पिलाकर यातायात नियमों की जानकारी दी जा रही है। यह प्रयास विशेष रूप से उन ड्राइवरों को ध्यान में रखकर किया गया है, जो देर रात या सुबह-सुबह सफर करते हैं और नींद की झपकी से दुर्घटना का शिकार हो सकते हैं। हृ॥द्ध पाली-पिंडवाड़ा प्रोजेक्ट के हेड सतीश कुमार और रूट ऑपरेशन मैनेजर पांचूराम कुमावत ने बताया कि राष्ट्रीय राजमार्ग 62 और 162 पर सुबह 4 बजे से ट्रक ड्राइवरों के लिए मुफ्त चाय-पानी और मुंह धोने की सुविधा दी जा रही है। हाईवे पेट्रोलिंग टीम के माध्यम से चालकों को ट्रैफिक नियमों का पालन करने के लिए जागरूक किया जा रहा है सड़क सुरक्षा को लेकर जिला कलेक्टर एलएन मंत्री की अध्यक्षता में जिला सड़क सुरक्षा समिति की बैठक भी आयोजित की गई। बैठक में अवैध कट्स, पुलियाओं की स्थिति और निराश्रित पशुओं को हटाने जैसे मुद्दों पर चर्चा की गई। जिला कलेक्टर ने सभी संबंधित विभागों को निर्देश दिया कि दुर्घटनाओं की रोकथाम के लिए समन्वित और प्रभावी कदम उठाए जाएं। इस अवसर पर पुलिस अधीक्षक चुनाराम जाट, अतिरिक्त जिला कलेक्टर अश्विनी के. पंवार, नगर निगम आयुक्त नवीन भारद्वाज, पीडब्ल्यूडी एसई दिलीप परिहार, एआरटीओ गणपत पुनर, परिवहन विभाग और चिकित्सा विभाग के अधिकारी मौजूद रहे। जिले में स्कूलों और कॉलेजों में भी यातायात नियमों के प्रति जागरूकता फैलाने के लिए विविध कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। इस नवाचार के जरिए प्रशासन न केवल दुर्घटनाओं को रोकने का प्रयास कर रहा है, बल्कि मानव जीवन की रक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता दे रहा है।

चयनित किसानों को अपने-अपने विभागों की योजनाओं से पात्रतानुसार लाभान्वित करवाना सुनिश्चित करें-जिला कलक्टर

अलवर(निसं.)। जिला कलक्टर डॉ. आर्तिका शुक्ला की अध्यक्षता में बुधवार को मिनी सचिवालय स्थित कलक्ट्रेट सभागार में जिले के नवाचार 'प्रोजेक्ट समृद्ध किसान' की कार्ययोजना की समीक्षा बैठक आयोजित की गई। जिला कलक्टर ने निर्देश दिए कि जिला प्रशासन के नवाचार 'प्रोजेक्ट समृद्ध किसान' से संबंधित विभाग आपसी समन्वय स्थापित कर चयनित किसानों को अपने-अपने विभागों की योजनाओं से पात्रतानुसार लाभान्वित करवाना सुनिश्चित करें। उन्होंने कहा कि इस प्रोजेक्ट के तहत किसानों की आय को दुगना करने के लिए आय के विभिन्न स्रोतों से उन्हें जोडने के साथ-साथ केंद्र एवं राज्य सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं से किसानों को लाभान्वित करवाना है, ताकि वे समृद्ध किसान बन सकें। उन्होंने कृषि विभाग के संयुक्त निदेशक से किसानों के चयन के लिए आयोजित किए जा रहे कृषक सर्वे शिविरों का फीडबैक लेकर 15 मई तक प्रोजेक्ट के तहत किसानों का चयन करने के निर्देश दिए। उन्होंने सरस डेयरी के महाप्रबंधक एवं अग्रणी जिला बैंक के प्रबंधक को जिले के समस्त पात्र किसानों को डेयरी किसान क्रेडिट योजना से लाभानवित करवाने के निर्देश दिये। उन्होंने सरस डेयरी एवं केंद्रीय सहकारी बैंक के प्रबंधक को निर्देश देते हुए कहा कि डेयरी से संबद्ध सदस्य किसानों को गोपाल क्रेडिट कार्ड योजना से लक्ष्यानुसार शत-प्रतिशत रूप से जोडना सुनिश्चित करें। उन्होंने बताया कि सहकारिता विभाग की ओर से संचालित गोपाल क्रेडिट कार्ड योजना के तहत ग्रामीण क्षेत्रों के गोपालकों को एक लाख रुपये तक का अल्पकालीन ब्याजमुक्त ऋण प्रदान किया जाता है, जिसकी अवधि एक वर्ष होती है। इस ऋण का उपयोग पशु खरीदने, शेड निर्माण, चारा, उपकरण आदि खरीदने में कर सकता है। बैठक में कृषि विभाग के संयुक्त निदेशक पी.सी मीणा ने प्रोजेक्ट के बारे में विस्तार से जानकारी देते हुए बताया कि विभिन्न विभागों योजनाएं जिनमें तारबंदी, फार्म पॉन्ड एवं गोवर्धन जैविक उर्वरक, ड्रिप संयंत्र, मिनी स्प्रिंकलर, मल्चिंग, सोलर पंप, पॉलीहाउस व बगीचा, मुख्यमंत्री मंगल पशु बीमा योजना व कृत्रिम गर्भाधान, केटल शेड निर्माण, प्रधानमंत्री सूक्ष्म खाद्य उन्नयन योजना, प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना एवं डेयरी किसान क्रेडिट योजना, राज सरस सुरक्षा कवच बीमा योजना, सरस समूहिक आरोग्य योजना व सरस लाडली योजना, अल्पकालीन फसली ऋण एवं गोपालन क्रेडिट कार्ड योजना तथा प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना से चयनित पात्र किसानों को लाभान्वित करवाया जाएगा।

बाईक चोरी का आरोपी गिरफ्तार

जयपुर टाइम्स

सुजानगढ़(नि.सं.)। कोतवाली पुलिस ने मोटरसाइकिल व मोबाइल चोरी के आरोपी को गिरफ्तार किया है। सीआई बेगाराम मीणा ने बताया कि 16 अप्रेल को प्रीतम प्रजापत ने मोटरसाइकिल व मोबाइल चोरी की रिपोर्ट दर्ज करवाई थी। जिस पर आरोपी मालाराम पुत्र नराणाराम को चूरू के केन्द्रीय कारागार से गिरफ्तार किया गया। आरोपी की निशानदेही पर चोरीशुदा मोबाइल बरामद किया है और चोरी की गई मोटरसाइकिल जप्त की है। सीआई ने बताया कि आरोपी मालाराम से अन्य चोरियों के संबंध में पूछताछ की जा रही है।

यातायात मंत्री के नाम एसडीएम को ज्ञापन

जयपुर टाइम्स

सुजानगढ़(नि.सं.)। पुराने बस स्टेंड के व्यापारियों ने एक ज्ञापन उपखंड अधिकारी को यातायात मंत्री के नाम सौंपा है। संजय पारीक के नेतृत्व में सौंपे गए ज्ञापन में बताया गया है कि पुराने रेलवे बस स्टेंड से होकर सभी यात्री बसों को गुजरने से रोके जाने और बाईपास रोड़ से निकाले जाने के आदेश जिला कलक्टर ने पारित किए हैं। जिससे आम लोगों को काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है। इसलिए रेलवे बस स्टेंड से होकर गणेश मंदिर तक सवारी बसों को अनुमति दी जाए, ताकि यात्रियों को किसी प्रकार की दिक्कत का सामना नहीं करना पड़े। इस दौरान अनेक लोग मौजूद रहे। वहीं उपखंड अधिकारी ने मामले से उच्चाधिकारियों को अवगत करवाने का आश्वासन दिया।

विश्व पृथ्वी दिवस पर नेचर पार्क में किया पौधरोपण

जयपुर टाइम्स

चूरू(निस)। स्थानीय नेचर पार्क में विष्व पृथ्वी दिवस के उपलक्ष में मंगलवार को पौधरोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि उपवन संरक्षक वीरेंद्र सिंह रहें। उपवन संरक्षक वीरेंद्र सिंह ने बताया कि बढ़ते तापमान को कम करने के लिए पौधे लगाना अत्यधिक आवश्यक है। उन्होंने आमजन से अपील करते हुए कहा कि आगामी मानसून के समय में प्रत्येक व्यक्ति एक पौधा अवश्य लगाये, जिससे पर्यावरण को संतुलन किया जा सके और वन व वन्य जीवों का संरक्षण हो सके। उप वन संरक्षक ने बताया कि इस वर्ष विश्व पृथ्वी दिवस की थीम हमारी शक्ति हमारा ग्रह है। थीम की जानकारी देते हुए उन्होंने नवीनीकरण ऊर्जा के स्रोतों का अधिक से अधिक उपयोग पर बल दिया। इस अवसर पर क्षेत्रीय वन अधिकारी पवन कुमार शर्मा, दीपचंद यादव, घनश्याम सिंह व सहायक वनपाल कृष्णा व छात्र-छात्राएं उपस्थित रहीं।

दिव्य क्लब ने परिंडे लगाकर ली देखभाल की जिम्मेदारी

जयपुर टाइम्स

चूरू(निस)। दिव्य क्लब की ओर से बुधवार को इन्द्रमणी पार्क में अत्यधिक गर्मी को देखते हुए पक्षियों के लिए परिंडे लगायें। क्लब प्रवक्ता रूपम माथुर ने बताया कि पक्षियों को गर्मी से राहत देने के लिए बुधवार को दिव्य क्लब की सदस्य रमा नोवाल के सौजन्य से इन्द्रमणी पार्क में 15 परिंडे लगाए गए और उनकी देखभाल की जिम्मेदारी ली। इस अवसर पर क्लब अध्यक्ष ललिता टावरी, सचिव विमलेश भालेरीवाला, कोषाध्यक्ष निर्मला मण्डावेवाला, स्नेहलता अग्रवाल, विजयलक्ष्मी पारीक, अर्चना मिश्र, माया जोशी, रेखा सोनी सहित क्लब की अनेक पदाधिकारी मौजूद रही।

सशक्त पंचायतों से ही बनेगा विकसित राष्ट्र

रमेश सर्राफ धमोरा

भारत गांवो का देश है। यहां की बहुसंख्यक आबादी आज भी गांवों में रहती है। भारत के गांव ही देश की अर्थव्यवस्था की मुख्य धूरी है। इसीलिए कहा जाता है कि जब तक देश कि ग्रामीण अर्थव्यवस्था मजबूत नहीं होगी तब तक भारत विकसित राष्ट्र नहीं बन पाएगा। गांव में सुशासन स्थापित करने के लिए ही ग्राम पंचायत की स्थापना की गई थी। हमारे देश के नेताओं को ग्रामीण पृष्ठभूमि का पूरा ज्ञान था। इसलिए उन्होंने गांव के महत्व को समझकर ग्रामीण क्षेत्र के सर्वांगीण विकास के लिए पंचायती राज व्यवस्था की स्थापना की थी। उनको पता था कि जब तक गांव मजबूत नहीं होंगे तब तक देश मजबूत नहीं होगा। गांव को मजबूत करने के लिए यहां मूलभूत सुविधाएं उपलब्ध करवाना सबसे महत्वपूर्ण कार्य था।

आजादी के समय भारत के गांव बहुत पिछड़े हुए थे। देश के अधिकांश गांवों में मूलभूत सुविधाओं के नाम पर कुछ नहीं था। मगर आज गांवों की व्यवस्था भी बहुत कुछ बदल गई है। आज देश के बहुत से गांव में शहरों की भांति सुविधा देखने को मिल रही है। लेकिन आज भी देश में हजारों ऐसे गांव है जहां पर्याप्त मूलभूत सुविधाएं उपलब्ध नहीं हो पाई है। जब तक सरकार देश के सभी गांव में समान रूप से सुविधा उपलब्ध नहीं करवा पाएगी तब तक देश विकास की दौड़ में पूरी गति से शामिल नहीं हो पाएगा। हम आज पंचायती राज दिवस मना रहे हैं। हमारे देश में 2 अक्टूबर 1959 को पहली बार पंचायती राज व्यवस्था लागू की गई थी। 1993 में त्रिस्तरीय पंचायती राज व्यवस्था को संवैधानिक दर्जा प्राप्त हुआ था।

राष्ट्रीय पंचायती राज दिवस भारत में बहुत महत्व रखता है क्योंकि यह एक संवैधानिक इकाई के रूप में पंचायती राज प्रणाली की स्थापना का प्रतीक है। पंचायती राज प्रणाली भारत की लोकतांत्रिक प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, जिसका उद्देश्य स्थानीय स्तर पर सत्ता और संसाधनों का विकेंद्रीकरण करना और सहभागी लोकतंत्र, सामाजिक न्याय और समावेशी विकास को बढ़ावा देना है। पंचायती राज प्रणाली जमीनी स्तर पर लोगों को निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में भाग लेने और उनके विकास का स्वामित्व लेने में सक्षम बनाती है, जो स्व-शासन और जवाबदेही को बढ़ावा देने में मदद करती है।

भारत गांवों का देश माना जाता है और गांव के विकास में पंचायतों की सबसे महत्वपूर्ण भूमिका होती है। चूंकि ग्राम पंचायतों के पंच व सरपंच सीधे ग्रामीणों द्वारा चुने जाते हैं। इसलिए निर्वाचित जनप्रतिनिधियों का अपनी ग्राम पंचायत क्षेत्र के लोगों से सीधा संपर्क रहता है। ग्रामवासी भी अपनी समस्याएं सीधे पंचायत तक पहुंचा सकतें है। मगर ग्राम पंचायतों की स्थापना के इतने वर्षों के बाद भी अभी तक ग्राम पंचायते वास्तविक रूप में सशक्त नहीं हो पाई है। ग्राम पंचायतें पूरी तरह राज्य सरकारों पर निर्भर है। कहने को तो ग्राम पंचायतों को बहुत सारे अधिकार प्रदान किए गए हैं। मगर आज तक भी अपने अधिकारों का ग्राम पंचायतें प्रयोग नहीं कर पाती है। आज भी देश की अधिकांश ग्राम पंचायतों में सरकारी अधिकारी, कर्मचारी प्रभावी रहते हैं।

ग्राम पंचायतों में आरक्षण व्यवस्था लागू होने के कारण बड़ी संख्या में महिलाएं पंच, सरपंच निर्वाचित होकर आती है। उनमें से कई महिलाएं तो वास्तव में बहुत अधिक पढ़ी लिखी होने के कारण पूरी जानकारी रखती है। इस कारण वह अपने अधिकारों का पूरा प्रयोग कर लेती है। मगर अधिकांशत: आरक्षण के कारण गांवो में प्रभावी नेता अपने परिवार की किसी महिला को पंच, सरपंच बनवा देते हैं। फिर उनके स्थान पर खुद नेतागिरी करते हैं। वहां की निर्वाचित महिलाएं मात्र कागजी जनप्रतिनिधि बन कर रह जाती है। बहुत से स्थानों पर तो महिला सरपंचों के हस्ताक्षर भी उनके स्थान पर काम करने वाले उनके परिजनों द्वारा ही कर दिए जाते हैं। ऐसी स्थिति में पंचायत राज व्यवस्था के मजबूत होने की तो कल्पना भी नहीं की जा सकती है। सरकार बार-बार परिपत्र जारी कर सरपंच के प्रतिनिधियों को पंचायतों के कार्यों में हस्तक्षेप करने से मना करती है। मगर धरातल में सरकार के परिपत्र मात्र कागजी बन कर रह जाते हैं। देश में आज चाहे ग्राम पंचायत हो, पंचायत समिति हो या जिला परिषद हो। जहां भी महिला जनप्रतिनिधि निर्वाचित होकर आती है। उनके स्थान पर उनके परिजन ही कार्य करते देखे जा सकते हैं। सभी प्रदेशों की राज्य सरकारों को कड़ाई से इस पर रोक लगाई जानी चाहिए ताकि महिलाओं को भी अपने पद पर काम करने का मौका मिल सके। ग्रामीण क्षेत्रों में अक्सर देखने में आता है कि निर्वाचित पंच, सरपंच पंचायतों की बैठक में घूंघट निकाल कर बैठते हैं। क्योंकि वहां उनके ससुराल वाले बड़े परिजन की बैठे रहते हैं। आज देश शिक्षा के क्षेत्र में बहुत तरक्की कर रहा है। महिलाएं हर क्षेत्र में अपने काम से धूम मचा रही है। अब तो सेना को भी महिलाओं के लिए पूरी तरह खोल दिया गया है। ऐसे में जनप्रतिनिधियों का घूंघट निकाल कर बैठना सभ्य समाज के लिए किसी दुखद घटना से कम नहीं है। सरकार को ऐसी घटनाओं पर भी सख्ती बरतनी चाहिये। पंचायती राज व्यवस्था के माध्यम से महिलाओं का जीवन बहुत प्रभावित हुआ है। सही मायने में पंचायती राज ने महिलाओं को समाज का एक विशेष सदस्य बना दिया है। लाखों महिलाऐं सार्वजनिक जीवन में आयी हैं। लेकिन अधिकतर निर्वाचित महिलाओं को निर्वाचक सदस्य होने के विषय में पूर्ण जानकारी भी नहीं है। अपने अधिकारों के प्रति जागरूकता की कमी के कारण वह प्रभावी नहीं हो पाती हैं। तथा उन्हे यह भी ज्ञान नहीं होता है कि वह एक कुशल प्रशासक भी हो सकती हैं। घूंघट में रहना लोकतंत्र और औरत जाति के लिए एक चुनौती है। समय के साथ बहुत कुछ बदल गया है लेकिन औरतो के प्रति लोगों की सोच अभी तक नहीं बदली है। राजनीति घूंघट में रह कर नहीं हो सकती। इसके लिए बेबाक होना पड़ता है। जब औरतें किसी कार्यक्रम में मंच पर घूंघट निकाल कर बैठेंगी तो वहां के हालात बड़े अजीबोगरीब हो जाते हैं। औरतों को अपने से कमतर मानने की सोच के चलते ही उन के चेहरे से परदा नहीं हट पा रहा है। लोकतंत्र की सबसे छोटी संसद पंचायती राज में हालांकि महिलाएं 50 फीसदी सीटों पर काबिज हैं। लेकिन इन महिला जनप्रतिनिधियों में से कई पढ़ी-लिखी होने के बाद भी ग्राम पंचायत की मिटिंगों में घूंघट में बैठी रहकर जुबान ही नहीं खोलतीं है। क्या ऐसी स्थिति के लिए ही पंचायत राज को मजबूती देने का निर्णय किया गया था। क्या इक्कीसवीं सदी में प्रवेश करने के बाद भी हमारे देश की महिला जनप्रतिनिधियो को घूंघट की ओट में ही जीने को विवश होना पड़ेगा। यह एक बड़ा सवाल है जिसे ना सिर्फ प्रशासनिक अधिकारियो को गंभीरता से लेना पड़ेगा बल्कि राजनेताओ व प्रशासनिक अधिकारियों को भी सरपंच पतियो के बढ़ते हस्तक्षेप पर प्रभावी अंकुश लगाना होगा। औरतों के सिर से घूंघट हटाने के लिए लड़कियों के मातापिता को आगे आना होगा। उन्हें अपनी बेटियों की शादी उसी परिवार में करनी चाहिए जहां घूंघट का बंधन नहीं हो। घूंघट में रह कर औरतें अपनी जिंदगी के तानेबाने को कैसे बुन सकती हैं? घूंघट में रह कर राजनीति या समाजसेवा नहीं की जा सकती। आज के समय में ग्राम पंचायते पैसे कमाने का जरिया बन गई है। पंचायत चुनाव में बड़ी मात्रा में पैसे खर्च होते हैं। चुनाव जीतने के बाद निर्वाचित सरपंच द्वारा जनसेवा के बजाय पैसे कमाने पर अधिक ध्यान दिया जाता है। इस कारण निर्वाचित जनप्रतिनिधि ग्राम पंचायत के सामाजिक सरोकार के कामों को भूल कर निर्माण कामों में व्यस्त हो जाते हैं। अपनी पंचायत में अधिक से अधिक निर्माण कार्य स्वीकृत करवाने के लिए सरपंच विधायकों, सांसदों के चक्कर काटते रहते हैं। जिस कारण वह उनके दबाव में काम करते हैं। पंचायती राज व्यवस्था को सही मायने में सशक्त बनाने के लिए सरकार को सभी प्रकार के निर्माण कार्य ग्राम पंचायतों से हटाकर संबंधित विभागों से करवाया जाना चाहिए ताकि सरपंच जनता से जुड़ कर उनकी समस्याओं का सही मायने में समाधान करवा सकें।

ये लेखक के निजी विचार हैं

चिनगारी का खेल बुरा होता है !

सुनील कुमार महला,

फ्रीलांस राइटर, कालमिस्ट व युवा साहित्यकार, उत्तराखंड।

हाल ही में पहलगाम आतंकी हमले में विदेशी नागरिकों समेत 26 की मौत हो गई, और मरने वालों में अधिकांश पुरुष हैं। वास्तव में यह बहुत ही दुखद व अति निंदनीय घटना है।यह हमला ऐसे समय हुआ है, जब करीब सवा दो महीने बाद अमरनाथ यात्रा होनी है।कहना ग़लत नहीं होगा कि इससे आतंक का घिनौना चेहरा दुनिया के सामने आया है। यह 2019 के पुलवामा हमले के बाद घाटी में सबसे घातक व बड़ा हमला है।हमले के बाद क्षेत्र में ऑपरेशन तेजी से चलाया जा रहा है और पर्यटकों को कश्मीर से जल्द से जल्द निकालने की कोशिश की जा रही है। सहायता के लिए इमरजेंसी नंबर भी जारी किए गए हैं।कितनी बड़ी बात है कि आतंकियों ने टूरिस्ट्स को निशाना बनाया और गोलीबारी की। आतंकी घटना के बाद गृहमंत्री अमित शाह श्रीनगर पहुंचे, और सऊदी दौरा बीच में ही छोड़कर स्वयं प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी भी दिल्ली पहुंच चुके हैं और दिल्ली पहुंचते ही उन्होंने एयरपोर्ट पर ही पहलगाम टेरर अटैक पर बैठक की है। बताया जा रहा है कि कैबिनेट कमेटी ऑन सिक?योरिटी की बैठक भी बुलाई गई है। इससे पहले गृहमंत्री अमित शाह ने आईबी चीफ, जम?मू-कश?मीर के डीजी और सेना व सीआरपीएफ के आला अधिकारियों के साथ एक हाई-लेवल मीटिंग भी की और पीएम मोदी इस मीटिंग में वीडियो कॉन्?फ्रेंसिंग से उपलब?ध रहे। जम?मू-कश?मीर के सीएम उमर अब?दुल?ला भी इस घटना को लेकर काफी गंभीर हैं।बताया जा रहा है कि कुल चार आतंकियों ने इस आतंकी वारदात को अंजाम दिया, जिसमें से तीन पाकिस?तानी और एक लोकल कश?मीरी हैं। मीडिया में आई रिपोर्ट्स के मुताबिक जब दोपहर को यह वारदात हुई तब सैलानी वहां घुड़सवारी कर रहे थे।तभी आतंकी वहां पहुंचे और उन?होंने पंजाबी में टूरिस?ट से उनका मजहब पूछा और पहचान स?थापित होने के बाद लोगों को मौत के घाट उतारा गया। दरअसल,आतंकी हमले के बाद सामने आए वीडियो में इस बात की पुष्टि हुई है कि हथियारबंद हमलावरों ने नाम पूछकर गोली मारी।जानकारी के अनुसार इस दौरान आतंकियों द्वारा करीब 50 राउड फायरिंग की गई। गौरतलब है कि आतंकी सेना और पुलिस जैसी वर्दी में थे और सभी के पास एके-47 और दूसरे हथियार थे।बहरहाल, यहां यह कहना ग़लत नहीं होगा कि इसे कश्मीर घाटी में 'जिहादी आतंक' का अत्यंत घिनौना बर्बर चेहरा ही कहा जा सकता है। वास्तव में,आतंकियों ने पहलगाम में निर्दोष-निहत्थे पर्यटकों की जिस तरह पहचान पता करके(नाम व मजहब पूछकर) गोलियां बरसाईं, उससे तो यही पता चलता है कि वे केवल कश्मीर घाटी में खौफ ही नहीं पैदा करना चाहते थे, बल्कि बड़ी संख्या में लोगों का खून बहाकर दुनिया का ध्यान भी खींचना चाहते थे। आतंकी धर्म पूछकर गोली मार रहे हैं और यह बात कही जाती है कि आतंकवाद और आतंकियों का कोई धर्म नहीं होता ? आतंकियों ने ऐसे समय में पर्यटकों को निशाना बनाया, जब अमेरिकी उपराष्ट्रपति भारत में हैं और भारतीय प्रधानमंत्री सऊदी अरब में। वास्तव में यह हमला मानव हीनता की पराकाष्ठा ही कहा जा सकता है, क्यों कि आतंकियों ने उन पर्यटकों को निशाना बनाया, जो कश्मीरियों को पर्यटन के रूप में किसी न किसी रूप में सहारा देने कश्मीर गये थे। निश्चित ही इस आतंकी हमले का असर वहां के पर्यटन व दैनिक जीवन पर पड़ेगा, क्यों कि हमले के बाद घाटी में डर व खौफ का माहौल पैदा हो गया है। कहना ग़लत नहीं होगा कि हमले के बाद पूरे देश में आक्रोश की बड़ी लहर है। वास्तव में, अनुच्छेद 370 हटाए जाने के बाद पहली बार कश्मीर में इतना बड़ा आतंकी हमला हुआ है। कहना ग़लत नहीं होगा कि आतंकवाद और आतंकियों को करारा जवाब दिया जाना आवश्यक ही नहीं, अनिवार्य हो गया है। जिन आतंकियों ने हमले को अंजाम दिया है, उनमें से तीन पाकिस्तानी बताये जा रहे हैं, ऐसे में आज जरूरत इस बात की है कि भारत पाकिस्तान को इस हमले का मुंहतोड़ व करारा जवाब दे। आज पाकिस्तान आर्थिक रूप से बदहाली झेल रहा है और उस पर बहुत पहले से आतंकवाद और आतंकियों का ठप्पा लग चुका है। पाकिस्तान की यह आदत रही है कि वह भारत के खिलाफ छद्म युद्ध का खेल खेलता रहता है। एक तरफ़ तो वह भारत से शांति, सौहार्द और भाईचारे की बात करता नज़र आता है तो दूसरी तरफ आतंकवाद का घिनौना खेल खेलता रहता है। यहां पाठकों को बताता चलूं कि कुछ समय पहले ही पाकिस्तान की राजधानी इस्लामाबाद में ओवरसीज पाकिस्तानियों के पहले सालाना सम्मेलन में पाकिस्तान के आर्मी चीफ जनरल असीम मुनीर ने भारत, हिंदू धर्म, दो-राष्ट्र सिद्धांत, कश्मीर और गाजा जैसे मामलों पर बयान दिए थे और मुनीर के ये बयान न केवल विवादित थे, बल्कि विभाजनकारी और नफरत फैलाने वाले भी थे। गौरतलब है कि पाकिस्तान के सेना प्रमुख जनरल असीम मुनीर ने कुछ समय पहले ही कश्मीर मुद्दे को हवा देते हुए इसे अपने देश की 'गले की नस' बताया था और यह बात कही थी कि इस्लामाबाद 'इसे नहीं भूलेगा।' उल्लेखनीय है कि पिछले साल यानी कि फरवरी 2024 में भी जनरल मुनीर ने सेना की एक बैठक को संबोधित करते हुए यह कहा था कि 'भारत द्वारा अंतरराष्ट्रीय कानूनों का खुलेआम उल्लंघन किया जा रहा है और उसका असली चेहरा दुनिया के सामने आना चाहिए।'पाठकों को यहां यह भी जानकारी देना चाहूंगा कि मई 2024 में भी भारत को अपना 'कट्टर-प्रतिद्वंद्वी' बताते हुए, पाकिस्तान के सेना प्रमुख जनरल सैयद असीम मुनीर ने कश्मीर को इस्लामाबाद के 'नैतिक, राजनीतिक और कूटनीतिक समर्थन' जारी रखने का वादा किया था। कहना ग़लत नहीं होगा कि कट्टरपंथियों को जनरल मुनीर की बातों से कहीं न कहीं ताकत मिली होगी।सच तो यह है कि जनरल मुनीर के बयानों से आतंकियों का दुस्साहस निश्चित रूप से बढ़ा है, और इसका जीता-जागता प्रमाण कश्मीर में हुआ आतंकी हमला है। यहां यह भी कहना चाहूंगा कि बांग्लादेश में तख्तापलट और वहां भारत विरोधी भावनाओं के उभार के बाद पाकिस्तान के मंसूबे और अधिक बढ़ गये हैं कि वह भारत में आतंकवाद फैलाए और आतंकियों और आतंकवाद के ज़रिए अपना उल्लू सीधा करे। पाकिस्तान को यह उम्मीद है कि अब उसे बांग्लादेश का साथ भी मिल जाएगा। गौरतलब है कि अमेरिका, पाकिस्तान से नाराज़ है और इसका पता हमें इस बात से चलता है कि कुछ समय पहले ही अमेरिका ने आतंकी खतरों के कारण अपने नागरिकों को पाकिस्तान की यात्रा न करने के लिए एक एडवायजरी जारी की थी। दरअसल, यह चेतावनी/एडवायजरी अमेरिकी विदेश विभाग द्वारा जारी की गई थी, जिसमें बलूचिस्तान और खैबर पख्तूनख्वा जैसे क्षेत्रों में सुरक्षा चिंताओं को उजागर किया गया था, जहां चरमपंथी समूह सक्रिय हैं और लगातार हमलों को अंज़ाम दे रहे हैं।अब चीन के साथ संबंध मजबूत करके पाकिस्तान अमरीका की कमी को पूरी करने में लगा हुआ है। दरअसल, पाकिस्तान के मंसूबे ठीक नहीं है और वह कश्मीर घाटी में आतंकवाद फैलाकर कश्मीर हथियाने का सपना देखता रहा है, लेकिन पाकिस्तान का यह सपना कभी भी पूरा नहीं होने वाला है।पाकिस्तान वर्ष 1971 का बदला भी भारत से लेना चाहता है और वह भारत में रह-रहकर अशांति फैलाने की नए सिरे से कोशिश करता रहता है। अब पहलगाम हमले के बाद यह पूरी तरह से साफ हो गया है कि पाकिस्तान, भारत में आतंकी हमलों के साथ धार्मिक अलगाव की भावना भी पैदा करना चाहता है। भारत को यह चाहिए कि वह पाकिस्तान की नापाक व कुटिल हरकतों को समझे और अमन-चैन को प्राथमिकता दें। देश के आम नागरिकों को भी ऐसे समय में शांति,संयम से काम लेना होगा और इस बात के प्रयास करने होंगे कि समाज और देश का माहौल न बिगड़ने पाए। निश्चित रूप से सरकार आतंकवाद और आतंकियों के खिलाफ कड़ी से कड़ी कार्रवाई करेगी, इसमें कोई दोराय नहीं है क्यों कि आतंकवाद और आतंकियों के खिलाफ हमारे देश की नीति 'जीरो टोलरेंस'(शून्य सहनशीलता) की रही है। आज हमारे देश की विभिन्न सुरक्षा एजेंसियां चौकस व सजग हैं और आतंकियों/आतंकवाद को मुंहतोड़ जवाब देने के लिए प्रतिबद्ध हैं। हाल फिलहाल, हमारे देश के गृहमंत्री अमित शाह पूरी स्थिति पर निगाह रखे हुए है और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी फुल एक्शन पर हैं।प्रधानमंत्री मोदी ने यह संकल्प जताया है कि हमले के दोषियों को बख्शा नहीं जाएगा। वास्तव में, इस संवेदनशील मौके पर सभी राजनीतिक दलों को एकजुटता दिखाने की जरूरत है। हमें यह चाहिए कि हम पाकिस्तान के मंसूबों को विफल करने और उसे कड़ा जवाब देने की रणनीति की दिशा में एकजुटता से काम करें। वास्तव में हमें आतंकवाद और आतंकियों से लड़ने का संकल्प लेने के साथ ही उसे पूरा करने की ठोस रणनीतियां बनानी होंगी और इस पर पूरी तन्मयता और ईमानदारी से काम करना होगा। आज पाकिस्तान सुलगते बलूचिस्तान से पूरी दुनिया का ध्यान हटाना चाहता है और उसे यह बिलकुल भी रास नहीं आ रहा है कि कश्मीर में 370 हटाये जाने के बाद स्थितियां तेजी से सामान्य होती चलीं जा रही हैं। कहना ग़लत नहीं कि पाकिस्तान भरोसे के लायक देश नहीं है और उसका मकसद भारत में आतंकवाद फैलाना है। अंत में अटल बिहारी वाजपेई जी के शब्दों में यही कहना चाहूंगा कि -'एक नहीं दो नहीं करो बीसों समझौते, पर स्वतन्त्र भारत का मस्तक नहीं झुकेगा।अगणित बलिदानों से अर्जित यह स्वतन्त्रता, अंश्रु स्वेद शोणित से सिंचित यह स्वतन्त्रता।त्याग तेज तपबल से रक्षित यह स्वतन्त्रता, दु:खी मनुजता के हित अर्पित यह स्वतन्त्रता। इसे मिटाने की साजिश करने वालों से कह दो, चिनगारी का खेल बुरा होता है औरों के घर आग लगाने का जो सपना, वो अपने ही घर में सदा खरा होता है।'

ये लेखक के निजी विचार हैं

पहलगाम की चीखें

जब बर्फ़ीली घाटी में खून बहा,
तब दिल्ली में सिर्फ़ ट्वीट हुआ।
गोलियाँ चलीं थी सरहद पार से,
पर बहस चली–"गलती किसकी है सरकार से?"
जो लड़ रहे थे जान पे खेलकर,
उनकी कुर्बानी दब गई मेल में।
और जो बैठे थे एयरकंडीशन रूम में,
लिखने लगे बयान–"मोदी है क़सूरवार इसमें।"
कब समझोगे, ये दुश्मन बाहर है,
जो मज़हब की आड़ में कत्लेआम करता है।
1400 सालों से जो आग सुलगा रहा,
उसका नाम लेने से भी डर लगता है क्या?
मोदी नहीं, वो किताबें दोषी हैं,
जो नफ़रत की जुबान बोलती हैं।
जो कहती हैं, 'काफ़िर को खत्म करो,'
और तुम कहते हो, 'सेक्युलर रहो।'
किसी ने कहा–"पहले जाति देखो,"
किसी ने कहा–"धर्म ना पूछो।"
पर जब आतंकी आया-च-47 लिए,
उसने सीधा सीने में गोली पूछी–"हिन्दू हो या नहीं?"
क्या यही है तुम्हारी मानवता की परिभाषा?
क्या यही है तुम्हारी आज़ादी की भाषा?
जो देश के वीरों को शर्मिंदा करे,
और आतंकी सोच को गले लगाए, वो
बुद्धिजीवी नहीं, गद्दार कहे जाए।
मोदी को कोसने से पहले सोचो,
क्या तुमने भी देश के लिए कुछ किया है?
जिसने जवाब दिया बालाकोट से,
उसके इरादे पर शक करना भी गुनाह है।
पहलगाम रो रहा है, सुनो उसकी सिसकी,
ये कायरता नहीं, ये साजिश है जिसकी।
एकजुट होओ, मज़हब से ऊपर उठकर,
वरना अगली चीख़ तुम्हारे घर से उठेगी।

प्रियंका सौरभ

सोशल मीडिया के अंदरूनी खतरे

देश में कई राज्यों में ऐसे दंगे-फसाद हो चुके हैं जिसमें इसी सोशल मीडिया की सबसे महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। कभी मुसलमानों पर देश के किसी भाग में होने वाले अत्याचारों को कश्मीर में सोशल मीडिया के माध्यम से प्रसारित कर वहां के लोगों में उत्तेजना पैदा करने की कोशिश की जाती है। बाबरी मस्जिद विध्वंस का वीडियो कश्मीर में खूब चलाया व दिखाया जाता है। इसी प्रकार पाकिस्तान व बांग्लादेश में अल्पसंख्यक हिंदुओं पर होने वाले जुल्म का वीडियो भारत में प्रसारित कर यहां सांप्रदायिक सद्भाव बिगाड़ने की कोशिश की जाती है। कभी गोकशी की किसी दूसरे देश का वीडियो या चित्र भारत में प्रसारित कर गोभक्तों में गुस्सा पैदा करने की कोशिश की जाती है तो कभी मस्जिदों, दरगाहों या सिख समुदाय से जुड़ी कोई उत्तेजना पैदा करने वाली फोटो शेयर कर आम जनता को बरगलाने का प्रयास किया जाता है।हमारे देश की जनता कितनी सीधी व भोली-भाली है यह बताने या समझाने की जरूरत नहीं है। हमारे देश की एक-दूसरे पर भरोसा करने वाली...

बाकी विश्व के साथ-साथ भारत में भी कंप्यूटर-इंटरनेट क्रांति का युग चल रहा है। और इस युग में इंटरनेट के माध्यम से सोशल मीडिया आम लोगों की आवाज बुलंद करने में सबसे महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। इसमें कोई शक नहीं कि इसी सोशल मीडिया के माध्यम से पूरे विश्व में दशकों से बिछड़े करोड़ों लोग एक-दूसरे की सफलतापूर्वक तलाश कर उनसे संपर्क कर चुके हैं। दूरदराज के ऐसे समाचार, जिनका जल्दी अपने जिला मुख्यालय तक पहुंच पाना संभव नहीं हो पाता था, वे अब आनन-फानन में पूरे विश्व में किसी भी कोने में पहुंचाए जा सकते हैं। निश्चित रूप से इंटरनेट व इसके माध्यम से चलने वाली सोशल नेटवर्किंग साइट्स पूरी दुनिया के लिए ज्ञान तथा सुविधा का अब तक का सबसे बड़ा माध्यम साबित हो रही हैं। पर तस्वीर का दूसरा पहलू भी है। सोशल मीडिया नेटवर्किंग साइट्स को कुछ असामाजिक तत्त्वों व नकारात्मक सोच रखने वालों ने अफवाह फैलाने, दहशत फैलाने, ठगी, धोखाधड़ी आदि का माध्यम भी बना लिया है। आज जहां गूगल, फेसबुक, वाट्सएप, टवीटर, इंस्टाग्राम जैसे कई और नेटवर्क पूरी दुनिया को एक-दूसरे से पलक झपकते ही जोड़ने की क्षमता रखते हैं वहीं इन्हीं के माध्यम से असामाजिक तत्त्व फर्जी आइडी बना कर इस आभासी संसार में लोगों से अलग-अलग पहचान के साथ मित्रता गांठ कर कभी उनके जीवन से खिलवाड़ करने की कोशिश करते हैं, कभी शादी-विवाह का झांसा देकर दुराचार करने की खबरें इसी माध्यम की बदौलत सुनाई देती हैं। कभी अपहरण की घटनाएं इन्हीं वेबसाइट्स के द्वारा होती देखी जाती हैं। कभी किसी को लालच के जाल में फंसा कर उससे पैसे ऐंठ लिये जाते हैं तो कभी-कभी किसी का पूरा बैंक एकाउंट ही खाली कर दिया जाता है।

पिछले दिनों भारत में एक नई कंपनी पेटीएम के नाम से बाजार में उतरी। इस कंपनी को शुरुआती दौर में ही कुछ शरारती तत्त्वों ने चूना लगा दिया। और पेटीएम के ही पैसे उड़ा ले गए। दूसरी ओर, कुछ ठगों द्वारा भी पेटीएम का इस्तेमाल कर लोगों को अपने झांसे में लेकर उनसे इसी माध्यम से अपने पेटीएम एकाउंट में पैसे डलवाए जाने की भी खबरें हैं। गोया जनता की सुविधा तथा नगद लेन-देन से बचने के लिए बनाई गई इस एप को भी ठगों ने अपनी मर्जी के अनुसार अपने फायदे का माध्यम बना डाला।पर सोशल मीडिया अथवा इंटरनेट की दूसरी कई सामाजिक वेबसाइट्स के माध्यम से होने वाली किसी भी प्रकार की ठगी, धोखा या अपहरण, फिरौती या जालसाजी जैसी घटनाएं तो फिर भी किसी हद तक कोई एक व्यक्ति या परिवार सहन कर सकता है। मगर बड़े अफसोस की बात है कि यह माध्यम अब हमारे देश में सांप्रदायिकता फैलाने, दंगे-फसाद करवाने, जातिवाद को हवा देने तथा समाज के अनेकता में एकता रखने वाले उस ताने-बाने को तोड़ने में लगा है जो हमारे देश की सदियों पुरानी पहचान रहा है। देश में कई राज्यों में ऐसे दंगे-फसाद हो चुके हैं जिसमें इसी सोशल मीडिया की सबसे महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। कभी मुसलमानों पर देश के

किसी भाग में होने वाले अत्याचारों को कश्मीर में सोशल मीडिया के माध्यम से प्रसारित कर वहां के लोगों में उत्तेजना पैदा करने की कोशिश की जाती है।

बाबरी मस्जिद विध्वंस का वीडियो कश्मीर में खूब चलाया व दिखाया जाता है। इसी प्रकार पाकिस्तान व बांग्लादेश में अल्पसंख्यक हिंदुओं पर होने वाले जुल्म का वीडियो भारत में प्रसारित कर यहां सांप्रदायिक सद्भाव बिगाड़ने की कोशिश की जाती है। कभी गोकशी की किसी दूसरे देश का वीडियो या चित्र भारत में प्रसारित कर गोभक्तों में गुस्सा पैदा करने की कोशिश की जाती है तो कभी मस्जिदों, दरगाहों या सिख समुदाय से जुड़ी कोई उत्तेजना पैदा करने वाली फोटो शेयर कर आम जनता को बरगलाने का प्रयास किया जाता है।हमारे देश की जनता कितनी सीधी व भोली-भाली है यह बताने या समझाने की जरूरत नहीं है। हमारे देश की एक-दूसरे पर भरोसा करने वाली जनता को आज से नहीं सदियों से लूटने वाले लोग सांप-नेवले की लड़ाई दिखा कर भीड़ इकट्ठा कर उनके हाथों कभी कोई तेल बेच जाते हैं तो कभी जादू-टोना। सांडे के तेल बेचने के नाम पर लोगों का झुंड लगा दिखाई देता है। बंदर-भालू, सांप, आदि के नाम पर भीड़ इकट्ठा कर मदारी द्वारा लोगों को सामान बेचना यहां के चतुर लोगों की पुरानी कला है। ऐसे में यदि राजनीतिक लोग जनता को बरगला कर या कोई सब्जबाग दिखा कर सत्ता में आ जाएं तो अधिक आश्चर्य नहीं किया जाना चाहिए। ये बातें इस निष्कर्ष पर पहुंचने के लिए काफी हैं कि हमारे देश की अधिकांश जनता आमतौर पर बिना किसी सत्यापन के अथवा बिना किसी प्रमाण के लोगों की बातों पर विश्वास कर लेती है, और उस कहावत को चरितार्थ करती दिखाई देती है कि 'कौवा कान ले गया तो अपना कान देखने के बजाय कौवे के पीछे भाग जाती हैं'। जाहिर है, हमारे देश की जनता के इसी साधारण व सरल स्वभाव का लाभ शरारती तथा असामाजिक तत्त्व उठाते हैं जिन्हें दंगे-फसाद, खूंरेजी, सांप्रदायिकता तथा जातिवाद की दुर्भावना फैलने से लाभ हासिल होता है। या वे किसी के मोहरे बन कर ऐसा गंदा खेल खेलते हैं।आजकल हमारे देश में इसी सोशल मीडिया का प्रयोग राजनीतिक या वैचारिक मतभेद रखने वाले लोगों के विरुद्ध जबर्दस्त तरीके से किया जा रहा है। एक पक्ष के पैरोकार अपने पक्ष की आलोचना या उसके विरुद्ध किसी प्रकार का कोई तर्क-वितर्क सुनने को तैयार नहीं हैं। परिणामस्वरूप कोई भी व्यक्ति यदि अपनी विचारधारा या अपने पक्ष की कोई बात रखता है या दूसरे की आलोचना करता है तो उसे इसी सोशल नेटवर्किंग साइट्स के माध्यम से ही भद्दी-भद्दी गालियां दी जाती हैं तथा डराने-धमकाने व अपमानित करने की कोशिश की जाती है। सोशल मीडिया के इसी हमले का शिकार भारत के शहीद कैप्टन मंदीप सिंह की बेटी गुरमेहर कौर से लेकर पत्रकार साक्षी जोशी तक हो चुकी हैं। साक्षी जोशी ने तो अपने विरुद्ध की गई एक अभद्र व अश्लील टिप्पणी के विरुद्ध पुलिस में रिपोर्ट दर्ज कराई तथा नोएडा पुलिस ने गुजरात के नवसारी से उस शोहदे को गिरफ्तार भी कर लिया जिसने साक्षी जोशी को गंदी गालियां दी थीं। पर यह भी हकीकत है कि प्रत्येक लड़की साक्षी जोशी जैसा साहस दिखाते हुए पुलिस में एफआइआर नहीं दर्ज करा पाती और न ही ऐसी प्रत्येक एफआइआर पर पुलिस इस प्रकार तत्काल कार्रवाई करती है जैसा कि साक्षी के मामले में उसने किया। ऐसे में हम भारतवासियों को खासतौर पर बड़ी गंभीरता से सोशल मीडिया के विषय पर यह सोचने की जरूरत है कि हम इस माध्यम पर कितना विश्वास करें और कितना न करें?

'नो एंट्री' के सीक्वल में हुई अदिति राव हैदरी की एंट्री, वरुण धवन-दिलजीत भी आएंगे नजर

बॉलीवुड की यादगार कॉमेडी फिल्मों में शुमार 'नो एंट्री' का अब अगला भाग बनने की तैयारी में है। पिछले काफी वक्त से फैंस 'नो एंट्री' के सीक्वल का इंतजार कर रहे थे, लेकिन अब अंतत- ये होने जा रहा है। फिल्म को लेकर अब लगातार नई-नई जानकारियां भी सामने आ रही हैं। अब मीडिया रिपोर्ट्स के हवाले से एक और खबर सामने आ रही है कि 'नो एंट्री 2' में बॉलीवुड की इस खूबसूरत हसीना की भी एंट्री हो गई है।

कॉमेडी में तमन्ना की वापसी

'नो एंट्री 2' में अब इंडस्ट्री के बड़े सितारों की एंट्री हो रही है। पीपिंग मून की एक रिपोर्ट के मुताबिक, अब 'नो एंट्री 2' में बॉलीवुड एक्ट्रेस तमन्ना भाटिया की भी एंट्री हो गई है। तमन्ना फिल्म में प्रमुख किरदार में नजर आ सकती हैं। इन रिपोर्ट्स की मानें तो यह तमन्ना की कॉमेडी में वापसी का प्रतीक है और वह इसे लेकर काफी उत्साहित हैं। मीडिया रिपोर्ट्स में ऐसी चर्चाएं भी हैं कि फिल्म में तमन्ना के अलावा अदिति राव हैदरी भी एक और फीमेल लीड के तौर पर नजर आएंगी। हालांकि, अभी इसकी कोई पुष्टि नहीं हुई है। लेकिन तमन्ना और अदिति को लेकर मीडिया में चर्चाओं का बाजार गर्म है।

पूरी नई कास्ट की होगी एंट्री

'नो एंट्री 2' की स्टारकास्ट की बात करें तो फिल्म में वरुण धवन, अर्जुन कपूर और दिलजीत दोसांझ मुख्य भूमिका में होंगे। इस तिकड़ी को एक प्रॉपर कॉमेडी फिल्म में एकसाथ देखने के लिए दर्शक काफी उत्साहित हैं। हालांकि, लोगों को उम्मीद थी कि 'नो एंट्री 2' में साल 2005 में आई 'नो एंट्री' की ही असली कास्ट वापस आएगी। जिसमें सलमान खान, फरदीन खान और अनिल कपूर प्रमुख भूमिकाओं में थे। हालांकि, अब ऐसा लगता है कि फिल्म में नई कास्ट ही नजर आएगी।

राज शांडिल्य की कॉमेडी फिल्म में दिखेंगे सिद्धार्थ मल्होत्रा?

बॉलीवुड अभिनेता सिद्धार्थ मल्होत्रा इन दिनों अपनी आने वाली फिल्मों को लेकर खूब चर्चा में हैं। वह इस समय जाह्नवी कपूर के साथ अपनी रोमांटिक फिल्म परम सुंदरी की शूटिंग में व्यस्त हैं, जो जुलाई 2025 में रिलीज होने वाली है। हालांकि, इसी बीच एक नई खबर ने फैंस का ध्यान खींच लिया है। सिद्धार्थ अब एक कॉमेडी से भरपूर फिल्म में नजर आने वाले हैं।

कब शुरू होगी फिल्म?

सिद्धार्थ मल्होत्रा ने मशहूर प्रोड्यूसर महावीर जैन के साथ एक नई कॉमेडी फिल्म के लिए हाथ मिलाया है। पिंकविला की एक रिपोर्ट के मुताबिक इस फिल्म की शूटिंग सितंबर 2025 से शुरू होगी। इस फिल्म को राज शांडिल्य निर्देशित करेंगे, जो अपनी हंसी से भरी फिल्मों के लिए जाने जाते हैं। एक सूत्र ने इस बारे में कहा, यह एक बड़े बजट की कॉमेडी फिल्म है, जिसमें भरपूर मनोरंजन होगा। सिद्धार्थ, महावीर जैन और राज शांडिल्य की पूरी टीम इस प्रोजेक्ट को लेकर बहुत उत्साहित है। यह फिल्म 2025 की दूसरी छमाही में शुरू होगी। इसकी कहानी और किरदार इतने खास हैं कि यह एक अनोखी फ्रेंचाइजी बन सकती है।

प्रोड्यूसर महावीर जैन इस साल दर्शकों को हंसाने के लिए तैयार हैं। सूत्रों के मुताबिक उनके पास दो मजेदार फिल्में हैं। पहली यह अनाम कॉमेडी फिल्म है और दूसरी एक क्रिएचर कॉमेडी, जिसमें कुछ अलग अंदाज देखने को मिलेगा। दोनों फिल्मों की स्क्रिप्ट्स बेहद अनोखी हैं और बड़े पैमाने पर मनोरंजन के लिए बनाई जा रही हैं।

थ्रिलर फिल्म में भी दिखेंगे सिद्धार्थ

सिद्धार्थ के पास सिर्फ कॉमेडी फिल्म ही नहीं, बल्कि एक रोमांचक फोक थ्रिलर भी है। उनकी फिल्म वन-फोर्स ऑफ द फॉरेस्ट भी 2025 में रिलीज होगी। कुछ समय पहले सिद्धार्थ ने ही इस फिल्म का एलान अपने इंस्टाग्राम अकाउंट से किया था।

बेहतरीन अभिनेता हैं रणबीर कपूर

अभिनेता इमरान हाशमी की फिल्म 'ग्राउंड जीरो' सिनेमाघरों में रिलीज के लिए तैयार है। इस बीच इमरान हाशमी ने बॉलीवुड में उभरती प्रतिभाओं के बारे में खुलकर बात की और रणबीर कपूर को उनकी जनरेशन का बेस्ट स्टार बताया। उन्हें मौजूदा पीढ़ी के बेहतरीन अभिनेताओं में से एक बताते हुए हाशमी ने 'एनिमल' में रणबीर के अभिनय की तारीफ की। रणबीर की अभिनय क्षमता की तारीफ करते हुए इमरान ने कहा, मैं सोशल मीडिया ट्रोलिंग पर ज्यादा टिप्पणी नहीं करूंगा- यह शोर से भरा एक इको चैंबर है। इसे गंभीरता से नहीं लिया जाना चाहिए। लेकिन रणबीर कपूर एक ऐसे अभिनेता हैं, जिनकी मैं वाकई प्रशंसा करता हूं। मुझे एनिमल में उनका अभिनय पसंद आया। कई युवा अभिनेता बेहतरीन काम कर रहे हैं और स्क्रीन पर नए नजरिए को ला रहे हैं।

संदीप रेड्डी वांगा की एक्शन-थ्रिलर में रणबीर ने रणविजय सिंह की भूमिका निभाई, जो अपने पिता की रक्षा के लिए चट्टान की तरह खड़ा रहता है। जब उसके पिता की हत्या का प्रयास किया जाता है तो दुश्मनों से लड़ने के लिए वह आगे आता है। इस फिल्म में रणबीर कपूर के साथ अभिनेता बॉबी देओल, रश्मिका मंदाना, तृप्ति डिमरी और अनिल कपूर भी अहम भूमिकाओं में हैं। इमरान के लेटेस्ट प्रोजेक्ट ग्राउंड जीरो की बात करें तो, फिल्म में वह बीएसएफ कमांडेंट नरेंद्र नाथ धर दुबे की भूमिका निभाते हुए दिखाई देंगे, जिन्होंने गाजी बाबा को मारने के लिए ऑपरेशन को लीड किया था। इस मिशन को पिछले 50 वर्षों में बीएसएफ के बेस्ट ऑपरेशन के रूप में जाना जाता है।

फिल्म ग्राउंड जीरो में दुबे की भूमिका को लेकर इमरान हाशमी ने बताया, जब कोई अभिनेता इस तरह की भूमिका निभाता है, तो हमेशा एक शारीरिक, भावनात्मक और मनोवैज्ञानिक पहलू शामिल होता है। शारीरिक रूप से मुझे एक अनुशासित बॉडी लैंग्वेज अपनानी पड़ी। जब आप एक कमांडिंग ऑफिसर की भूमिका निभा रहे होते हैं, तो व्यवहार महत्वपूर्ण हो जाता है। उन्होंने कहा, मुझे अपने शरीर पर भी काम करना पड़ा- वेट ट्रेनिंग, आहार में बदलाव, कैलोरी में वृद्धि- उनकी जनरेशन के बेस्ट स्टार भावनात्मक और मनोवैज्ञानिक रूप से, मैंने बीएसएफ अधिकारियों से बात की और उनके हाव भाव को समझने की कोशिश की, ताकि मैं ऑपरेशन के दौरान उनकी मानसिक स्थिति, उनके परिवार की स्थिति और इस तरह के हाई रिस्क वाले पेशे से होने वाले भावनात्मक तनाव को समझ सकूं।

तेजस देओस्कर के निर्देशन में बनी ग्राउंड जीरो इसी साल 25 अप्रैल को सिनेमाघरों में रिलीज होने के लिए तैयार है।

केसरी 2 में अक्षय माधवन के अभिनय की कायल हुईं कैटरीना

अक्षय कुमार अभिनीत फिल्म केसरी 2 बीते शुक्रवार को सिनेमाघरों में रिलीज हुई। इस फिल्म को लेकर बॉलीवुड के कई सितारे अपनी प्रतिक्रियाएं दे रहे हैं। अब इसी कड़ी में अभिनेत्रा कैटरीना कैफ ने फिल्म की तारीफ करते हुए इंस्टाग्राम पर स्टोरी शेयर की है। इंस्टाग्राम स्टोरी में अभिनेत्री ने केसरी 2 फिल्म का पोस्टर लगाया है और उसमें कैप्शन में लिखा कि एक अनकही कहानी को शानदार तरीके से बताया गया है। आगे कैटरीना ने फिल्म के निर्देशक करण सिंह त्यागी और निर्माताओं को टैग करते हुए उनपर गर्व महसूस किया है। इसके अलावा अभिनेत्री ने अक्षय कुमार और आर माधवन को टैग करते हुए उनके अभिनय को शानदार बताया।

यह समझना जरूरी है कि यह सोशल मीडिया की दुनिया वास्तविक नहीं है

अभिनेत्री पूजा हेगड़े इन दिनों अपनी आगामी फिल्म 'रेट्रो' को लेकर सुर्खियों में बनी हुई हैं। अब फिल्म को लेकर प्रमोशन भी शुरू हो गया है इसी कड़ी में फिल्म की अभिनेत्री पूजा हेगड़े ने सोशल मीडिया के अपने फॉलोअर्स और बॉक्स ऑफिस के टिकट को लेकर एक मजेदार टिप्पणी की है।

सोशल मीडिया के फॉलोअर्स और अपने प्रशंसकों को लेकर पूजा हेगड़े ने फिल्म प्रमोशन के दौरान बातचीत में कहा, सोशल मीडिया और वास्तविक दुनिया दो अलग-अलग चीजें हैं। जब मैं हैदराबाद या तिरुमाला जाती हूं, तो लोगों से मिलती हूं और यह मेरे लिए ज्यादा महत्वपूर्ण है। सोशल मीडिया पर ऐसे बॉट होते हैं, जिनके पास न तो डिस्प्ले पिक्चर होती है और न ही उनके अकाउंट में कोई पोस्ट होती है। मैं भी उन फेसलेस ट्रोल्स से प्रभावित होती हूं, क्योंकि मैं भी एक इंसान हूं। लेकिन यह समझना जरूरी है कि यह वास्तविक दुनिया नहीं है। अभिनेत्री ने आगे अपने फॉलोअर्स और बॉक्स ऑफिस के टिकट बिकने पर कहा, मेरे लगभग 30 मिलियन इंस्टा फॉलोअर्स हैं, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि बॉक्स ऑफिस पर 30 मिलियन टिकट बिकेंगे।

इसी तरह, कई सुपरस्टार्स के सिर्फ 5 मिलियन इंस्टा फॉलोअर्स हैं, लेकिन वे बहुत ज्यादा भीड़ खींचते हैं। अपना काम ठीक से करना और लोगों से सीधे फीडबैक लेना महत्वपूर्ण है। कार्तिक सुब्बाराज द्वारा निर्देशित 'रेट्रो' 1 मई को रिलीज होनी है। फिल्म में पूजा हेगड़े के साथ सूर्या प्रमुख भूमिका में नजर आएंगे। रेट्रो एक्शन से भरपूर एक लव स्टोरी है। फिल्म को लेकर दर्शकों में काफी उत्साह है।

कॉमेडी फिल्में करने वाले रितेश विलेन बनकर भी छा गए, गंभीर किरदारों में किया उम्दा अभिनय

रितेश देशमुख ने बॉलीवुड में ज्यादातर कॉमेडी फिल्में ही की हैं, इस वजह से उनकी इमेज एक कॉमिक एक्टर की बन चुकी है। रितेश ने पिछले कुछ सालों में ऐसी फिल्में भी की हैं, जिनमें वह विलेन का किरदार निभाते भी नजर आए, साथ ही कुछ फिल्मों, सीरीज में गंभीर किरदारों में दिखे। जानिए, कौन सी हैं, वो फिल्में और सीरीज।

रेड 2

जल्द ही अजय देवगन की फिल्म 'रेड 2' रिलीज होगी। इस फिल्म में अजय देवगन ने एक इनकम टैक्स ऑफिसर का रोल किया है। फिल्म में वह एक राजनेता के घर पर छापा मारते हैं, इस नेता का किरदार रितेश देशमुख निभा रहे हैं। फिल्म का विलेन रितेश का किरदार ही है। अब तक फिल्म 'रेड 2' की जो झलक मिली है, उसमें विलेन के तौर पर रितेश काफी प्रभावित करते दिख रहे हैं। रितेश का लुक, डायलॉग काफी दमदार लग रहे हैं। इस फिल्म को राजकुमार गुप्ता ने निर्देशित किया है।

एक विलेन

फिल्म 'एक विलेन(2014)' में लीड रोल सिद्धार्थ मल्होत्रा और श्रद्धा कपूर ने किया था। फिल्म में रितेश ने एक साइको किलर का रोल किया। इस फिल्म में विलेन के तौर पर रितेश को देखकर दर्शक हैरान हो गए। फिल्म के निर्देशक मोहित सूरी हैं।

मरजावां

'एक विलेन' फिल्म करने के बाद रितेश देशमुख फिल्म 'मरजावां (2019)' में भी विलेन बने। इस फिल्म में उनका विलेन का किरदार जरा हटकर रहा। फिल्म में उन्होंने एक बौने का रोल किया, जो की माफिया से जुड़ा है। फिल्म में रितेश के किरदार के कारण हीरोइन (तारा सुतारिया) की मौत हो जाती है। ऐसे में फिल्म का हीरो रितेश के किरदार से बदला लेता है। इस फिल्म के निर्देशक मिलाप मिलन जवेरी थे।

लय भारी

साल 2014 में रितेश देशमुख ने एक मराठी फिल्म 'लय भारी' की थी। इस फिल्म में रितेश ने डबल रोल किया। एक रोल सीधे-सादे शख्स का था, तो दूसरा किरदार एक गुंडे का रहा। दोनों ही किरदारों में रितेश गंभीर नजर आए। इस फिल्म में रितेश की पत्नी और एक्ट्रेस जेनेलिया डिसूजा ने कैमियो किया था। साथ ही सलमान खान खान भी कैमियो रोल में 'लय भारी' में नजर आए। इस फिल्म को निशिकांत कामत ने निर्देशित किया था।

पिल सीरीज में निभाया सीरियस रोल

रितेश देशमुख ने एक सीरीज 'पिल' भी की। यह एक मेडिकल थ्रिलर सीरीज थी। इसमें रितेश ने एक सरकारी ऑफिसर का रोल निभाया था, जो मेडिकल, दवा माफिया के खिलाफ जंग लड़ता है। यह किरदार बहुत ही गंभीर किस्म का था, इसमें भी रितेश ने अच्छा अभिनय किया। 2024 में आई इस सीरीज को राजकुमार गुप्ता ने निर्देशित किया।

इस इंडस्ट्री ने मुझे बहुत चोट पहुंचाई है

बाबिल खान की फिल्म 'लॉगआउट' 18 अप्रैल को ओटीटी प्लेटफॉर्म जी5 पर रिलीज हो गई है। बाबिल ने इंडस्ट्री से मिली मुश्किलें और चिंताओं से निपटने के बारे में बात की। बातचीत में बाबिल ने इंडस्ट्री में आने वाली कठिनाइयों और उनका सामना करने के बारे में बात की। अभिनेता ने कहा, मैं इस इंडस्ट्री में पूरे दिल से अपनी बाहें खोलकर आया था। लेकिन इतने कमय समय में ही इसने मुझे एक व्यक्ति के रूप में वास्तव में काफी हद तक तोड़ दिया है। हालांकि, अब मैं टूटा नहीं, लेकिन हां, इसने मुझे बहुत चोट पहुंचाई है और मैंने बहुत दर्द और बहुत सारी चिंताओं का सामना किया। बाबिल ने आगे कहा, इंडस्ट्री द्वारा टूटा हुआ महसूस करने के बावजूद, मैं किसी भी चीज के लिए इस अनुभव को नहीं बदलूंगा। इसने मुझे जीवन के बारे में एक अलग दृष्टिकोण दिया और मुझे अपने बचपन के सच्चे जुनून से फिर से जुड़ने में मदद की। हर अनुभव, चाहे वह अच्छा हो या बुरा, उसे आगे बढ़ने के अवसर के रूप में देखा जाना चाहिए।

ऊसर भूमि को बनाया जा सकता है उपजाऊ

ऊसर वह कहलाती भूमि कहलाती है, जिसमें कुछ भी पैदा नहीं होता। यदि होता भी है तो बहुत ही नाममात्र के लिए। भूमि में ऊसरीलापन मिट्टी में लवणता या क्षारीयता अथवा दोनों की ही अधिकता के कारण होता है। ऊसर भूमि तीन प्रकार की होती है-

1. लवणीय मृदा- इस प्रकार की मृदा में घुलनशील सोडियम नमक की अधिकता होती है।

पहचान- स्थानीय भाषा में इस मृदा को रेह, रेह्टा या नमकीन मृदा (सेलाइन स्वाइल) कहते है। ऐसी मृदा में भूमि की सतह पर उभरे, फूले, सफेद, सिलेटी रंग के लवण दिखाई देते है जो कि समूहों व टुकड़ों में मिलते है। ऐसी भूमि पर चलने पर अच्छा लगता है। लवणीय भूमि की सतह की मृदा एवं उसके नीचे की मृदा कड़ी एवं कम्पैक्ट नहीं होती है।

2. लवणीय-क्षारीय मृदा- इस प्रकार की मृदा में घुलनशील सोडियम की अधिकता के साथ-साथ विनिमयशील सोडियम की भी अधिकता होती है।

पहचान- साधारण भाषा में इस मृदा को ऊसर, रेह कहते है। इस मृदा में लवणीय-क्षारीय भूमि के मिले जुले गुण रहते है। भूमि की ऊपरी सतह भूरे रंग की होती है जिस पर रेह या सफेद लवण प्रचुर मात्रा में रहते है तथा नीचे की सतह क्षारीय भूमि की भांति सख्त होती है। इस भूमि में नीचे कंकड़ भी मिलता है। ऐसी मृदाओं में टुकड़ों में कहीं-कहीं पर सतह पर लवण व कहीं-कहीं पर ऊसर घास भी दिखाई देती है।

क्षारीय मृदा- क्षारीय मृदा देखने में काली या स्लेटी रंग की होती है। प्रदेश में पायी जाने वाले क्षारीय मृदा में विनियमशील सोडियम की अधिकता होती हे तथा इसका सुधान मृदा सुधारक यथा जिप्सम, पायराइट आदि के उपयोग के बिना संभव नहीं होता है।

पहचान- इस मृदा को स्थानीय भाषा में ऊसर, बजर, कल्लर या एल्कली स्वाइल कहते है। भूमि चौरस जिस पर काले भूरे रंग के अवशेष पदार्थ धब्बों के रूप में दिखाई देते है। ऐसी भूमि की सतह सीमेंट की भांति बहुत कड़ी और कम्पैक्ट होती है। भूमि की भौतिक दशा बहुत खराब होती है जिससे गड्ढों में पानी बहुत दिनों तक भरा रहता है।

ऊसर बनने के कारण

- वर्षा अधिक किन्तु जल निकासी की समुचित व्यवस्था न होना।
- भूमिगत जल स्तर ऊँचा होना।
- नहरी क्षेत्रों में जल रिसाव का होना।
- भूमि को अधिक समय से परती छोड़ना।
- कम वर्षा एवं तापमान का अधिक होना।

ऊसर भूमि को सुधारने के लिए निम्नलिखित कदम उठाये जाते हैं-

1. मेड़बन्दी- ऊसर सुधार के लिए ऊसरीले खेतों में ऊँची और मजबूत मेड़ बनाने का कार्य सितम्बर-अक्टूबर तक अवश्य पूर्ण कर लेना चाहिए। (मेंड का आधार 90 सेमी. ऊँचाई 30 सेमी., टाप 30 सेमी. तथा सेक्शन एरिया 0.18 वर्ग मी. होना चाहिए)

2. स्क्रेपिंग- जिन खेतों में लवण की सफेद चादर सी दिखाई देती है उन खेतों में मृदा की ऊपरी परत को फावड़ा की सहायता से खुरचकर इकट्ठा कर उसे किसी गहरे गड्ढे में दबा देते हैं अथवा बड़े नाले के द्वारा बहते हुए पानी में गिरा देते हैं।

3. सब प्लाटिंग- अच्छे ऊसर सुधार हेतु खेत को छोटे-छोटे टुकड़ों में (लगभग 18-20 डेसीबल) बनायें।

4. जुताई/समतलीकरण- ऊसर खेतों का सुधार तभी संभव है जब खेत ठीक से समतल किया गया हो। इसके लिए सूक्ष्म समतलीकरण करने हेतु लेजर लेवलर के द्वारा समतलीकरण किया जाय जिसे कृषि विभाग के उप कृषि निदेशक से सम्पर्क कर उपयोग में लाया जा सकता है।

5. खेत नाली (लिंक ड्रेन)- सभी ऊसरीले खेतों में भूमि के ढाल के अनुसार निचली तरु या दो खेतों के बीच की मेड़ को फाड़कर फील्ड ड्रेन तैयार की जाती हे जिसका दूसरा सिरा सम्पर्क नाली (लिंक ड्रेन) से जोड़ा जाता है। (आकार-मुंहफाड़ 90 सेमी. गहराई 30 सेमी., तली 30 सेमी. तथा सेक्शन एरिया 0.18 वर्ग मी.)

6. जल उपयोग समूहों से निकली खेत नालियों (फील्ड ड्रेन) को सम्पर्क नाली में गिराया जाता है। सम्पर्क नाली का एक सिरा मुख्य नाले में गिरता है। आकार-मुंहफाड़ 165 सेमी. गहराई 60 सेमी. तली 45 सेमी. तथा सेक्शन एरिया 0.63 वर्ग मी. (100 हे. हेतु)।

7. मुख्य नाला- ऊसरीले खेतों से लवणीय पानी खेत नाली के द्वारा लिंक ड्रेन में तथा लिंक ड्रेन को मुख्य नाला से जोड़ा जाता है। मुख्य नाला पूरे ऊसर क्षे9 के लवणीय पानी को नदी में ले जाता है। इसकी खुदाई एवं सफाई का कार्य सिंचाई विभाग द्वारा कराया जाता है।

8. बोरिंग- प्रत्येक जल उपयोग समूह के 4 हे. क्षेत्र में सिंचाई की सुनिश्चित व्यवस्था हेतु बोरिंग के अभाव में समूह के सबसे ऊंचे खेत में बोरिंग प्रस्तावित कर निगम द्वारा बोरिंग हेतु पी.वी.सी. पाइप, रिफ्लेक्स वाल्व के साथ ही बोरिंग मैकिनिक एवं मजदूरों हेतु सफल बोरिंग होने पर मापन के अनुसार निगम द्वारा समूह के खाते में भुगतान किया जाता है।

9. नलकूप व्यवस्था- पम्पसेट की व्यवस्था बोरिंग धारक को स्वयं से अपने संसाधनों द्वारा समूह के सामूहिक सहयोग से क्रय किया जाता है। इस हेतु निगम द्वारा कोई अनुदान की सुविधा नहीं दी जाती है।

10. सिंचाई नाली- आकार-मुंहफाड़ 120 सेमी. गहराई 30 सेमी. तली 30 सेमी. तथा सेक्क्षन एरिया 0.225 वर्ग मी.।

11. फ्लैशिंग- लवणीय मृदा से फ्री साल्ट को पानी में घोलकर निकालने हेतु ऊसरीले खेतों में 15 सेमी. ऊंचा 48 घण्टे हेतु पानी भरते है जिसमें घुलशील लवण पानी में घुल जाते है जिसे जल निकास नाली द्वारा बाहर निकाल दिया जाता है। इस सम्पूर्ण क्रिया को फ्लैशिंग कहा जाता है। यह क्रिया सदैव जिप्सम मिक्सिंग से पूर्ण की जाती है।

12. जिप्सम मिक्सिंग- फ्लैशिंग के उपरांत ओट आने पर भूमि की श्रेणी के अनुसार प्राप्त करायी गयी जिप्सम के बैग को समान-समान दूरी पर खोलते है। तत्पश्चात् हाथ से पूरे खेत में एक समान जिप्सम बिखेर कर कल्टीवेटर द्वारा हल्की जुताई (3-5 सेमी.) करते हैं एवं पाटा नहीं लगाते है। जिप्सम मिक्सिंग का उपयुक्त समय जून माह होता है।

13. लीचिंग- जिप्सम मिक्सिंग के उपरांत (15 जून से 30 जून के मध्य) खेतों में 15 सेमी. ऊंचा पानी भरते है जिसे 10-12 दिन बाद जल निकास नाली के द्वारा निकाल देते हैं। यदि बीच में पानी सूख जाता है तो उसमें पुनः बोरिंग द्वारा पानी भर जाता है।

ऊसरीले खेतों में जीवांश खाद/कार्बनिक खादों का लगातार प्रयोग करने से भी लवणीय मृदा का सुधार होता है।

14- नर्सनी की तैयार- निगम द्वारा ऊसर भूमि हेतु उपलब्ध कराये गये खरीफ निवेश (धान, डी.ए.पी. यूरिया एवं जिंक सल्फेट) को 15 मई के बाद उपजाऊ जमीन में जहां पर सिंचाई का अच्छा साधन हो, वहां पर 60 किग्रा. प्रति हे. की दर से बीज का प्रयोग करते है। रोपाई के क्षेत्र के 1/10 हिस्से में धान की नर्सरी डाली जाती है।

15. रोपाई- जब धान की नर्सरी 35 दिन की हो जाय तो उसकी रोपाई लीचिंग के उपरांत बोरिंग से अच्छा पानी भरकर एक वर्ग मी. में 65-70 स्थान पर 4-5 पौधों की रोपाई 25 जून से 10 जुलाई के बीच सम्पन्न कर लेते है।

16. धान फसल की देखभाल- रोपाई के एक सप्ताह बाद खेत से पानी निकाल दें। कुछ सूखने के बाद यदि वर्षा न हो तो धान की सिंचाई करें। पानी भरे रहने के कारण ऊसरीली मृदा में लवण की अधिकता से हरी काई का प्रकोप होता है। इसके लिए खुली धूप में 0.2-0.3 प्रतिशत कापर सलफेट (तूतिया) का घोल बनाकर छिड़काव करें अथवा सूखी झाड़ी से काई को तोड़कर जल निकास नाली से बाहर बहा दें। धान की फसल हेतु दी जाने वाली यूरिया की मात्रा को बराबर-बराबर चार भागों में बांटकर पहला भाग रोपाई के 13-15 दिन, दूसरा भाग 27-30 दिन, तीसरा भाग 45-50 दिन तथा चौथा भाग बालियां निकलते समय (65-70) दिन पर प्रयोग किया जाय।

17. धान की कटाई- जब धान की बालियां पीली पड़कर नीचे की तरफ झुकने लगे तो ऐसी दशा में धान की कटाई जमीन की सतह से 6 इंच ऊपर से करते है।

18- गेहूं के खेत की तैयारी करना- धान के ठूंठों को सड़ाने के लिए नमी की अवस्था में 40 किग्रा. यूरिया प्रति हे. बुरकाव कर हैरो/कल्टीवेटर द्वारा जुताई कर पाटा चला देते है। एक सप्ताह के बाद कल्टीवेटर से जुताई कर खेत की तैयारी कर लेते है। जिन क्षेत्रों में धान की कटाई विलम्ब से हो वहां पर सीधे जीरोटिल फर्टीसीड ड्रिल से बुवाई करें।

19. गेहूं की देखभाल- यदि बीज पहले से शोधित नहीं है तो बोने से पूर्व बीज को कार्बान्डाजिम अथवा कार्बाक्सिन रसायन 2.5 प्रति किग्रा. बीज (100 किग्रा. में 250 ग्राम दवा) की दर से शोधित कर बोवाई करें। बुवाई के समय बेसल के रूप में 96 किग्रा. यूरिया, 87 किग्रा. डी.ए.पी., 33 किग्रा. म्यूरेट ऑफ पोटाश तथा 25 किग्रा. जिंक सल्फेट प्रति हे. खेत की तैयारी के समय जमीन में मिला देते है तथा जिंक सल्फेट को डी.ए.पी. उर्वरक के साथ मिश्रण कर प्रयोग नहीं करते है। यूरिया की शेष मात्रा को दो भागों में बांटकर प्रथम पहली सिंचाई 28 दिन के बाद ताजमूल अवस्था पर करने के पश्चात ओट पर 65 किग्रा. तथा तीसरी सिंचाई के बाद 60-65 दिन पर गांठ बनने की अवस्थ पर ओट आने पर 65 किग्रा. यूरिया की टाप ड्रेसिंग करते है। गेहूं में पांच सिंचाई की दशा में पहली ताजमूल अवस्था में बुवाई के 28 दिन बाद, दूसरी कल्ले फूटते समय बुवाई के 40-45 दिन बाद, तीसरी गांठ बनने बनने पर 60-65 दिन बाद, चौथी बाली निकलते समय बुवाई के 80-85 दिन बाद, पांचवी दूधिया अवस्था में बुवाई के 100-105 दिन तथा छठी दान पकने पर 115-120 दिन पर सिंचाई करते है। यदि मात्र तीन ही सिंचाई उपलब्ध है तो पहली ताजमूल बुवाई के 28 दिन बाद, दूसरी गांठ बनने पर बुवाई के 60-65 दिन बाद, तीसरी दूधिया अवस्था में बुवाई के 100-105 दिन बाद सिंचाई करनी चाहिए। ऊसरीले क्षेत्रों में सिंचाई हल्की करनी चाहिए।

20. गेहूं की कटाई-मड़ाई एवं भण्डारण- फसल की बालियां पक जाने पर फसल को तुरन्त काट लेना चाहिए। कटाई के बाद पावर थ्रेशर द्वारा मड़ाई करके अनाज को अलग कर लेना चाहिए। अनाज को सुखाने के उपरांत धातु की बनी बखालियों में भण्डारण करना चाहिए।

21. हरी खाद ढैंचा- अच्छे ऊसर सुधार के लिए ढैंचा की हरी खाद बहुत उपयोगी होती है। हरी खाद के लिए ढैंचा एक सर्वोत्तम फसल है। ऊसर में ढैंचा की आसानी से हरी खाद तैयार की जाती है। एक हे. के लिए 60 किग्रा. बीज की आवश्यकता पड़ती है जिसे 24 घण्टे पानी में भिगोकर उसे जिप्सम से उपचारित कर बुवाई करने से अंकुरण अच्छा होता है। इसमें प्रत्येक 10-15 दिन के अंतराल पर सिंचाई करते हुए 45 दिन पर जब फसल 1.5 से 2.0 फुट लम्बी हो जाय तो नमी की दशा में पावर डिस्क हैरो के द्वारा पलटाई कर देते है (आवश्यकता पडने पर 40 किग्रा. हे. यूरिया का छिड़काव भी किया जा सकता है जिसे अगली फसल में दी जाने वाली यूरिया की मात्रा से कम कर देना चाहिए) ढैंचा की फसल से जीवांश पदार्थ के साथ लगभग एक बोरी यूरिया के बराबर नत्रजन की जमीन में बढोत्तरी होती है जो कि जमीन में संरक्षित रहती है। इस प्रकार की प्रक्रिया अपनाने से ऊसर भूमि धीरे-धीरे उपजाऊ हो जाती है। ऊसर भूमि के सुधर जाने के बाद कुछ बातों का विशेष ध्यान रखें ताकि भूमि फिर से ऊसर न होने पाये।

- सुधारे गये क्षेत्र को कभी खानी न छोड़े।
- जैविक खाद जैसे गोबर की सड़ी खाद, कम्पोस्ट, हरी खादों का अधिकाधिक प्रयोग करें।
- सिंचाई हल्की करें।
- नहरी सिंचाई से बचें।
- जल निकाल का विशेष ध्यान रखें।

फुलेरा बाजार डाकघर को यथावत रखने की मांग, निर्मल कुमावत ने सांसद को लिखा पत्र

जयपुर टाइम्स

फुलेरा(निसं.)। पूर्व विधायक एवं भाजपा राष्ट्रीय परिषद सदस्य निर्मल कुमावत ने जयपुर ग्रामीण सांसद राजेन्द्र सिंह को पत्र लिखकर फुलेरा बाजार डाकघर को वर्तमान स्थान गांधी चौक पर ही बनाए रखने की मांग की है। उन्होंने आग्रह किया है कि डाक विभाग के संबंधित मंत्रालय को इस विषय पर शीघ्र संज्ञान लेना चाहिए । गौरतलब है कि यह डाकघर बीते चार दशक से नगर के मध्य स्थित है और वरिष्ठ नागरिकों, पेंशनधारकों, व्यापारियों व महिलाओं के लिए सुविधाजनक रहा है। वर्तमान में इसे पुराने फुलेरा स्थित मुख्य डाकघर में स्थानांतरित किए जाने की योजना है, जिससे आमजन, विशेषकर बुजुर्गों को भारी असुविधा का सामना करना पड़ेगा। कुमावत ने चेताया है कि इस कदम से न केवल खाताधारकों को परेशानी होगी, बल्कि कई लोग अपने खाते बंद भी कर सकते हैं, जिससे डाक विभाग को राजस्व की हानि हो सकती है। उन्होंने मांग की है कि जनहित को ध्यान में रखते हुए डाकघर को यथावत रखने के आदेश शीघ्र जारी किए जाएं। नगरवासियों का मानना है कि जनसुविधाओं से जुड़ी सेवाओं में बिना पर्याप्त विकल्प दिए बदलाव करना अनुचित है। आम जनता की सहूलियत को प्राथमिकता देना प्रशासन की जिम्मेदारी है। जनप्रतिनिधियों से अपेक्षा है कि वे इस विषय में ठोस पहल करें।

श्योजी राम गुर्जर लर्निंग लीडर अवॉर्ड 2025 से सम्मानित

जयपुर टाइम्स

दूदू(निसं)। ग्राम पंचायत धांधोली के पूर्व सरपंच एवं पंचायत समिति सदस्य समाज सेवी श्योजी राम गुर्जर को नई दिल्ली में इंडिया हैबिटेट सेंटर में आयोजित पंचायतीराज दिवस के अवसर पर लर्निंग लीडर अवॉर्ड 2025 से सम्मानित किया गया। यह सम्मान भारतीय गुणवत्ता परिषद एवं जलशक्ति मंत्रालय के द्वारा गुर्जर द्वारा किए गए नवाचार कार्य के लिए प्रदान किया गया। पुरस्कार केंद्रीय जल शक्ति मंत्री सी आर पाटिल,जल शक्ति मंत्रालय के सचिव अशोक कुमार मीना की उपस्थित में दिया गया। उल्खेनीय है कि परिषद सम्पूर्ण भारत वर्ष से चुनिंदा लोगों का चयन कर ये पुरस्कार प्रदान करती है। श्योजी राम गुर्जर पिछले 30 सालों से पर्यावरण एवं सामाजिक मुद्दों पर कार्य कर रहे हैं। संघर्ष संस्थान द्वारा विभिन्न क्षेत्रों में नवाचारी कार्य किए गए हैं। क्षेत्र के गणमान्य लोगों ने गुर्जर को बधाईयां दी हैं।

सड़क दुर्घटना में दो लोगों की हुई मौत

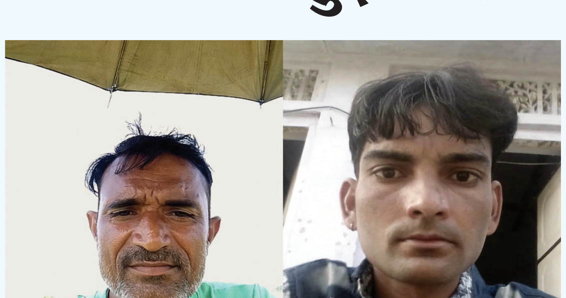

जयपुर टाइम्स

विराटनगर(निसं.)। नेशनल हाईवे संख्या 48 के महारोज पुलिया के पास मंगलवार दोपहर करीब 2 बजे एक कार व बाइक में भिड़ंत हो गई जिससे बाइक पर सवार दो लोग घायल हो गए। भाबरु थाने के हेड कांस्टेबल ग्यारसीलाल ने जानकारी देते हुए बताया कि कार व बाइक भिड़ंत में घायलों को गंभीर हालत में पावटा के उप जिला अस्पताल ले जाया गया। जहां गंभीर घायल हंसराज (44) पुत्र बाबूलाल की मौत हो गई। जिसके शव का पोस्टमार्टम करवा कर शव मंगलवार को परिजनों को सुपुर्द कर दिया गया। वहीं दूसरे गंभीर घायल ओमप्रकाश (27) पुत्र भागीरथ मल को प्राथमिक उपचार के बाद हायर सेंटर एसएमएस हॉस्पिटल जयपुर के लिए रेफर कर दिया गया था। जिसकी उपचार के दौरान मौत हो गई।इधर शव का पोस्टमार्टम करवाए जाने के बाद बुधवार को शव परिजनों को सुपुर्द कर दिया गया। फिलहाल भाबरु थाना पुलिस मामले को लेकर जांच में जुटी है।

रात्रि चौपाल कार्यक्रम में ग्राम पंचायत बनाने की मांग रखी

जयपुर टाइम्स

चाकसू(निसं.) चाकसू उपखंड क्षेत्र के कोटखावदा तहसील के गांव गौड़ का बास में गुरुवार को जिला कलेक्टर निर्देशानुसार उपखंड अधिकारी चाकसू ने गौड़ का बास में रात्रि जन चौपाल कार्यक्रम आयोजित किया गया। वहीं चौपाल कार्यक्रम में लोगों ने मुख्य समस्या गौड़ का बास को ग्राम पंचायत बनाने की मुख्य मांग रखी गई। इस दौरान उपखंड अधिकारी चाकसू ने गौड़ का बास चौपाल में ग्रामीणों की मांग को देखते हुए नई ग्राम पंचायत का प्रस्ताव भेजने का आश्वासन दिया। गौड का बास और ताज खा का बास के सैंकड़ों की संख्या में लोग इकट्ठा हुए। और उनसे सभी से एक-एक आदमी से पूछा गया तो बताया कि दोनों गांवों ने नई ग्राम पंचायत गौड़ का बास बनाने पर सहमति प्रकट की। इसके साथ चौपाल में अन्य मुद्दों पर भी निस्तारण के निर्देश दिए।

जिला कलक्टर ने विराटनगर के बीलवाडी में रात्रि चौपाल आयोजित कर आमजन के सुने अभाव अभियोग

आमजन की समस्याओं के निवारण के लिए हर समय तैयार है जिला प्रशासन- जिला कलक्टर

जयपुर टाइम्स

विराटनगर(निसं.)। जिला कलक्टर कल्पना अग्रवाल ने कहा कि आमजन की परिवेदनाओं के स्थानीय स्तर पर त्वरित समाधान के लिए रात्रि चौपाल व जनसुनवाई के माध्यम से आमजन के बीच जाकर उनके परीवादों का संवेदनशीलता व गुणवत्ता के साथ समाधान कर आमजन को राहत पहुंचाएं अधिकारीगण। जिला कलक्टर ने मंगलवार को उपखंड विराटनगर की ग्राम पंचायत बीलवाडी में आयोजित रात्रि चौपाल में आमजन के परिवाद सुन कर नियमानुसार मौके पर ही निस्तारण के निर्देश दिए।जिला कलक्टर ने समस्त अधिकारियों को प्रत्येक परिवेदना पर प्रभावी कार्यवाही करने सहित उसका अपडेट रखने को कहा।उन्होंने कहा कि विभागों की योजनाओं के बारे में आमजन को अधिकतम जागरूक करें ताकि सरकार की मंशानुरूप अंतिम छोर तक व्यक्ति को योजनाओं का समुचित लाभ मिल सके। इस दिशा में सभी विभागों के अधिकारी और कर्मचारी अपने विभाग की योजनाओं और सेवाओं का समुचित प्रचार-प्रसार करें।उन्होंने कहा कि कार्यालय में आने वाले सभी परिवादियों को धैर्यपूर्वक सुनते हुए उनकी समस्याओं के निस्तारण के साथ राहत दें। उन्होंने संपर्क पोर्टल, सीएमओ-पीएमओ से प्राप्त शिकायतों, रात्रि चौपाल व जनसुनवाई में प्राप्त होने वाली परिवेदनाओं के समयबद्ध निस्तारण के निर्देश दिए।रात्रि चौपाल में पेयजल संबंधी परिवाद प्राप्त होने पर जिला कलक्टर ने पीएचईडी के अधिकारियों को गर्मी के मौसम के मध्यनजर निर्बाध पेयजल आपूर्ति सुनिश्चित करने एवं आवश्यक स्थानों का चिन्हीकरण कर अविलंब टैंकर के माध्यम से जलापूर्ति सुनिश्चित करने, ट्यूबवेल व बोरवेल खराबी की समस्या प्राप्त होने या पाइपलाइन लीकेज की जानकारी प्राप्त होने पर तुरंत निस्तारण के निर्देश दिए।इस दौरान विभिन्न परिवादी बिजली, पेयजल, सड़क, अतिक्रमण, सीमांकन, गिरदावरी, पुलिस, चिकित्सा, राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा, पट्टा, शिक्षा, मोबाइल कनेक्टिविटी टॉवर, पेंशन की समस्याओं को लेकर पहुंचे। जिला कलेक्टर के निर्देश पर विभागीय अधिकारियों ने लोक कल्याणकारी योजनाओं के बारे में मौजूदा आमजन को विस्तार से जानकारी प्रदान की।जिला कलेक्टर ने निर्देशित किया कि असंतुष्ट परिवादियों को संबंधित विभाग के अधिकारियों की ओर से वास्तविक कारणों से अवगत कराते हुए समझाइश करते हुए संतुष्ट करने का प्रयास करें।जिला कलक्टर ने जिले के सभी नागरिकों को अधिकाधिक संख्या में जनसुनवाई व रात्रि चौपाल का लाभ लेने की अपील की है। जिला कलक्टर ने इस दौरान बजट के तहत की गई घोषणाओं के समयबद्ध क्रियान्वयन के निर्देश देते हुए विराटनगर में अस्पताल व बस स्टैंड के लिए आवंटित भूमि का निरीक्षण कर आवश्यक निर्देश प्रदान किए। जिला कलेक्टर ने रात्रि चौपाल के बाद आमजन के बीच रहते हुए विराटनगर में ही रात्रि विश्राम किया।इस दौरान उपखंड अधिकारी विराटनगर अमिता मान सहित संबंधित अधिकारी भी मौजूद रहे।

पेयजल समस्या को लेकर ग्रामीणों ने राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 248 ए को किया जाम

प्रशासन की समझाइस के बाद खुलवाया जाम

जयपुर टाइम्स

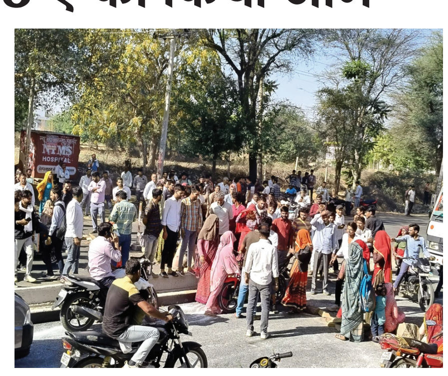

विराटनगर(निसं.)। ग्राम पंचायत जवानपुरा में पानी की भारी किल्लत से परेशान लोगों का ग़ुस्सा बुधवार सुबह फुट पड़ा।सैकड़ों लोगों ने जवानपुरा-बागावास चौरासी बस स्टैंड पर राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 248 ए को पूरी तरह जाम कर दिया। वही पानी के लिए बर्तन लेकर महिलाओं सहित पुरुष सड़क पर पत्थर लगाकर विरोध प्रदर्शन करने लग गए। इस दौरान प्रशासन और जनप्रतिनिधियों के खिलाफ ग्रामीणजन नाराज हुए, स्थानीय लोगों ने बताया कि जल जीवन मिशन योजना की पानी की टंकी का काम अधूरा पड़ा। बोरिंग से पाइप लाइन में पानी की आपूर्ति ठप है।वही प्रशासन व पुलिस को सुचना मिली तो तहसीलदार लालाराम यादव, नायक तहसीलदार मेनका चौधरी , एईएन दयाराम , थाना प्रभारी सोहनलाल विराटनगर, पुलिस जाब्ता भाभरू थाना कि टीम मौके पर पहुंची, लोगों को समझाने को कोशिश की गई। करीब 1 घंटे की समझा इस के बाद माने ग्रामीण,इस दौरान ग्रामीणों गिरिराज धनगवाल,सचीन निमोनिया,दिपक चोपड़ा, मालीराम धावडी,महेश निमोरिया,ने चेतावनी दी कि अगर 15 दिन मे ठोस कदम नहीं उठाया गया तो अगली बार बड़ा आंदोलन होगा। तहसीलदार लालाराम यादव का कहना है कि मौके पर पहुंचकर लोगों से समझाइस की गई जब तक पूर्ण रूप से पानी की व्यवस्था नहीं हो तब तक टैंकर से पानी सप्लाई की व्यवस्था की गई है।

गांव लिखमासर नई परिसिमन के तहत ग्राम पंचायत जसराना में सम्मिलित करने का विरोध

कुचामन सिटी (निसं.)।राजस्व गांव लिखमासर जो ग्राम पंचायत आनन्दपुरा में सम्मिलित है उसे नई परिसिमन के तहत ग्राम पंचायत जसराना में सम्मिलित किया जा रहा है। जिसके कारण समस्त ग्रामवासियों में भारी रोष व्याप्त है एवं हम् ग्रामवासी ग्राम पंचायत जसराना में सम्मिलित किये जाने का भारी विरोध करते हैं। राणासर और लिखमासर का वर्षों पुराना सामाजिक, भौगोलिक और भावनात्मक जुडाव रहा है। हमारे गांव लिखमासर को प्रस्तावित ग्राम पंचायत राणासर (पं.सं. कुचामन सिटी) में सम्मिलित किया जावे। क्योंकि लिखमासर व राणासर के मध्य दूरी 1/2 किमी ही है तथा दोनों गांव आपस मे सड़क से जुड़े हुए हैं। जबकि जसराना के लिए कोई सीधा रास्ता नहीं है। हमें जसराना आने जाने के लिए ग्राम श्रवणपुरा व कुचामन बाईपास से होकर दो गांवों से होते हुए 10 किसी की दुरी जाना पड़ेगा जो परिसीमन के नियमों के विरूद्ध है। पूर्व में आपको दिनांक 29.3.2025 को ग्राम राणासर व लिखमासर के ग्रामवासियों ने रखी थी जिस पर कोई विचार नहीं किया गया। ग्राम लिखमासर को ग्राम पंचायत जसराणा में राजनैतिक साजिश व द्वेशतापूर्वक सम्मिलित किया जा रहा है जिसका हम ग्रामवासी विरोध कर रहे हैं । अगर हठ्धमिता पूर्वक हमें जसराना मे सम्मिलित किया गया तो लिखमासर के समस्त ग्रामवासी कतई बर्दाश्त नहीं करेगें एवं भविष्य में सभी ग्रामवासी को प्रत्येक चुनाव में मतदान का बहिष्कार करने व बड़ा जन आन्दोलन करने को मजबूर होना पड़ेगा।

सरपंच ने लूट व मारपीट के मामले में पुलिस उपायुक्त से लगाई न्याय की गुहार

जयपुर टाइम्स

चाकसू(निसं.) चाकसू उपखंड के ग्राम पंचायत छांदेल कला सरपंच पति विश्राम गुर्जर और देवर राकेश गुर्जर पर 16 अप्रैल को लाठी-सरियों से हमला और 12 हजार लूटने की घटना को लेकर छान्देल सरपंच संतरा देवी गुर्जर ने पुलिस उपायुक्त जयपुर दक्षिण से न्याय की गुहार लगाई है। मारपीट के मामले में विश्राम का भाई रंगलाल गुर्जर ने चाकसू थाने में मामला दर्ज कराया था। बताया कि 16 अप्रैल को सुबह 8 बजे के आसपास मेरे दोनों भाई विश्राम गुर्जर और राकेश गुर्जर मोटरसाइकिल से चाकसू की ओर जा रहे थे। रास्ते में मीणा छात्रावास के सामने राजु गुर्जर, रमेश गुर्जर निवासी ग्राम थूणी रामलक्ष्मणपुरा और रामफूल मीणा निवासी ग्राम बीड़ पीनारपुरा अपने चार-पांच साथियों के साथ पहुंचे। सभी के हाथों में लाठी, सरिया और डंडे थे। इन लोगों ने जबरन बाइक रुकवाई और इसके बाद लाठी, सरिया और डंडों से जानलेवा हमला किया। विश्राम पर बार-बार वार किए गए, जिससे उसके बाएं पैर में दो जगह फ्रैक्चर हो गया। घटना के दौरान राहगीरों की भीड़ बढ़ने लगी तो हमलावर वहां से भागने लगे। जाते-जाते राकेश की शर्ट की जेब से 12 हजार रुपए जबरन निकालकर ले गए। वहीं गुरूवार को पुलिस उपायुक्त जयपुर दक्षिण को लेटर भेजकर सरपंच संतरा देवी ने बताया कि उक्त लोगों के खिलाफ पुलिस थाना चाकसू में रिपोर्ट दर्ज करवायी है जिस पर मारपीट करने वाले लोगों के खिलाफ पुलिस द्वारा कोई कार्यवाही नहीं की जा रही है तथा मारपीट करने वाले लोग खुले आम घुम रहे है और प्रार्थी व उसके परिवार को जान से मारने की धमकी दे रहे है। अपराधियो को जल्दी से जल्दी गिरफ्तार करवाया जावे अन्यथा व हमारे परिवार के साथ किसी भी प्रकार की कोई अनहोनी घटना कर सकते हैं।

OFFICE GRAM PANCHAYAT HARJANPURA, P.S. NEEMAKATHANA

FILE NO: 35 DATE: 22.04.2025

Notice Inviting Bid

Bid for MGNAREGA and Other Scheme RATE CONTRACT FOR SUPPLY OF CONSTRUCTION MATERIAL & PROVIDING EQUIPMENT for FY 2025-26 GRAM PANCHAYAT HARJANPURA PS NEEMKATHANA of subject matter's of Procurement are invited from intersted bidders upto 23.04.2025, 09:00 AM to 02.05.2025, 06:00 PM. Other particulars of the bid may be visited on the procurement portal (http://eproc.rajasthan.gov.in http://sppp.raj.nic.in) of the state and PANCHAYATI RAJ departmental website. The approximate value of the procurement is RS - 50,00,000/-.

UBN No.- PIQ2526GLOB00022.

SARPANCH
GRAM PANCHAYAT HARJANPURA
PANCHAYAT SAMITI
NEEMKATHANA

GRAM VIKAS ADHIKARI
GRAM PANCHAYAT HARJANPURA
PANCHAYAT SAMITI
NEEMKATHANA

नगर परिषद सुजानगढ (चूरू) राजस्थान

E-mail id:- nps222419@gmail.com Phone no. 01568-222419

क्रमांक :–न.प.सु/सफाई शाखा/2025/497–499 दिनांक :– 22.04.2025

निविदा सूचना – 2025

नगर परिषद सुजानगढ़ द्वारा विभिन्न प्रकार के कार्यों के लिये उपयुक्त सक्षम श्रेणी के राज्य सरकार के विभागों में प्रजीकृत ठेकेदारों/फर्मस से निविदा दिनांक 30.04.2025 को दोपहर 3:00 बजे तक आमन्त्रित की जाती है। निविदा प्रतियां दिनांक 30.04.2025 को दोपहर 2:00 बजे तक विक्रय की जावेगी प्राप्त निविदायें उसी दिन उपस्थित ठेकेदारों के समक्ष सायं 4:00 बजे खोली जावेगी। उक्त निविदा से संबंधित विस्तृत विवरण वेबसाईट www.sppp.raj.gov.in पर प्राप्त की जा सकती है। निविदा का बीड क्रमांक–(DLB2526WSOB02433), (DLB2526WSOB02434), (DLB2526WSOB02435), (DLB2526WSOB02436), (DLB2526WSOB02438), (DLB2526WSOB02440), (DLB2526WSOB02441), (DLB2526WSOB02442), (DLB2526WSOB02445), (DLB2526WSOB02446), (DLB2526WSOB02447), (DLB2526WSOB02448), (DLB2526WSOB02449), (DLB2526WSOB02450), (DLB2526WSOB02451), (DLB2526WSOB02452), (DLB2526WSOB02453), (DLB2526WSOB02454), (DLB2526WSOB02455), (DLB2526WSOB02456), (DLB2526WSOB02457) कार्यालय समय में किसी भी कार्य दिवस को नगर परिषद सुजानगढ के कार्यालय में एवं सूचना बोर्ड पर देखी जा सकती है।

राज.संवाद/सी/25/1182 आयुक्त, नगर परिषद सुजानगढ

कार्यालय नगरपालिका बीदासर जिला चूरू (राज0)

क्रमांकः– निर्माण/(ई–टेण्डर)/2025–26/166 दिनांकः–17.04.2025

–: ई–निविदा सूचना संख्या 01/2025–26 :–

कार्यालय नगरपालिका बीदासर द्वारा निम्नलिखित निर्माण कार्यो के लिए कार्य विशेष का अनुभव रखने वाले नगरपालिका बीदासर में पंजीकृत संवेदकों एवं राज्य सरकार/केन्द्र सरकार के अधिकृत संगठनों व अन्य विभागों में पंजीकृत संवेदकों से निर्धारित प्रपत्र में ई–टेण्डरिंग प्रक्रिया द्वारा ऑनलाईन निविदा आमत्रिंत की जाती है। निविदा कार्य दिनांक 22.04.2025 को 18:00 बजे से तथा दिनांक 30.04.2025 समय 18.00 बजे तक ऑनलाईन निविदा जमा करवाई जा सकती है। निविदा शर्तें आदि सम्पूर्ण विवरण वेबसाईट http://www.eprco.rajasthan.gov.in, http://www.sppp.rajasthan.gov.in पर देखी जा सकती है।

NIB Code-DLB2526A0576 UBN NO.-DLB2526WSRC02437

अधिशाषी अधिकारी
राज.संवाद/सी/25/1172 नगरपालिका, बीदासर

नगर परिषद सुजानगढ (चूरू) राजस्थान

E-mail id:- nps222419@gmail.com Phone no. 01568-222419

क्रमांक :–न.प.सु/सफाई शाखा/2025/489 दिनांक :– 21.04.2025

:–ई–निविदा सूचना–2025–26:–

नगर परिषद सुजानगढ़ द्वारा विभिन्न प्रकार के कार्यों के लिये उपयुक्त सक्षम श्रेणी के राज्य सरकार के विभागों में प्रजीकृत ठेकेदारों/फर्मों से निविदा दिनांक 02.05.2025 तक आमन्त्रित की जाती है। निविदा प्रपत्रों को वेबसाईट https://eproc.rajasthan.gov.in से डाउनलोड कि जा सकता है एवं निविदा से संबंधित विस्तृत विवरण वेबसाईट www.sppp.raj.gov.in पर प्राप्त की जा सकती है। निविदा का बीड क्रमांक (DLB2526WSOB02293) है। कार्यालय समय में किसी भी कार्य दिवस को नगर परिषद सुजानगढ के कार्यालय में एवं सूचना बोर्ड पर देखी जा सकती है।

राज.संवाद/सी/25/1112 आयुक्त, नगर परिषद सुजानगढ

notice

name amendment noticeMy son's name is recorded as Amit Kumar Mehara in my service book (army record No.15501702 A Rank Hav), whereas in other documents of my son, the name is recorded as Amit Kumar. Both the above names are of my son, which is correct. Therefore, the correct name of my son should be recorded as Amit Kumar in the army record. - Subhash Mehara son of Mohan Singh, caste Jat, resident - Dudhwakhara, district Churu (Raj)

आम सूचना (बेदखल बाबत)

मैं लालचंद पुत्र मूंगाराम व शारदा पत्नी लालचंद माली निवासी वार्ड 8 गिनाणी बास सरदारशहर जिला चूरु। जो कि हमारे तीन सन्ताने क्रमश फूलचंद, सोनू व मनीष हैं। मेरा पुत्र सोनू जो कि शादीशुदा हैं। वह मेरी पत्नी शारदा व मेरे साथ आये दिन झगड़ा व गाली-गलौच करता है। जिसके कारण मैं मेरी स्व अर्जित सम्पत्ति से मेरे पुत्र सोनू व उसके परिवार को पूर्णतया बेदखल करता हूं। भविष्य में मेरे पुत्र सोनू के साथ कोई भी व्यक्ति किसी तरह का लेन-देन करता है तो उसकी स्वयं की जिम्मेदारी होगी। मैं व मेरा परिवार किसी भी तरह उत्तरदायी नहीं होगें।

लालचंद माली
वार्ड नं 8 गिनाणी बास
सरदारशहर(चूरु) राजस्थान

कार्यालय प्रधानाचार्य, पं. दीनदयाल उपाध्याय मेडिकल कॉलेज, चूरू

website: www.education.rajasthan.gov.in/mcchuru
Email: principal.me.churu@rajasthan.gov.in Phone- 01562-251888
क्रमांक लेखा/निविदा/HIMS Equip./2025/33 दिनांक- 19.04.25

NIT-02/2025-26
UBN No.- MCC 2526WSOB00004

Bid for Supply of IT Equipments (HIMS) are invited from interested bidders up to 12.30 PM on dated 24.4.2025 for Medical College, Churu. The estimated value of procurement is about Rs 4, 75, 540/-. Other particulars of the bid may be visited on the Procurement Portal htpp://sppp.rajasthan.gov.in of the State.

Principal
DIPR/C/5574/2025 PDU Medical College, Churu

राजस्थान सरकार

जिला प्रबन्धक, राजस्थान संवाद सूचना एवं जनसम्पर्क कार्यालय, चूरू

क्रमांक- रा.सं./ 2025-26 / 56 दिनांक-17-04-2025

खुली बोली सूचना सं. -01/2025-26

इस कार्यालय में वित्तीय वर्ष 2025-26 हेतु जॉब बेसिस पर काम करने करने हेतु एक कम्प्यूटर ऑपरेटर, एक सहायक कर्मचारी, एवं एक सफाई कर्मचारी के लिए रजिस्ट्रर्ड एजेन्सयों से दिनांक 28.04.2025 को दोपहर 1 बजे तक प्रस्ताव आमंत्रित किये जाते है, जिसकी अनुमानित लागत 3.00 लाख रूपये है। निविदा प्रपत्र शुल्क 200.00 रूपये है। जिसे कार्यालय समय में कार्यालय से या डाउनलोड कर प्राप्त किया जा सकता है।

प्राप्त निविदाएं उक्त दिनांक को अपरान्ह 3 बजे संबंधित निविदादाताओं व उनके प्रतिनिधियों के समक्ष खोली जावेगी । निविदा की शर्तों, पात्रताओं एवं अन्य जानकारी के लिए कार्यालय समय में सम्पर्क किया जा सकता है । प्राप्त निविदाओं को स्वीकृत करने अथवा नहीं करने का अधिकार अधोहस्ताक्षरकर्ता को होगा ।

NIB code ZCR2526A0075
UBN ZCR2526SSOB00195

जिला प्रबन्धक, राजस्थान संवाद
DIPR/C/5467/2025 सूचना एवं जनसम्पर्क कार्यालय, चूरू

कार्यालयः- सदस्य सचिव, राजस्थान मेडिकेयर रिलीफ सोसायटी, राजकीय डी. बी. सम्बद्ध चिकित्सालय वर्ग, चूरू

Email:-, msdbhchuru@gmail.com Phone- 01562-250333
क्रमांकः- लेखा/निविदा/2025/188 दिनांकः- 17.4.2025

निविदा आमन्त्रण सूचना

इस चिकित्सालय को निम्न विवरणानुसार से सामग्री कय/कार्य हेतु वार्षिक दर संविदा / अनुवन्ध किया जाना है। अतः इच्छुक निविदादाताओं यथा - विर्निमाताओं/ अधिकृत फर्मो/डीलरों / बोनाफाइड डीलर्स आदि से दो रूपों में निविदा प्रस्ताव यथा - तकनीकी प्रस्ताव व वित्तीय प्रस्ताव हेतु मुहरबन्द लिफाफों में निविदायें आमन्त्रित है। निविदा की शर्ते, निविदा शुल्क, अमानत राशि, अनुमानित लागत, ई निविदा प्रपत्र विक्रय /डाउनलोड कर प्रस्तुत करने/निविदा खोलनें की तिथि व समय इत्यादि की सम्पूर्ण जानकारी कार्यालय कार्य दिवस / समय में और वैवसाईट sppp.rajasthan.gov.in पर देखनें /डाउनलोड करनें हेतु अपलोड कर दी गयी हैं।

क्र.सं.	निविदा सामग्री का विवरण	UBN No.
1	R.O. Plant, Water Cooler, Water Tank कय / कार्य हेतु	MHS2526GSOB00397
2	Desktop computer purchases	MHS2526GSOB00398
3	HCV Dialysis/ medicine Consumable Item purchases	MHS2526GSRC00381

सदस्य सचिव (RMRS)
राजकीय डी. बी. सम्बद्ध चिकित्सालय वर्ग,
DIPR/C/5447/2025 चूरू

बीड़ झुंझुनूं में धूमधाम से मनाया विश्व पृथ्वी दिवस

जयपुर टाइम्स

झुंझुनूं(निस)। पृथ्वी दिवस के अवसर पर बीड़ कन्जर्वेशन रिजर्व में जिला स्तरीय कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डीएफओ उदाराम सियोल व विशिष्ट अतिथि स्काउट-गाइड के सीओ महेश कलावत, सुभिता महला, रामदेव, बंशीलाल सहित वन विभाग के अधिकारी व सामाजिक संस्थाओं के प्रतिनिधि उपस्थित रहे। कार्यक्रम में लर्निंग कीड्स स्कूल के शिक्षक और बच्चों, संकल्प सेवा संस्थान की अध्यक्ष बबीता और वन विभाग कर्मियों सत्यवीर, जयवीर, दिनेश, भरत कुमार, महेश कुमार, सुलोचना, सरला, विनोद कंवर तथा वन सुरक्षा समिति के सदस्यों ने भाग लिया। अतिथियों ने पृथ्वी संरक्षण के महत्व पर प्रकाश डालते हुए सिंगल यूज प्लास्टिक का उपयोग न करने, अधिकाधिक वृक्षारोपण करने, वन्य जीवों का संरक्षण करने और ग्लोबल वार्मिंग को कम करने के लिए सामूहिक प्रयासों की अपील की। इस अवसर पर लव कुश वाटिका में पौधारोपण किया गया और पक्षियों के लिए परिंडे भी लगाए गए। कार्यक्रम का संचालन क्षेत्रीय वन अधिकारी अमित सैनी ने किया।

कर्मभूमि से मातृभूमि अभियान के संबंध में बैठक आज

जयपुर टाइम्स

झुंझुनूं(निस)। वर्षाकाल में बहुत अधिक मात्रा में व्यर्थ जल की एक एक बूंद का संचय, संग्रहण व पुर्नभरण किए जाने को दृष्टिगत रखते हुए जिले के प्रत्येक गांव में तकनीकी रूप से रिचार्ज शाफ्ट संरचनाओं का निर्माण कर्मभूमि से मातृभूमि अभियान के तहत किया जाना है। उक्त अभियान की प्रभावी क्रियान्वयन के लिए गुरुवार को दोपहर 1 बजे कलेक्ट्रेट सभागार में बैठक का आयोजन किया गया है।

जमीला बानो मलसीसर की पहली चैयरमेन बनी

जयपुर टाइम्स

मण्डावा(निस)। नवगठित मलसीसर नगरपालिका में बुधवार को सुरेश वर्मा ने अधिशाषी अधिकारी का अतिरिक्त प्रभार ग्रहण किया। इसके साथ ही निवर्तमान उप सरपंच जमीला बानो भी मलसीसर की पहली चैयरमेन अधिकृत हो गई है। दोपहर एसडीएम पंकज शर्मा की अध्यक्षता में उपखंड मुख्यालय के कान्फ्रेंस हॉल में नवनियुक्त ईओ सुरेश वर्मा को एसडीएम पंकज शर्मा ने पंचायत भवन पर नगरपालिका नामाकरण करने, नगरपालिका का बैंक में खाता खोलने व आमजन से जुड़ी व्यवस्थाओं से सम्बंधित चर्चा की। चैयरमेन जमीला बानो व वर्तमान ईओ के दो हस्ताक्षरित बैंक खाता खोला जाएगा। सभी पंच भी अब पार्षद घोषित हो गए हैं। राज्य सरकार जल्द ही ईओ व चैयरमेन की दो ई- आईडी शुरू कर रही है। दोनों के कार्यभार ग्रहण के समय प्रबुद्धजन उपस्थित रहे। पूर्व सांसद नरेंद्र कुमार ने चैयरमेन को फोन कर बधाई दी।

पोषण पखवाड़े का समापन

जयपुर टाइम्स

झुंझुनूं(निस)। बिसाऊ नगर पालिका में मंगलवार को महिला बाल विकास विभाग की ओर से पोषण पखवाड़े का समापन समारोह आयोजित किया गया, इस दौरान विभिन्न गतिविधियों का आयोजन किया गया। समापन समारोह में बाल विकास परियोजना अधिकारी अमिता गेट, नगर पालिका ईओ सुरेश कुमार वर्मा, सेक्टर प्रभारी उषा कुल्हरी, आंगनबाड़ी कार्यकर्ता ममता शर्मा, संपत , अरुण शकुंतला, गायत्री, संगीता, सुमित्रा सहायिका व ग्रामीण महिलाओं ने भाग लिया। कार्यक्रम में पोषण से संबंधित रंगोली प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें राजबाला, दीपिका, काजल, सरिता स्वामी को प्रशस्ति पत्र देखकर पुरस्कृत किया गया। जिया पत्नी सुरेंद्र, तनु पत्नी भारत चौहान, रितु पत्नी मुकेश को बेटी जन्म पर प्रशासन की ओर से बधाई पत्र व बेबी किट वितरण किया गया। कार्यक्रम में सुनीता, रीना, सरिता, पूनम, आरती, ललिता, करूनिशा की गोद भराई करवाई गई, वही रेखा, पूजा, प्रियंका, संगीता का अन्नप्राशन कार्यक्रम हुआ। अंशु , प्रदीप, आयुष, इशांत, अलीना पूर्वी, रौनक का प्रवेश उत्सव भी किया गया।

युवती से दुष्कर्म का आरोपी गिरफ्तार

राजलदेसर(निस)। खेत में जा रही 19 वर्षीय युवती के साथ दुष्कर्म करने के प्रकरण में राजलदेसर पुलिस ने कार्रवाई करते हुए आरोपी को बुधवार को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने बताया कि राजलदेसर थानांतर्गत एक गांव की 19 वर्षीय युवती 17 अप्रैल को अपने खेत जा रही थी। इसी दौरान रास्ते में जोरावरपुरा निवासी 19 वर्षीय ताराचंद मेघवाल ने उसे पकड़ लिया और जबरन दुष्कर्म की वारदात को अंजाम दिया। घटना के संबंध में किसी को बताने पर जान से मारने व सगाई तुड़वाने की धमकी दी। घटना के दो दिन बाद पीड़िता अपनी मां के साथ 19 अप्रैल को थाने पहुंची और मामले को दर्ज करवाया था।

वक्फ बोर्ड ने गरीब मुसलमानों के साथ अन्याय किया: सैनी

जयपुर टाइम्स

झुंझुनूं(निस)। भाजपा जिलाध्यक्ष बनवारी लाल सैनी की अध्यक्षता में वक्फ सुधार कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में भाजपा के पूर्व प्रदेश मंत्री अशोक सैनी ने मुख्य अतिथि के रूप में शिरकत की। जबकि मदरसा बोर्ड के पूर्व चेयरमैन हिदायत खान धौलिया, पूर्व विधायक शुभकरण चौधरी, झुंझुनूं नगर परिषद के पूर्व सभापति खालिद हुसैन, जिला महामंत्री वं कार्यक्रम संयोजक सरजीत चौधरी, जिला उपाध्यक्ष राकेश शर्मा बगड़ और पूर्व जिला उपाध्यक्ष कुलदीप सिंह काली पहाड़ी विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित रहे।

वक्फ संपत्ति समाज हित में उपयोग हो

कार्यशाला को संबोधित करते हुए अशोक सैनी ने वक्फ बोर्ड में दान की गई जमीन को समाज के हित में इस्तेमाल करने की बात कही। उन्होंने आरोप लगाया कि वक्फ बोर्ड ने गरीब मुसलमानों के साथ अन्याय किया है।

सैनी ने कांग्रेस पर हमला बोलते हुए कहा कि उन्होंने अल्पसंख्यकों को केवल वोट बैंक के रूप में इस्तेमाल किया और उनके राष्ट्रीय अध्यक्ष ने 2000 एकड़ जमीन दबा रखी है। उन्होंने कांग्रेस पर देश को दो वर्गों में बांटकर आपस में लड़ाने और देश का बंटाधार करने का आरोप भी लगाया। सैनी ने विपक्ष की ओर से सीएए कानून पर फैलाए गए भ्रम का भी उल्लेख किया। अशोक सैनी ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की नीतियों की सराहना करते हुए कहा कि उन्होंने हमेशा अल्पसंख्यक समाज के हित में कार्य किया है। उन्होंने उज्ज्वला योजना और आवास योजना का उदाहरण देते हुए कहा कि इन योजनाओं से सबसे ज्यादा फायदा मुस्लिम समाज को हुआ है। सैनी ने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी ने 'सबका साथ, सबका विकास' का रास्ता दिखाया है और वक्फ बोर्ड बिल में संशोधन से मुस्लिम युवाओं को रोजगार मिलेगा और सभी का विकास होगा। उन्होंने मुस्लिम विद्वानों से मुस्लिम बस्तियों में जाकर जन जागरण करने का आह्वान किया। कार्यशाला में जिलाध्यक्ष बनवारीलाल सैनी, पूर्व विधायक शुभकरण चौधरी और हिदायत खान धौलिया ने भी अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन जिला महामंत्री सरजीत चौधरी ने किया। इस अवसर पर नगर पालिका चेयरमैन गोविंद सिंह राठौड़, जिला मंत्री सुनीता स्वामी, महेंद्र चंदवा, जिला संयोजक सोशल मीडिया चंद्र प्रकाश शुक्ला, पार्षद विजय कुमार सैनी, संजय मोरवाल, जय प्रकाश चौधरी, युवा मोर्चा महामंत्री कपिल सोनी, अल्पसंख्यक मंडल अध्यक्ष खलील सिलावट और भाजपा के नवनिर्वाचित मंडल अध्यक्षों सहित कई भाजपा कार्यकर्ता और मुस्लिम समाज के नागरिक उपस्थित रहे।

हॉस्टल में पढ़ रहे छात्र को प्रताड़ित करने का मामला दर्ज

जयपुर टाइम्स

झुंझुनूं(निस)। शहर में समसपुर रोड पर स्थित एक निजी स्कूल में कक्षा 12 में पढ़ने वाले यूपी के छात्र को प्रताड़ित करने और टीसी देने से इनकार करने का मामला सामने आया है। छात्र की मां ने कलेक्टर एसपी से मिलकर न्याय की गुहार लगाई है। इसके बाद मंगलवार को कोतवाली में मामला दर्ज हुआ है। पुलिस को दी रिपोर्ट में आगरा निवासी मनीषा राजपूत पत्नी किशोरकुमार ने बताया कि उसका बेटा शहर के समसपुर रोड स्थित निजी स्कूल में पढ़ता है। वह छह साल से हॉस्टल में रहकर यहां पढ़ रहा है। इस साल 12वीं कक्षा में है। हॉस्टल में उसको टॉर्चर किया जा रहा है। मनीषा का आरोप है कि स्कूल के हॉस्टल में बच्चों को नशे की आदत डाली जा रही है। उसके बेटे ने कई बार शिकायत की कि हॉस्टल में छात्र रात को भांग और शराब का सेवन करते हैं। इससे पढ़ाई बाधित हो रही है। छात्र ने यह बात शिक्षक महेश से कई बार साझा की, लेकिन शिकायत को गंभीरता से लेने की बजाय उसे डरा-धमका कर चुप करा दिया गया। उनका बेटा मानसिक रूप से टूट चुका है और डिप्रेशन का शिकार हो गया है। वह अपने बेटे को वापस ले जाने स्कूल पहुंचीं, तो शिक्षक महेश ने उनके साथ बदसलूकी की और छात्र

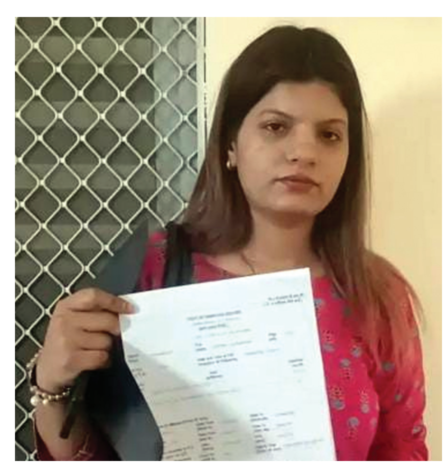

को घर भेजने से मना कर दिया। यहां तक कि बच्चे को हॉस्टल से किताबें भी लाने नहीं दी गईं। ट्रांसफर सर्टिफिकेट देने से भी इनकार कर दिया गया। जब बच्चे को टीसी नहीं मिली तो मनीषा ने एसपी व कलेक्टर से मिलकर फरियाद की। इसके बाद कोतवाली थाने में यह नामजद मामला दर्ज हुआ। मामले की जांच एसआई सुनीता मीणा कर रही हैं।

बीडीके हॉस्पिटल में फायर मॉक ड्रील

स्वास्थ्य कर्मियों और आमजन को आग से बचाव के तरीके समझाए

जयपुर टाइम्स

झुंझुनूं(निस)। जिले के सबसे बड़े अस्पताल राजकीय बीडीके अस्पताल में आज फायर मॉक ड्रिल का आयोजन किया गया। फायर सेफ्टी सप्ताह के तहत आयोजित इस ड्रिल का उद्देश्य अस्पताल के स्वास्थ्यकर्मियों और आमजन को आगजनी की घटनाओं की रोकथाम और उनसे बचाव के तरीकों के बारे में प्रशिक्षित करना था। अस्पताल के पीएमओ डॉ. जितेन्द्र भाम्बू ने बताया कि आगजनी की घटनाओं के दौरान आमजन और स्वास्थ्यकर्मियों को आग बुझाने की प्राथमिक जानकारी होना अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसी उद्देश्य से अस्पताल के जनाना विंग में यह मॉक ड्रिल आयोजित की गई, जिसमें अग्निशमन यंत्रों को चलाने का हैंड्स-ऑन प्रशिक्षण भी शामिल था।

ट्रेनिंग देकर आमजन को समझाया

पीएमओ डॉ. जितेन्द्र भाम्बू ने बताया- इस सप्ताह की थीम, 'एकजुट हो, अग्नि सुरक्षित भारत को प्रज्वलित करें' के अंतर्गत अस्पताल में जागरूकता और प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। इसी क्रम में आज स्वास्थ्य प्रबंधक डॉ. नावेद अख्तर ने अग्निशमन यंत्रों

के उपयोग की जानकारी और प्रशिक्षण दिया। उन्होंने विभिन्न प्रकार के अग्निशमन यंत्रों के संचालन और आग लगने की स्थिति में उनका सही तरीके से उपयोग करने की प्रक्रिया को समझाया। इस महत्वपूर्ण मॉक ड्रिल के दौरान डॉ. सिद्धार्थ शर्मा, डॉ. विजय झाझड़िया, डॉ. प्रियंका शेखसरियां, डॉ. मनीषा और नर्सिंग कर्मी भी उपस्थित रहे। सभी ने सक्रिय रूप से प्रशिक्षण में भाग लिया और अग्निशमन यंत्रों के इस्तेमाल का अभ्यास किया।

पक्षियों के लिए लगाए परिंडे

जयपुर टाइम्स

मण्डावा(निस)। महात्मा गांधी राजकीय स्कूल लुमास ग्राम में पर्यावरण विषय को लेकर कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर भारत स्काउट गाइड के ट्रेनर मास्टर रामदेव गढ़वाल ने स्कूल में उपस्थित बच्चों को पर्यावरण के बारे में विस्तार से बताते हुए बताया कि पेड़ है, तो जीवन है। पेड़ के बिना जीवन संभव नहीं है। इसलिए हमें ज्यादा से ज्यादा

पेड़ लगाकर पर्यावरण की रक्षा करना है। इस अवसर पर स्कूल के प्रधानाचार्य कैलाश जागिड़ ने भी अपने विचार प्रकट करते हुए बताया कि आज के दौर को देखते हुए युवा पीढ़ी नशे की ओर बढ़ रही है। युवाओं को समाज की मुख्य धारा में लाने के लिए इस तरह के जागरूकता कार्यक्रम होते रहने चाहिए जिससे युवा पीढ़ी को आगे बढ़ने का मौका मिले। कार्यक्रम के संयोजक पर्यावरण प्रेमी संजय शर्मा ने भी अपने विचार प्रकट करते हुए बताया कि ज्यादा से ज्यादा पेड़ लगाकर पर्यावरण की रक्षा तो करनी ही है साथ में जल बचाने का भी पूरा प्रयास करना है। इस कार्यक्रम को सफल बनाने में अध्यापिका संतोष, सुमन, अनु, प्रतिभा पुनिया, सुरजीतसिंह स्कूल के बच्चे, बजरंग शेखावत, कृष्ण शर्मा, केसर देव शर्मा आदि ग्रामीणों का सहयोग रहा।

हमले के विरोध में नागरिकों में मोमबत्तियां जलाकर शांति मार्च निकाला

जयपुर टाइम्स

झुंझुनूं(निस)। पहलगाम (कश्मीर) में हुआ आतंकी हमला एक अमानवीय कायराना और घिनौना कृत्य है। निहत्थे पर्यटकों को धार्मिक पहचान पूछकर निशाना बनाना सिर्फ इन्सानियत पर हमला ही नहीं, बल्कि उस सुनियोजित आतंकी साजिश का हिस्सा है, जिसका मकसद भारतीय समाज में पहले से मौजूद इस साम्प्रदायिक तनाव को और भड़काना है। शहीद भगत सिंह विचार मंच झुंझुनूं इस हमले की कठोरतम शब्दों में घोर निन्दा करता है। इस हमले की मंशा भारतीय समाज को भीतर से तोड़ना, हिन्दू और मुस्लिम समुदायों के बीच अविश्वास और घृणा की खाई को और चोड़ा करना, ताकि समाज को विभाजित और कमजोर किया जा सके। भारतीय समाज पहले ही एक बारूद के ढ़ेर पर बैठा है -- ये आतंकी उस पर चिंगारी डालने का काम कर रहे हैं। सबसे चिंताजनक बात यह है कि इस नापाक इरादे को देश के भीतर मौजूद कुछ साम्प्रदायिक ताकतें भी आगे बढ़ा रही हैं। लेकिन इस अंधेरे में एक उम्मीद की लौ भी दिख रही है, पहलगाम में आतंकी हमले के विरोध में आम नागरिकों ने मोमबत्तियां जलाकर शान्ति मार्च निकाला और आतंकवाद के खिलाफ एकजुटता का संदेश दिया है। इस अमानवीय हमले की कई प्रगतिशील और अमनपसंद मुस्लिम संगठनों ने भी कड़ी निन्दा की है। इन संगठनों ने साफ कहा है कि ऐसा कृत्य इस्लाम और इन्सानियत दोनों के खिलाफ है। इसका जबाब गोली नहीं, एकता ही हो सकता है।

विश्व पुस्तक दिवस: पुस्तके मनुष्य की सच्ची मित्र होती है: सोनी

जयपुर टाइम्स

मण्डावा(निस)। पुस्तकें मनुष्य की सच्ची मित्र होती है। पुस्तकों से ही विकास का मार्ग प्रशस्त होता है। पुस्तकें ज्ञान का भण्डार होती हैं। पुस्तकों से अच्छी शिक्षा ग्रहण करके जीवन को सफल बनाया जा सकता है। केवल विद्यार्थी ही नहीं वरन प्रत्येक मनुष्य को अच्छी पुस्तकें पढ़ने से लाभ प्राप्त होता है। पुस्तकों से हमारा ज्ञान, तर्कशक्ति व बौद्धिक क्षमता बढ़ती है। ज्ञान, मनोरंजन और अनुभव की बात कहती ये किताबें यूं ही नहीं पूजी जातीं। इनके पन्नों पर जीवन का हर अर्थपूर्ण अनुभव सहेज लिया जाए ताकि आने वाला कल और भी सुंदर बन सके। ऐसे विचार पूनम महाविद्यालय के हिन्दी प्रवक्ता जयप्रकाश सोनी ने पुस्तक दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में व्यक्त किए। इस अवसर में प्राचार्या नीतू ढाका, भारती बुंदेला,उर्मिला बिजारणियां, संजू , कोमल, लोकेन्द्र सिंह, अंकित भास्कर आदि उपस्थित रहे। महाविद्यालय निदेशक प्रवीण बगड़िया ने सभी का आभार प्रकट किया।

झुंझुनूं में मनमाने परिसीमन के खिलाफ कांग्रेस का फूटा आक्रोश

जयपुर टाइम्स

झुंझुनूं(निस)। नगर निकाय व पंचायती राज संस्थाओं में मनमाने तरीके से किए जा रहे परिसीमन के विरोध में बुधवार को कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने प्रदर्शन किया। कांग्रेस जिला अध्यक्ष दिनेश सूंडा के नेतृत्व में सैकड़ों कार्यकर्ताओं ने जिला कलेक्ट्रेट के बाहर नारेबाजी करते हुए धरना दिया और राज्य सरकार के खिलाफ रोष जताया। कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने मुख्यमंत्री के नाम जिला कलेक्टर को ज्ञापन भी सौंपा, जिसमें भाजपा सरकार की ओर से की जा रही राजनीतिक द्वेषता से प्रेरित कार्यप्रणाली की आलोचना की गई। कांग्रेस का आरोप है कि भाजपा सरकार कानून और लोकतांत्रिक मूल्यों की

अवहेलना करते हुए नगर निकाय और पंचायत चुनाव नहीं करवा रही है, और पुनः परिसीमन कर लोगों को परेशान कर रही है। प्रदर्शन के दौरान सभी कलेक्टर से मिलकर अपनी बात रखना चाहते थे, लेकिन प्रशासन की ओर से केवल 10 प्रतिनिधियों को मिलने की अनुमति दी गई, जिससे नाराज होकर सभी कार्यकर्ता जिला कलेक्ट्रेट के बाहर धरने पर बैठ गए। करीब 20 मिनट तक नारेबाजी और प्रदर्शन के बाद प्रशासन की समझाइश के बाद मामला शांत हुआ। कांग्रेस जिला अध्यक्ष दिनेश सूंडा ने कहा कि सरकार संविधान की धज्जियां उड़ा रही है। उन्होंने आरोप लगाया कि 2020 में परिसीमन हो चुका था, फिर भी पुनः बगैर जनसहमति के नया परिसीमन करना न केवल गलत नहीं, बल्कि जनभावनाओं का अपमान है। उन्होंने बताया कि अकेले नगर पालिका क्षेत्र में 215 आपत्तियां आई हैं, जबकि ग्रामीण इलाकों में भारी असंतोष है। उन्होंने कहा कि भाजपा सरकार ने राजनीतिक फायदे के लिए कांग्रेस समर्थित क्षेत्रों का पुनर्गठन किया है और ग्रामीण क्षेत्रों को जबरन शहरी क्षेत्र में शामिल किया जा रहा है। स्थानीय लोगों से न राय ली गई, न बैठक की गई। यह सब कुछ एकतरफा और मनमाने ढंग से किया जा रहा है। दिनेश सुंडा ने चेतावनी दी कि अगर सरकार ने जल्द ही जनता की भावनाओं का सम्मान करते हुए परिसीमन प्रक्रिया में पारदर्शिता और जनसुनवाई नहीं की, तो कांग्रेस पार्टी गांव-ढाणियों से लेकर जिला मुख्यालय तक बड़ा जन आंदोलन छेड़ेगी। उन्होंने कहा कि कांग्रेस पार्टी जनता के साथ खड़ी है और इस तानाशाही रवैये का पुरजोर विरोध करेगी।

शेखावाटी जयपुर टाइम्स

जयपुर, गुरूवार
24 अप्रेल, 2025

पक्षियों के लिए परिंडे लगाए

जयपुर टाइम्स

तारानगर(निस)। तारानगर नगरपालिका अधिशाषी अधिकारी अजय प्रताप सिह सांखला के निर्देशन में पक्षी मित्र अभियान के तहत बुधवार को भीषण गर्मी को देखते हुए गांधी उद्यान पार्क में नगरपालिका की ओर से परिंडे लगाए गए व पशुओं के लिए पीने के पानी व्यवस्था की गई। अधिशाषी अधिकारी सिह ने बताया कि नगरपालिका कर्मचारियों की ओर से प्रतिदिन पानी की व्यवस्था करने का संकल्प भी लिया गया। पशु पक्षियों के लिए टेंकर से रोजाना पानी की व्यवस्था की जाएगी। इस मौके पर लक्खू सिंह शेखावत, त्रिशूल भाटी, अर्जुन सिंह, गोपालराम, राजेंद्र, विनोद शर्मा, यश शर्मा, सुरेंद्र जांगिड़, विकास, शक्ति सिंह, कृष्ण भाम्भू, सुशील सहित पालिका के कर्मचारी उपस्थित रहे।

अवैध टोपीदार बंदुक के साथ एक युवक गिरफ्तार

जयपुर टाइम्स

सरदारशहर(निस)। शहर की पुलिस ने अवैध टोपीदार बंदुक के साथ एक युवक गिरफ्तार किया है। जिला पुलिस अधीक्षक चूरू जय यादव आईपीएस ने बताया कि महानिरीक्षक बीकानेर रेंज की ओर से नशाखोरी, अवैध आर्म्स पर प्रभावी नियंत्रण व उन्मूलन के लिये अवैध मादक पदार्थ व अवैध आर्म्स के खिलाफ कार्यवाही करने के लिए विशेष अभियान ऑपरेशन फ्लश आउट चलाया जा रहा है। जिसके तहत सरदारशहर पुलिस उप अधीक्षक रामेश्वर सहारण के सुपरविजन में थानाधिकारी मदनलाल बिश्नोई ने मय पुलिस टीम में हिम्मतसिंह सउनि, प्रतापसिंह हैड कानि, विनोद कुमार कानि, वाहन कैम्पर सरकारी वीआर श्रवणकुमार ने बीकमसरा रोड़ उढाना जोहड के पास गश्त के दौरान एक युवक को बंदूक लिए देखा। जिसने पुलिस को देखकर भागने व छुपने का प्रयास किया। पुलिस ने पिछाकर युवक को रुकवाया और नाम पता पूछा तो अपना नाम मालूराम उम्र 19 साल पुत्र गुलजार बावरिया निवासी आसासर हाल राजासर बीकान सरदारशहर का होना बताया। जिसके पास एक टीपीदार बन्दूक पाई गई। उक्त अवैध टॉपीदार बन्दूक को जब्त कर आरोपी मालूराम को गिरफ्तार कर अनुसंधान शुरू किया गया।

सैन जयंती समारोह में मेहंदी और चित्रकला प्रतियोगिता

जयपुर टाइम्स

सरदारशहर(निस)। शहर में श्री सैन जयंती पर सैन मंदिर मोचीवाड़ा में समाज की ओर से आयोजित तीन दिवसीय समारोह के प्रथम दिन सैनजी महाराज की पूजार्चना के साथ ही समारोह का आगाज़ किया गया। सैन समाज अध्यक्ष धनराज भाटी ने जानकारी देते हुए बताया कि सैन जयंती पर इस बार सैन मंदिर मोचीवाड़ा में तीन दिवसीय कार्यक्रम के अंतर्गत बुधवार को प्रातः 10:30 बजे मेहंदी व चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें समाज के बालक-बालिकाओं और युवतियों ने भाग लिया। दोनों प्रतियोगिता की निर्णायक मंजू भाटी, प्रिया सैन, पिंकी भाटी, परमेश्वर निर्णायक रही। गुरुवार को दोपहर 3 बजे प्रतिभा सम्मान समारोह और रात्रि 9 बजे से जागरण व भजन संध्या का आयोजन होगा और शुक्रवार को प्रातः 9 बजे ध्वजारोहण, दोपहर 3 बजे अर्जुन क्लब सैन मंदिर से मोचीवाड़ा तक शोभायात्रा निकाली जाएगी।

फोगां में पदोन्नत होने वाले शिक्षकों का किया सम्मान

जयपुर टाइम्स

सरदारशहर(निस)। तहसील के ग्राम फोगां में स्वतंत्रता सेनानी गोपालसिंह राजवी राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय के प्राध्यापक से उप प्राचार्य पद पर पदोन्नति होने पर सम्मान समारोह आयोजित किया गया। समारोह में प्रधानाचार्य ओमप्रकाश शर्मा, उपप्राचार्य बंतासिंह, पंचायत समिति सदस्य रामकुमार कुल्हारी, सरपंच प्रतिनिधि बनवारीलाल पारीक, पूर्व सरपंच द्वारका प्रसाद पारीक, कवि मेघराज चोटिया, शिवप्रसाद, विद्याधर परीक, भोजराज, भंवरलाल, भलेराम सारण, सरोज, अर्जुनलाल चोटिया, जितेंद्रसिंह व समस्त विद्यालय के स्टाफ व समस्त ग्रामीणों की ओर से पदोन्नत नटराज दीक्षित, मधुबाला, डॉ नीलक्षी, अजय कुमार रोहिल्ला, जितेंद्र कुमार सोनी, राजूराम पाटोदिया, पवन कुमार मीणा, ग्राम विकास अधिकारी लूणाराम सैनी का अभिनंदन पत्र व शॉल ओढ़ाकर सम्मान किया। कवि मेघराज चोटिया ने कविता के माध्यम से सब की सराहना की। प्रमोट होने वाले उपप्राचार्य ने विद्यालय में डबल सोफे भेंट किए।

ग्रामीण विकास में उच्च शिक्षण संस्थानों की भूमिका पर एक दिवसीय कार्यशाला

जयपुर टाइम्स

सरदारशहर(निस)। शहर के केकेसी महाविद्यालय में बुधवार को यूनिसेफ राजस्थान के सहयोग से महाराजा गंगा सिंह सतत विकास पीठ की ओर से ग्रामीण विकास में उच्च शिक्षण संस्थानों की भूमिका शीर्षक पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। जिसमें जिले की उच्च शिक्षण संस्थाओं ने अपनी भागीदारी निभाई। कार्यक्रम की शुरुआत अतिथियों की ओर से मां सरस्वती के आगे दीप प्रज्वलित करके की गई। सभी अतिथियों का स्वागत संस्था निदेशक डॉ किशोर सिंह राठौड़ ने किया। संस्था के निदेशक डॉ किशोर सिंह राठौड़ एडवोकेट वीरेंद्र सिंह राठौड़ व प्राचार्य प्रदीप चौहान ने प्रो राजाराम चोयल बीकानेर महाविद्यालय का साफा माला व प्रतीक चिन्ह देकर सम्मान किया। इसी क्रम में पधारे हुए अन्य अतिथि प्रो अमित पांडे, निर्मल गहलोत, विक्रम सिंह, राघव, मनीष सिंह, सफकत हुसैन आदि का भी

माला साफा व प्रतीक चिन्ह से सम्मान किया गया। प्रो राजाराम चोयल ने महाराजा गंगा सिंह विश्वविद्यालय की तरफ से उद्बोधन करते हुए ग्रामीण क्षेत्र की धरातलीय समस्याओं पर विचार व्यक्त करते हुए पधारे हुए अन्य उच्च शिक्षण संस्थानों के महानुभावों से उन्नत भारत अभियान में जुड़कर ग्रामीण विकास में अपने संस्थानों का योगदान देने का आवाहन किया। प्रो निर्मल गहलोत आईआईटी जोधपुर ने उन्नत भारत अभियान पर संबोधित करते हुए ग्रामीण विकास के उद्देश्यों व आगे की राह पर किस प्रकार कार्य करना है के बारे में बताया व अपने निजी अनुभव साझा किए। यूनिसेफ सलाहकार विक्रम सिंह राघव की ओर से पंचायती राज संस्थाओं के सतत लक्षण का स्थानीयकरण किस प्रकार से किया जाए जिससे ग्रामीण क्षेत्र का बुनियादी विकास संभव हो सके पर प्रकाश डाला और सफकत हुसैन यूनिसेफ ने सतत लक्षणों की प्राप्ति में महाविद्यालय संस्थाओं के विद्यार्थियों को आगे आकर अपना सहयोग देने का अनुरोध किया व बताया कि हमें ग्रामीण विकास के लिए सरकारी क्षेत्र के साथ-साथ निजी क्षेत्र को भी अपनी भूमिका निभानी होगी ताकि हम ग्रामीण विकास के लक्षण को आसानी से प्राप्त कर सकें। लोहिया कॉलेज के सहायक आचार्य शांतनु डाबी द भी इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त किए गए। कार्यशाला के खुली चर्चा सत्र को संबोधित करते हुए राजाराम चोयल की ओर से स्पष्ट किया गया कि हमें ग्रामीण विकास व सतत लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए अपना पूर्ण योगदान देना होगा। आज भी ग्रामीण क्षेत्र आर्थिक सामाजिक, राजनीतिक क्षेत्र में पिछड़े हुए हैं उसे पिछड़ेपन को उच्च शिक्षण संस्थानों के माध्यम से ही दूर किया जा सकता है। खुली चर्चा के दौरान बताया गया कि उच्च शिक्षण संस्थान उन्नत भारत योजना के साथ किस प्रकार से जुड़कर अपना योगदान निभा सकते हैं। संस्था निदेशक डॉ किशोर सिंह राठौड़ ने कार्यशाला में प्रतिभागियों को प्रतीक चिन्ह भेंट किए। प्रो अमित पांडे एमजीएसयू बीकानेर ने कार्यशाला में पधारे हुए सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया। केकेसी पीजी महाविद्यालय की ओर से प्राचार्य डॉ प्रदीप चौहान ने सभी अतिथियों का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम के दौरान मंच संचालन एनएसएस अधिकारी जगदीश कुमार की ओर से किया गया। एक दिवसीय कार्यशाला में महाविद्यालय के समस्त व्याख्याता उपस्थित रहे।

ग्राम पंचायत को पंचायत समिति में यथावत रखने की मांग, ज्ञापन सौंपा

जयपुर टाइम्स

तारानगर(निस)। पंचायत समिति की ग्राम पंचायत खरतवासिया को नवसृजित पंचायत समिति भालेरी की बजाय तारानगर में रखने की मांग को लेकर खरतवासिया ग्राम पंचायत के ग्रामीणों ने जिला कलेक्टर के नाम उपखंड अधिकारी राजेंद्र कुमार को ज्ञापन दिया है। ग्रामीणों ने ज्ञापन के माध्यम से बताया है कि तारानगर क्षेत्र में नवसृजित पंचायत समिति भालेरी बनाया गया है जिसमें गाँव खरतवासिया को जोड़ा गया है जो भालेरी से करीब 47 किमी दूर पड़ता है जबकि खरतवासिया ग्राम पंचायत वर्तमान पंचायत समिति मुख्यालय से 15 किमी दूरी पर स्थित है। भालेरी जाने के लिए गाँव के लोगों को तारानगर होकर भालेरी जाना पड़ेगा, इससे समय भी काफी लगेगा। इसको लेकर ग्रामीणों में भारी आक्रोश है। इसी प्रकार गाँव चलकोई खीचड़ान को मूल पंचायत खरतवासिया में रखने की मांग को लेकर चलकोई खीचड़ान के लोगों ने उपखंड अधिकारी ज्ञापन दिया है। ग्रामवासियों ने ज्ञापन में लिखा है कि ग्राम पंचायत खरतवासिया का नजदीकी हैडक्वाटर से मात्र 500 मीटर की दूरी पर स्थित है जबकि नवसृजित पंचायत 12 किमी है और जवानीपुरा गांव तहसील सीमा का अंतिम गाँव है, जहां लोगों को आने रास्ता नहीं होने के कारण आवागमन में भारी परेशानी होती है। ग्रामीणों ने ज्ञापन के माध्यम से गांव चलकोई खीचड़ान को परिसीमन के निर्धारित मापदंडो की जाँच करते हुए मूल ग्राम पंचायत खरतवासिया में यथावत रखने की मांग की है। इस मौके पर सरपंच ख्यालीराम प्रजापत, दिनेश प्रजापत, शीशपाल मुंड, खींवसिँह राघव, हड़मान सिह खीचड़, उदमीराम प्रजापत, महेन्द्र नाई, प्रभुराज खीचड़, कुरड़ाराम नाई, कृष्ण कुमार गूगड़, शुभकरण खीचड़, रतिराम मुंड, चेतनराम प्रजापत, राकेश मुंड, फतेहसिंह राघव, मोहनलाल, भंवरलाल खीचड़ सहित खरतवासिया ग्राम पंचायत के काफी लोग उपस्थित रहे।

तोगावास में मनरेगा कार्यो का निरीक्षण

जयपुर टाइम्स

तारानगर(निस)। चूरू जिला परिषद लोकपाल ने मनरेगा योजनान्तर्गत संचालित कार्यो के तहत पौधरोपण कार्य व ग्राम पंचायत भवन परिसर का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान ग्राम विकास अधिकारी मानेन्द्र सिंह ने लोकपाल को बताया कि ग्राम पंचायत भवन परिसर में लगभग 1500 पौधे लगाए गए। पौधों की देखभाल करने में मनरेगा के श्रमिकों व पंचायत के कार्मिकों का सकारात्मक सहयोग रहा है। ग्राम पंचायत की सरपंच लिछमा मेघवाल ने बताया कि आगामी समय में पंचायत की ओर से लगभग 2000 पौधे लगाने का संकल्प लिया गया है। निरीक्षण के दौरान लोकपाल (मनरेगा) ने ग्राम पंचायत की ओर से पौधरोपण के करवाए गए कार्यो की सराहना की। उन्होंने कहा कि यदि सभी ग्राम पंचायतें अधिक से अधिक पेड़ लगाने का संकल्प लेकर कार्य करेगी तो निश्चित तौर पर आगामी वर्षो में हरियालों राजस्थान बनाने की परिकल्पना को साकार किया जा सकेगा। लोकपाल रेगर ने ग्राम पंचायत के कार्मिकों को वृक्षों की देखभाल करने व अधिक से अधिक पौधे लगाने के लिए प्रेरित किया गया। निरीक्षण के दौरान ग्राम पंचायत के मनरेगा योजनान्तर्गत किए गए कार्यो के रिकोर्ड की जांच करने के उपरान्त ग्राम विकास अधिकारी को आवश्यक दिशा निर्देश दिए। इस मौके पर एडवोकेट कृष्ण मेघवाल, राकेश कुमार कल्ला, राजेन्द्र सिंह, विक्रम सिह, रामनिवास मेघवाल, पवन सिंह आदि मौजूद रहे।

नहरबंदी के साथ ही बढ़ने लगी पानी की समस्या, जलदाय विभाग अलर्ट

जयपुर टाइम्स

सरदारशहर(निस)। तहसील क्षेत्र में जैसे-जैसे गर्मी बढ़ रही है वैसे-वैसे पीने के पानी की समस्या लगातार गहराती जा रही है। तहसील के कई ग्रामीण क्षेत्रों और शहर के वार्डों में आमजन पीने के पानी की समस्या को लेकर परेशान नजर आ रहे हैं। इसी कड़ी में शहर के वार्ड 53 और 54 की कुछ गलियों में पिछले करीब 10 दिनों से पानी नहीं आ रहा है। स्थानीय अधिकारियों को शिकायत करने के बाद भी कोई समाधान नहीं हुआ तो वार्ड की महिलाएं और पुरुष जलदाय विभाग कार्यालय पहुंचे और बुधवार को अपनी समस्या को लेकर जमकर प्रदर्शन किया। वार्ड 53 के नवरत्न प्रजापत ने बताया कि पिछले 10 दिनों से हमारे यहां पानी नहीं आ रहा है। जिसके चलते हमें विभिन्न परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। अब हालात यह है कि घरों में बिल्कुल भी पानी नहीं बचा है। पैसे देकर टैंकर मंगवाते हैं तो वह भी एक या दो दिन चलता है। उसके बाद वापस वही समस्या सामने आती है। वार्ड की महिलाओं ने बताया कि घर में खाना बनाने और कपड़े धोने तक के लिए पानी नहीं है। जिसके चलते महिलाओं को काफी परेशानी का सामना करना पड़ता है। इस अवसर पर जलदाय विभाग के एक्सइएन रामदेव पारीक ने बताया कि 25 मई तक नहर की सफाई होने के कारण नहरबंदी है। जिसके चलते एक दिन छोड़कर दूसरे दिन पानी सप्लाई की जा रही है। कई गलियों में पानी नहीं पहुंच पा रहा है वहां पर टैंकरो के जरिए पानी सप्लाई करवाया जा रहा है। वार्ड 53 और 54 की समस्या सामने आई है। जिसका जल्द समाधान किया जाएगा। इस अवसर पर वार्ड 53 के पार्षद इनायत तुला, नवरत्न प्रजापत, दिनेश कुमार, दीपक प्रजापत, इमरान लीलगर, मनोज कुमार, अयूब गौरी, अरविंद अग्रवाल, अयूब मनिहार, नानू सिक्का, लियाकत भिस्ती, कालूराम, शोयब सहित वार्ड के लोगों ने प्रदर्शन कर समस्या के समाधान की मांग की हैं।

सड़क हादसों में कमी लाने के लिए ट्रेफिक पुलिस सख्त

यातायात नियमों की पालना नहीं करने वाले वाहन चालकों के काटे चालान

जयपुर टाइम्स

सरदारशहर(निस)। राजस्थान में राज्य सरकार के निर्देशन पर लगातार पुलिस सड़क हादसों में कमी लाने का प्रयास कर रही है। अलग-अलग तरीके से वाहन चालकों को जागरूक करने के प्रयास भी किए जा रहे हैं। वहीं लगातार समझाइस के बाद भी जो वाहन चालक नियमों की पालना नहीं करता है उनके खिलाफ कानूनी कार्रवाई करते हुए चालान भी काटे जा रहे हैं। यातायात प्रभारी हेड कांस्टेबल गणपतराम और कांस्टेबल नरेंद्र दहिया ने बुधवार को शहर के कच्चा बस स्टैंड पर यातायात नियमों की पालना नहीं करने वाले वाहन चालकों के खिलाफ कार्रवाई करते हुए चालान काटे गए। इस अवसर पर यातायात प्रभारी हेड कांस्टेबल गणपतराम ने बताया कि राज्य सरकार के निर्देशन पर और उच्च अधिकारियों के आदेशों पर लगातार वाहन चालकों से समझाइस की जा रही है और चालान काटने की कार्रवाई की जा रही है। उन्होंने कहा कि थानाधिकारी मदनलाल बिश्नोई के आदेश पर प्रतिदिन शहर में अलग-अलग जगहों पर चालान काटने की कार्रवाई की जाती है। उन्होंने बताया कि जो भी दुपहिया वाहन चालक हेलमेट नहीं लगाता है क्षमता से ज्यादा सवारी बैठाता है या फिर अपने वाहन को नो पार्किंग में खड़ा करता है या फिर बड़े वाहन चालक जो सीट बेल्ट नहीं लगाते हैं, शराब पीकर वाहन चलाते हैं, उनके खिलाफ सख्ती से कार्रवाई करते हुए चालान काटने की कार्रवाई की जा रही है।

संयुक्त किसान मोर्चा का धरना जारी

राजलदेसर(निस)। पंचायत समिति कार्यालय व सरकारी कृषि उपज मंडी की मांग को लेकर संयुक्त किसान मोर्चा का धरना आठवें दिन भी जारी रहा। संयुक्त किसान मोर्चा ने दी चेतावनी 2 मई को नेशनल हाईवे एनएच 11 पर तहसील कार्यालय के आगे चक्का जाम करेंगे। धरने पर राजलदेसर क्षेत्र के पंचायत के सरपंचों ने समर्थन दिया जिसमें सरपंच परमेश्वर लाल मेघवाल ग्राम पंचायत सिमसिया, सरपंच धापू देवी ग्राम पंचायत लाछड़सर, सरपंच भानीराम ग्राम पंचायत आलसर, सरपंच भागीरथ,ग्राम पंचायत भांवनदेसर, सरपंच देवीलाल मेघवाल ग्राम पंचायत जोगणिया, सरपंच कमला ग्राम पंचायत बिनादेसर, सरपंच गोमती देवी ग्राम पंचायत परसनेऊ व अखिल भारतीय किसान सभा के अध्यक्ष कामरेड भादरभामू, समेर सिंह, रामकिशन भामू आदि मौजूद रहे।

भागवत कथा शुभारंभ पर निकाली शोभायात्रा

जयपुर टाइम्स

बीदासर(निस)। कस्बे के वार्ड न 5, टांटिया अस्पताल के पीछे घंटियालिया बास में सांखला परिवार की ओर से आयोजित श्रीमद भागवत कथा से पूर्व गांधी चौक स्थित राधा कृष्ण मंदिर से गाजे बाजे व आकर्षक झांकियों व 501 कलश के साथ शोभायात्रा निकाली गई, जहां कस्बेवासियों ने पुष्प वर्षा कर जगह जगह शोभायात्रा का स्वागत किया। कथा से पूर्व कथा के यजमान केसरमल सांखला, रामेश्वरलाल, नंदलाल, हेमराज, कमल, ललित ने व्यासपीठ की पूजार्चना की। कथा के प्रथम दिन वाचन करते हुए कथावाचक मोनिका पारीक ने कहा कि कथा का श्रवण करने से व्यक्ति का सदैव कल्याण होता है मनुष्य जीवन विषय वस्तुओं को भोगने के लिए नही बना है यह भगवान की भक्ति को प्राप्त करने के लिए बना है, मगर वर्तमान में हम भक्ति को छोड़कर भोग विलास में लगे हुए हैं। कथा में प्रधान संतोष मेघवाल, पार्षद सांवरमल नाई, नंदलाल टेलर, हेमंत सिद्ध, गोपाल प्रजापत, अरुण तिवारी, ओमप्रकाश सोनी, दीपक सांखला, रामनिवास माली आदि उपस्थित रहे।

7 वें आसमान पर पहुंचा सोना, स्थानीय ज्वेलर्स निराश, खरीदार मायूस

जयपुर टाइम्स

सरदारशहर(निस)। सोने की कीमतों में रिकॉर्ड तेजी का सिलसिला लगातार जारी है। सोने की कीमतों में जारी इस बेकाबू तेजी के कारण सरदारशहर के स्थानीय व्यापारी काफी निराश हैं। जहां एक तरफ सोने की कीमतों में इस रिकॉर्ड तोड़ तेजी से निवेशकों को मोटा मुनाफा हो रहा है तो वहीं दूसरी ओर ज्वैलर्स और ग्राहक दोनों काफी परेशान हैं। 1 लाख रुपये प्रति 10 ग्राम के करीब सोना पहुंच चुका है। ऐसे में गोल्ड अब आम खरीददारों की पहुंच से काफी दूर निकल

चुका है। ऐसे में ज्वैलर्स की दुकानें सूनी पड़ी हैं और अब उनके पास काम नहीं है या काम लगभग खत्म हो चुका है। वर्तमान में शादियों की सीजन भी चल रही है। लेकिन उसके बावजूद ज्वेलरी की बिक्री में काफी गिरावट आई है। सोने चांदी के व्यापारी तरुण पारीक ने बताया कि सोने की कीमतों में ताबड़ तोड़ तेजी आने की वजह से काम काज में 75 प्रतिशत तक की गिरावट आ चुकी है। इसके पीछे यूं तो कई कारण हैं। लेकिन जानकार मानते हैं कि अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की मौजूदा नीतियों से सोने की कीमतों पर सबसे बड़ा और अहम असर पड़ रहा है। स्थानीय व्यापारी रमेश सोनी ने बताया कि वर्तमान में शादी का सीजन चल रहा है। लेकिन उसके बाद भी खरीददार कम आ रहे हैं जो आ रहे हैं वह भाव पूछकर वापस लौट रहे हैं या फिर घर पर रखे पुराने गहनों के बदले नए गहने बनवा रहे हैं। सोने बढ़ते भाव के कारण सोने चांदी के व्यापारियों का कम होने साथ ही आमजन भी सोने से दूरियां बना रहा हैं। सोने के भाव और भी बढ़ने की संभावनाएं जताई जा रही हैं। सोने चांदी का व्यापार करने वाले व्यापारियों में सोने के भाव बढ़ने से मायूसी देखी जा रही हैं।

राजस्थान जयपुर टाइम्स

जयपुर, गुरूवार
24 अप्रैल, 2025

हीट वेव को लेकर करें प्रबंधन, समयबद्ध तैयारियां सुनिश्चित करें अधिकारी : अभिषेक सुराणा

जयपुर टाइम्स

चूरू(निस)। जिला कलक्टर अभिषेक सुराणा ने बुधवार को डीओआईटी वीसी सभागार में साप्ताहिक समीक्षा बैठक में आवश्यक सेवाओं की चर्चा कर समुचित निर्देश दिए। जिला कलक्टर सुराणा ने कहा कि अधिकारी हीट वेव को लेकर प्रबंधन करें और समयबद्ध ढंग से सभी तैयारियां सुनिश्चित करें। गर्मियों के दौरान पेयजल व बिजली आपूर्ति व्यवस्थाएं देखें तथा किसी प्रकार की समस्याएं सामने आने पर दुरूस्त करवाएं। शहरी क्षेत्रों में हीट वेव के दौरान ग्रीन शेड, पानी छिड़काव, प्याऊ लगवाने आदि की व्यवस्थाएं करें ताकि आमजन को राहत मिले।

उन्होंने सभी उपखंड अधिकारियों व तहसीलदार को निर्देश दिए कि शहरी व ग्रामीण क्षेत्रों में पेयजल आपूर्ति की समस्याएं न आएं, इसके लिए सभी कंट्रोल रूम, पंप हैड आदि का निरीक्षण करें तथा अवैध कनेक्शन की शिकायत प्राप्त होने पर नियमानुसार कार्यवाही करें। कंटीजेंसी के दौरान करवाए जाने वाले कार्यों को स्पीड- अप करें तथा यथाशीघ्र पूरें करवाएं।

उन्होंने सभी राजस्व अधिकारियों को रास्ता खोलो अभियान को लेकर निर्देश दिए कि मिशन मोड में काम करते हुए अपेक्षित कार्रवाई करें तथा साप्ताहिक रूप से विशेष दिन आदि निर्धारित करते हुए रास्ता खोलने के प्रकरणों को निस्तारित करें। इसी के साथ ऑनलाइन नामांतकरण, सीमाज्ञान व खाता विभाजन के लंबित आवेदनों का समयबद्ध ढंग से निस्तारण करें। बजट घोषणाओं में भू-आवंटन के प्रकरणों को त्वरितता से पूरा करें। इस दौरान एडीएम श्वेता कोचर, चूरू एसडीएम बिजेन्द्र सिंह, तहसीलदार अशोक गोरा, कोषाधिकारी प्रवीण सिंघल, एसीईओ दुर्गा ढाका, डीएसओ साक्षी पुरी, कृषि संयुक्त निदेशक मुकेश माथुर, सीडीईओ गोविंद सिंह राठौड़, पीएचईडी प्रोजेक्ट एसई राममूर्ति, डीओआईटी एसीपी नरेश टुहानिया, चूरू नगरपरिषद आयुक्त अभिलाषा सिंह, कॉपरेटिव एमडी मदनलाल, आईसीडीएस डीडी नरेन्द्र सिंह राठौड़, सीपीओ भागचंद खारिया, प्रवर्तन निरीक्षक संपत कुमार सहित वीसी के जरिए सभी उपखंडों से उपखंड स्तरीय अधिकारी जुड़े रहे। जिला कलक्टर अभिषेक सुराणा ने जिला निष्पादन समिति की बैठक में विद्यालय विकास से जुड़े बिन्दुओं पर चर्चा करते हुए कहा कि शिक्षा अधिकारी विद्यालयों में संसाधनों के विकास के साथ उच्च शैक्षणिक स्तर के लिए काम करें। बच्चों में अध्ययन आदतों का विकास करें। इस दिशा में ग्रीष्म अवकाश के दौरान प्रत्येक विद्यार्थी को 2-2 किताबें जारी करें और अवकाश के बाद उनसे समीक्षा लिखवाएं। जिला कलक्टर सुराणा ने जिला स्वास्थ्य समिति की बैठक में चिकित्सा अधिकारियों को निर्देश दिए कि गर्मियों के दौरान सभी जिला अस्पताल, उप जिला अस्पताल, सामुदायिक, प्राथमिक व उप स्वास्थ्य केन्द्रों पर सभी तैयारियां सुनिश्चित की जाएं। अस्पतालों में दवा उपलब्धता, जांच तथा कूलर-पंखों की स्थिति आदि देखें व समुचित प्रबंधन करते हुए व्यवस्थाएं सुनिश्चित करवाएं।

राठौड़ के जन्मदिवस पर जरूरतमंद लोगों को राशन किट वितरित

जयपुर टाइम्स

तारानगर(निस)। पूर्व नेता प्रतिपक्ष राजेंद्र सिह राठौड़ के जन्म दिवस पर सेवा सप्ताह के अंतर्गत तारानगर के युवा नेता अलबेला खान व उनके परिवार के सौजन्य से भाजपा नेता राकेश जांगिड़ व थानाधिकारी गौरव खिड़िया ने कस्बे के झुग्गी झोंपड़ियों में रहने वाले जरूरतमंद परिवार को राशन किट वितरित किए गए। उपस्थित लोगों ने राठौड़ के जन्म दिवस की बधाई देते हुए राठौड़ के उज्जवल भविष्य की कामना की। राकेश जांगिड़ ने कहा कि हम अलबेला परिवार का धन्यवाद ज्ञापित करते है जो गरीब परिवारों की मदद करने में हर समय तैयार रहते है। मोहम्मद तैयब का भी आभार व्यक्त करते है जिन्होंने अपने बच्चों को अच्छे संस्कार देकर मानवता की सेवा करने के लायक बनाया। इस मौके पर नगर अध्यक्ष अनूप खंडेलवाल, जिला उपाध्यक्ष मोहम्मद तैयब, अजीतसिँह राठौड़, शाबिर हुसैन, राजू नायक, जुल्फेकार हिसारिया, इलियास बिसायती, मोहम्मद खालिद, सांवरमल वाल्मीकि, मोहम्मद लतीफ, पंकज जांगिड़, मुस्ताक सहित काफी लोग मौजूद रहे।

दिल्ली पुलिस में नौकरी का झांसा देकर लाखों ठगे

जयपुर टाइम्स

रतनगढ़(निस)। युवक को दिल्ली पुलिस में नौकरी लगाने के नाम पर लाखों रुपए की धोखाधड़ी करने का मामला पुलिस में दर्ज हुआ है। पुलिस ने तहसील के गांव गौरीसर निवासी 63 वर्षीय सांवरमल पुत्र गणेशाराम जाट की रिपोर्ट पर मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। सांवरमल की ओर से दी गई रिपोर्ट में उल्लेख किया है कि उसके पुत्र अशोक की जान-पहचान हरियाणा के महेंद्रगढ़ निवासी गजराज यादव उर्फ गजराजसिंह के साथ हुई थी। गजराज ने अशोक को बताया कि उसका भाई दिल्ली पुलिस में एसीपी के पद पर कार्यरत है और उसे भी दिल्ली पुलिस में सरकारी नौकरी लगवा देगा, जिस पर सात लाख रुपए खर्च होंगे। गजराज की बातों में आकर अशोक ने दिसंबर 2023 में गजराज को तीन लाख रुपए व अपनी अंकतालिकाएं दे दी। इसके बाद घटना के बारे में पिता को बताया, तो उन्होंने गजराज से बात की और अलग-अलग स्थानों पर उसे एक लाख 60 हजार रुपए और दे दिए। लेकिन गजराज ने आज तक न तो अशोक को नौकरी पर लगाया और न ही रुपए लौटाए। मार्च 2025 में उसे रुपए देने से भी इनकार कर दिया। पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

पहलगाम आतंकी हमले की राष्ट्रीय जाट महासभा ने की निंदा

जयपुर टाइम्स

सुजानगढ़(नि.सं.)। पहलगाम में हुए आतंकी हमले को लेकर देशभर में रोष व्याप्त है। इसी क्रम में राष्ट्रीय जाट महासभा के प्रदेश अध्यक्ष धर्मेंद्र कीलक ने इस जघन्य कृत्य की कड़े शब्दों में निंदा की है। उन्होंने हमले को कायरता की पराकाष्ठा बताते हुए शोक संतप्त परिवारों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त की। कीलक ने कहा है कि इस तरह के आतंकी हमलों से देश की एकता और अखंडता को कमजोर नहीं किया जा सकता। भारतीय सेना और सुरक्षाबल जिस साहस और समर्पण से इन चुनौतियों का सामना कर रही हैं, वह अत्यंत सराहनीय है। सरकार को चाहिए कि दोषियों को जल्द से जल्द पकड़कर सख्त सजा दे। प्रदेश अध्यक्ष ने आमजन से संयम बनाए रखने और देश की सुरक्षा एजेंसियों में विश्वास रखने की अपील की।

आई स्टार्ट नेस्ट में कार्यशाला आयोजित

जयपुर टाइम्स

चूरू(निस)। जिला मुख्यालय स्थित राजकीय लोहिया महाविद्यालय स्थित आई स्टार्ट नेस्ट इन्क्यूबेशन सेंटर में बुधवार को एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मेंटर मनु विजय, डोमेन एक्सपर्ट सुशील कुमार शर्मा, मुहम्मद शाहरुख़ एवं स्टेम इंजीनियर अनुराग सोनी आदि ने आई स्टार्ट प्रोग्राम के उद्देश्य, इन्क्यूबेशन स्पेस, फंडिंग, मार्केटिंग रणनीति और स्टार्टअप शुरू करने की मौलिक तैयारी, चुनौतियां आदि के बारे में जानकारी दी। साथ ही टिंकरिंग लैब में रोबोटिक्स, 3डी प्रिंटर आदि विभिन्न मॉडल और विभिन्न सेंसर्स के उपयोग के बारे मे जानकारी दी। इस अवसर पर भौतिक विभाग विभागाध्यक्ष प्रोफेसर डॉ अरविन्द शर्मा ने भी भौतिक से जुड़ी जानकारी साझा की।

पहलगाम हमले की भाजपा कार्यकर्ताओं ने की निंदा

जयपुर टाइम्स

रतनगढ़(निस)। जम्मू कश्मीर के पहलगाम में पर्यटन स्थल बेसारन घाटी में पर्यटकों पर आतंकवादियों की ओर से किए गए कायराना हमले के विरोध में बुधवार को भाजपा कार्यकर्ताओं ने निंदा करते हुए मृतकों की आत्मा की शांति के लिए दो मिनट का मौन रखा। सूर्य सिनेमा के पास हुए कार्यक्रम में भाजपा नेता अरविंद इंदौरिया ने कहा कि पूरी दुनिया आज इस घटना की निंदा करते हुए भारत के साथ खड़ी है। किसी भी सभ्य समाज में ऐसी घटनाओं के लिए कोई जगह नहीं है, जहां सिर्फ धर्म देखकर हत्याएं हो रही हो। आज देश का हर नागरिक आक्रोशित है। उन्होंने कहा कि यह हमला हमारे देश के स्वाभिमान, एकता व अखंडता के लिए खतरा ही नहीं, बल्कि एक चुनौती है।

हीटवेव को लेकर चूरू पहुंची स्टेट जॉइंट डायरेक्टर की टीम

डीबी अस्पताल के वार्डों का किया निरीक्षण

जयपुर टाइम्स

चूरू(निस)। गर्मी के हीट वेव को लेकर स्वास्थ्य भवन जयपुर के स्टेट जॉइंट डायरेक्टर की टीम बुधवार को चूरू पहुंची। टीम ने डीबी अस्पताल के विभिन्न वार्डों का निरीक्षण किया। जयपुर स्टेट जॉइंट डायरेक्टर डॉ. सुरेन्द्र खोलिया ने बताया कि हीट वेव को लेकर अस्पताल का निरीक्षण किया गया है। निरीक्षण में डॉ. खोलिया ने मेडिसिन आईसीयू मेल और फिमेल वार्ड, गायनिक वार्ड, पीडियाट्रिक वार्ड आदि का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान संबंधित वार्डों में आइस पैक, कोल्ड आईवी फ्ल्यूड की अच्छी व्यवस्था पाई गई। अस्पताल में करीब दस से 12 जगह पर ओआरएस काउंटर बनाए हुए थे। जहां ठंडा पानी और ओआरएस के पैकेट रखे मिले हैं। इसके अलावा हर वार्ड में पीने के ठंडे पानी की व्यवस्था, वाटर कूलर और कैंपर पाए गए हैं। अस्पताल के सभी वार्डों में एयर कंडीशन और कूलर की समुचित व्यवस्था पाई गई। सभी एसी और कूलर अच्छी वर्किंग कंडीशन में पाए गए। अस्पताल के दवा वितरण काउंटर पर गर्मी जनित मरीजों की दवाइयां भी पर्याप्त मात्रा में मिली हैं। वहीं मुख्यमंत्री निशुल्क जांच योजना के अंतर्गत लैब में 24 घंटे 160 प्रकार की जांच होनी पाई गई है।

नेशनल हाइवे पर भिड़े दो कंटेनर

भीषण सड़क हादसे में एक की मौत, चार गंभीर घायल

जयपुर टाइम्स

रतनगढ़(निस)। नेशनल हाईवे 11 पर बुधवार की तड़के हुए भीषण सड़क हादसे में एक व्यक्ति की मौत हो गई जबकि चार लोग गंभीर रूप से घायल हो गए। घटना के बाद मौके पर लंबा जाम लग गया। सूचना पर फतेहपुर पुलिस व टीडियासर टोल कर्मचारी मौके पर पहुंचे और आवागमन को दुरूस्त किया। मामले के अनुसार एनएच 11 पर गांव कल्याणपुरा के पास बुधवार अलसुबह चार बजे दो कंटेनरों के बीच आमने-सामने की भिड़ंत हो गई। सूचना पर फतेहपुर पुलिस मौके पर पहुंची और क्रेन की सहायता से कंटेनर में फंसे घायलों को बाहर निकालकर अस्पताल में भर्ती करवाया गया, जहां पर सरदारशहर के गांव राणासर निवासी 53 वर्षीय भंवरलाल व सवाई माधोपुर के नोहरवाड़ा निवासी 40 वर्षीय असलम की हालत गंभीर होने पर सीकर रैफर किया गया है। घटना के दो-तीन अन्य लोग भी घायल हो गए थे, जिन्हें रतनगढ़ जिला अस्पताल में भर्ती करवाया गया। दोनों वाहनों के बीच टक्कर इतनी भीषण थी कि हादसे में दोनों वाहनों के परखच्चे उड़ गए और हाईवे पर लंबा जाम लग गया। पुलिस ने क्रेन की सहायता से वाहनों को साईड में कर आवागमन को दुरूस्त किया।

एडीजे ने मोबाईल वेन को किया गांवो के लिए रवाना

जयपुर टाइम्स

सुजानगढ़(नि.सं.)। ताल्लुका विधिक सेवा समिति के अध्यक्ष एडीजे महेन्द्र प्रताप भाटी ने न्यायालय परिसर में मोबाइल वैन को हरी झंडी दिखा कर रवाना किया है। मोबाइल वैन से क्षेत्र के गांव गनोड़ा, चरला, कोडासर में महिला सशक्तिकरण, पैन इंडिया अभियान, ड्रग्स के दुष्प्रभाव, बालश्रम निषेध, पीड़ित प्रतिकर स्कीम, विशेष योग्यजन के लिए अभियान, बाल पीड़ितों के मुआवजे, मानसिक रूप से दिव्यांग व्यक्तियों के लिए विधिक सेवा योजना, बच्चों के लिए विधिक सहायता योजना, बाल विवाह रोकथाम, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण की अन्य गतिविधियों की जानकारी दी जाएगी। इस दौरान राष्ट्रीय लोक अदालत व नालसा की विभिन्न योजनाओं का भी प्रचार-प्रसार किया जायेगा। मोबाइल वैन को हरी झंडी दिखाने के दौरान एसीजेएम विकास गजराज, अपर लोक अभियोजक एड. श्याम सुन्दर खंडेलवाल, एड. जगवीर गोदारा, संतोष सोनी, प्रदीप कठातला, निर्मल सिंगोदिया, बाघाराम गुलेरिया, बाबूलाल कीलका, हनुमान प्रजापत, रतनलाल साध, रजनीकांत सोनी, बनवारी लाल जाट मौजूद रहे।

जिला प्रमुख वंदना आर्य ने बालरासर आथूणा पंचायत का किया निरीक्षण

जयपुर टाइम्स

चूरू(निस)। जिला प्रमुख वंदना आर्य ने बुधवार को चूरू पंचायत समिति की बालरासर आथूणा ग्राम पंचायत का दौरा किया। इस दौरान उन्होंने प्रधानमंत्री आवास योजना व मनरेगा चल रहे जल संरक्षण, रास्ता निर्माण और मजदूरी से जुड़े कार्यों का मौके पर जाकर निरीक्षण किया। उन्होंने कहा कि सरकार की मंशा है कि हर जरूरतमंद को छत मिले और ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के पर्याप्त साधन सृजित हों। उन्होंने पंचायत प्रतिनिधियों और अधिकारियों को जिम्मेदारी से कार्य करने की सलाह दी। निरीक्षण के दौरान जिला प्रमुख ने आवास योजना के लाभार्थियों से सीधा संवाद कर निर्माण कार्यों की गुणवत्ता, समयबद्धता और पारदर्शिता की जानकारी ली। वंदना आर्य ने ग्रामीणों से योजना के प्रभाव की जानकारी ली और उनकी समस्याएं सुनीं। उन्होंने मौके पर मौजूद अधिकारियों को निर्देश दिए कि कोई भी पात्र व्यक्ति इस योजना से वंचित न रहे और सभी लाभार्थियों को समय पर किश्त जारी की जाए। निरीक्षण के दौरान ग्राम विकास अधिकारी और अन्य कर्मचारी मौजूद रहे।

रेप पीड़िता के बच्चे से मैच हुआ आरोपी का डीएनए

दुष्कर्म के आरोपी को 20 साल के कठोर कारावास की सजा

जयपुर टाइम्स

झुंझुनूं(निस)। झुंझुनूं में नाबालिग से दरिंदगी कर इनकार करने वाले आरोपी का सच डीएनए रिपोर्ट में सामने आ गया। जांच रिपोर्ट पीड़िता के बच्चे से मैच हो गई, जिसके बाद पॉक्सो कोर्ट ने दोषी को 20 साल के कठोर कारावास की सजा सुनाई। साथ ही 71 हजार रुपए का जुर्माना भी लगाया। दरअसल, घटना के बाद सहमी मासूम ने परिजनों को अपने साथ हुई दरिंदगी की जानकारी नहीं दी। जब पीड़िता का पेट बढ़ने लगा और वह करीब 6 महीने की गर्भवती हो चुकी थी, तब परिजनों ने कारण पूछा तो मासूम ने आपबीती बताई। सुनवाई करते हुए पॉक्सो कोर्ट ने 17 गवाहों के बयान और 46 दस्तावेजों के साथ डीएनए रिपोर्ट को प्रमुख साक्ष्य मानते हुए आरोपी फूलचंद जोगी(32) को दोषी मानते हुए सजा सुनाई। विशिष्ट लोक अभियोजक सुरेंद्र सिंह भाम्बू ने बताया कि उदयपुरवाटी थाने में 15 फरवरी 2023 को पीड़िता के परिजनों ने रिपोर्ट दर्ज कराई थी। शिकायत में बताया कि फूलचंद जोगी नामक युवक उदयपुरवाटी के एक मंदिर में सवामणि समेत अनेक कार्यक्रमों में श्रद्धालुओं की मदद करता था। पीड़िता भी मंदिर दर्शन करने आती थी। फूलचंद जोगी ने शिकायत दर्ज होने से करीब 6 महीने पहले पीड़िता को डरा- धमकाकर पहाड़ियों में ले जाकर उसके साथ रेप किया। आरोपी ने पीड़िता को जान से मारने की धमकी दी थी, जिससे पीड़िता डर गई। उसने किसी को आपबीती नहीं बताई। जब पीड़िता का पेट बढ़ने लगा तो परिजनों ने उसे नीमकाथाना में डॉक्टर को दिखाया, जहां उसके 6 महीने की गर्भावस्था की जानकारी मिली। इसके बाद परिजनों ने बच्ची से पूछताछ की, तो मासूम ने अपने साथ दरिंदगी की जानकारी दी।पुलिस ने शिकायत मिलते ही आरोपी फूलचंद जोगी को गिरफ्तार कर लिया। कोर्ट में पॉक्सो एक्ट और एससी/एसटी एक्ट की धाराओं के तहत चार्जशीट दाखिल की। इस बीच घटना के सातवें महीने में पीड़िता ने एक बच्चे को जन्म दिया। कोर्ट के आदेश पर बच्चे का डीएनए टेस्ट कराया गया, जो आरोपी के डीएनए से पूरी तरह मेल खा गया। कोर्ट ने डीएनए रिपोर्ट को निर्णायक माना। सुनवाई के दौरान अभियोजन पक्ष ने 17 गवाहों के बयान दर्ज कराए, कुल 46 दस्तावेज प्रस्तुत किए। दोनों पक्षों की दलीलें सुनने के बाद जज इसरार खोखर ने बुधवार को आरोपी फूलचंद जोगी को दोषी ठहराते हुए अलग-अलग धाराओं में 20 साल की सजा और 71 हजार रुपए के जुर्माने का आदेश दिया।

स्वात्वाधिकारी, कैम्ब्रिज मल्टीमीडिया प्रा.लि. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक रामेश्वरलाल जाट द्वारा कैम्ब्रिज मल्टीमीडिया प्रा.लि., सी-565 सी, 4 सी स्कीम, न्यू लोहा मंडी रोड, सीकर रोड़ जयपुर में मुद्रित एवं सी-565 सी, 4 सी स्कीम, न्यू लोहा मंडी रोड, सीकर रोड़ जयपुर -302013 से प्रकाशित।
सम्पादक : नीतू चौधरी, सी-588, 4सी स्कीम, न्यू लोहा मण्डी रोड, जयपुर-302013 मो. : 7014217770, E-Mail : jaipurtimes2007@gmail.com *पीआरबी अधिनियम के तहत खबरों के चयन के जिम्मेदार, समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र जयपुर।